बेग साहब

ग़रीबों और कमज़ोरों के मसीहा

बेग साहब

ग़रीबों और कमज़ोरों के मसीहा

लेखक

ख़ालिद अंसारी

अनुवादक

डा. मोहम्मद क़मर तबरेज़

Skyline Publications Pvt. Ltd.

बेग साहब

ग़रीबों और कमज़ोरों के मसीहा

◆◆◆

पुस्तक का नाम	:	बेग साहबः ग़रीबों और कमज़ोरों के मसीहा
लेखक	:	ख़ालिद अंसारी
अनुवादक	:	डा. मोहम्मद क़मर तबरेज़
संख्या	:	1000
मूल्य	:	250 रुपए
संस्करण	:	2016
डिज़ाइन	:	सुहेल नक़वी
रेखाचित्र	:	एम. साक़िब
आईएसबीएन	:	ISBN: 978-81-932237-2-7
प्रकाशक	:	स्काईलाइन पब्लीकेशन्ज प्राइवेट लिमिटेड 167/7, सराय जुलेना, न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी, नई दिल्ली -110025
फोन	:	011-26914598, 26924598, 26934598
मुद्रक	:	डीबी इंस्टीट्यूट ऑफ ग्राफिक्स, नई दिल्ली

विषय सूची

प्रस्तावना	7
जीवन-रेखा	9
भूमिका	11
औरों की नज़र में मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग	21
बचपन	42
पारंपरिक शिक्षा	45
जीवन के उद्देश्यों की खोज	48
सर्वप्रथम राष्ट्र	52
सहकारी आंदोलनः एक परिचय	56
डॉ. ज़ाकिर हुसैन का अधूरा मिशन	58
जामिया कोऑपरेटिव बैंक लिमिटेड	65
जामिया मिलिया इस्लामिया से प्रेम	68
समाज की चिंता	72
रज़ा ज़कात फ़ाउंडेशन	77
उर्दू भाषा से लगाव	79
याद रही गाँव की मिट्टी	81
पारिवारिक जीवन	89
मानवीय रिश्तों का महत्तव	91

महिलाओं का सम्मान और उनकी स्वायत्तता 95
पत्नी का सहयोग 98
सादा जीवन, बडी सोच 100
प्यारे दादा/नाना 102
विरासत के रखवाले 108
जीवन की आख़िरी जंग 137
भावभीनि श्रद्धांजलि 141
आभार 143

जस्टिस एम. एस. ए. सिद्दीक़ी

प्रस्तावना

मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग जनहितैषी, शिक्षाविद, सफल बैंकर, और इन सबसे बढ़ कर एक अच्छे इंसान थे। वह अपने आप में एक संस्था थे। वह इस बात को अच्छी तरह महसूस करते थे कि देश की शिक्षा-प्रणाली केवल अमीरों और धनी लोगों को ध्यान में रख कर बनाई गयी है। ग़रीब चाह कर भी वहाँ तक नहीं पहुँच सकते, क्योंकि उनके पास इतने पैसे नहीं होते कि वह इन स्कूलों या कालेजों की फ़ीस सहन कर सकें। दूसरी तरफ़, उन्हें ख़ुद अपने समाज की चिंता भी सताए जा रही थी कि अगर मुसलमानों ने अपने आपको सूचना प्रौद्योगिकी, नई खोज और आधुनिक शिक्षा से लैस नहीं किया, तो विकास की दौड़ में वे दूसरों से काफ़ी पीछे रह जाएंगे तथा भविष्य के सुनहरे अवसरों को खो देंगे। यही वजह थी कि उन्होंने अपने पैतृक ज़िला, आज़मगढ़ में उन बच्चों के लिए शैक्षिक संस्थान खोले, जो ग़रीबी, शोषण तथा धार्मिक उग्रवाद के चलते आधुनिक शिक्षा से वंचित थे।

समाज के पिछड़े वर्गों को विकास की राह पर अग्रसर करने के लिए मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग ने उनके अंदर सामाजिक जागरूकता पैदा करने की भी कोशिश की। इसीलिए उनके मन में माइक्रोफ़ाइनैंसिंग का विचार आया और उन्होंने जामिया कोऑप्रेटिव बैंक लिमिटेड की स्थापना की। यह बैंक उन ग़रीब व बेसहारा लोगों के लिए आशा की एक किरण लेकर आया, जो नाइंसाफ़ी की मार झेल रहे थे और असहाय जीवन व्यतीत करने पर मजबूर थे। उनका एक सपना था कि हमारे समुदाय का सबसे कमज़ोर यह वर्ग, जो ग़रीबी और नाइंसाफ़ी की मार से बदहाल था, एक दिन सुख, शांति और इंसाफ का केंद्र बनेगा। उन्होंने जो रास्ता चुना, वह काँटों भरा था, लेकिन मुसलमानों के चरित्र और उनके उत्साह के अनुकूल था। इसमें खुद बेग साहब का साहस और हौसला पूरी शक्ति के साथ शामिल था। अतः उन्होंने हमारे लिए वही छोड़ा, जिसका उन्होंने वादा किया, फिर उसको सत्यता का रूप दिया और जीवन भर उस पर चलते रहे।

चला गया मगर अपना निशान छोड़ गया
वह उम्र भर के लिए दास्तान छोड़ गया

जस्टिस एम. एस. ए. सिद्दीक़ी
पूर्व चेयरमैन, राष्ट्रीय आयोग, अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थान, भारत सरकार

जीवन-रेखा

नाम	:	मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग
पिता	:	मिर्ज़ा रज़ा बेग
माता	:	उम्दा ख़ातून
पत्नी	:	नूर जहाँ
भाई	:	मिर्ज़ा अहसानुल्ला बेग, मिर्ज़ा सदरूद्दीन बेग, मिर्ज़ा बदरूद्दीन बेग
औलाद	:	मिर्ज़ा शम्सुल हसन बेग, निशात बेग, मिर्ज़ा क़मरूल हसन बेग, मिर्ज़ा ज़फर बेग, मिर्ज़ा अहमर बेग, सबा बेग
जन्म	:	10 जनवरी, 1936 - अंजान शहीद, आज़मगढ़, उत्तर प्रदेश
देहांत	:	6 मई, 2015 - दिल्ली
वतन	:	अंजान शहीद, ज़िला आज़मगढ़, उत्तर प्रदेश
अंतिम शैय्या	:	जामिया नगर क़ब्रिस्तान
प्रारंभिक शिक्षा	:	मदरसा इस्लामिया पाठशाला, अंजान शहीद गाँव गांधी हाई स्कूल, माल्टारी, आज़मगढ़ शिबली इंटर कॉलेज, आज़मगढ़
उच्च शिक्षा	:	जामिया मिलिया इस्लामिया
नौकरी	:	अतालीक़, जामिया मिडिल स्कूल, देहली ऐडमिनिस्ट्रेशन

भूमिका

किसी को हो न सका उसके क़द का अन्दाज़ा
वह आसमा था मगर सर झुकाए रहता था

सफलता क्या है? अगर आप यह सवाल किसी सफल व्यक्ति या मैनेजमेंट गुरू से करेंगे, तो हो सकता है वह ये जवाब दे कि खुद अपने जीवन में पैसों की कमी न हो और बाल-बच्चों के लिए इतना पैसा इकट्ठा कर लिया जाये, जिससे उन्हें भी अपने जीवन में किसी प्रकार की परेशानी न हो, इसी को सफलता कहते हैं।

लेकिन इससे उलट, दुनिया में ऐसे लोग भी पैदा हुए, जो पैसे के पीछे भागने के बजाय एक अच्छा इंसान बनने का प्रयास करते रहे और चाहते थे कि दुनिया में जितने भी अबला और ग़रीब लोग हैं, उनके जीवन-स्तर को सुधारा जाये। उन्हें ऐसा बनाया जाये कि वे भी दुनिया में सिर उठाके जी सकें।

मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग भी ऐसे ही लोगों में से थे। ग़रीबों के दुख-दर्द को देख कर वह परेशान हो जाया करते थे। यही वजह है कि उन्होंने अपनी पूरी क्षमता इसी काम में लगा दी कि कैसे इन ग़रीबों के चेहरों पर मुस्कान लाई जाये।

मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग का जन्म 10 जनवरी, 1936 को उत्तर प्रदेश के आज़मगढ़ ज़िला के एक गाँव अंजान शहीद में हुआ। आपके पिता मिर्ज़ा रज़ा बेग और माता उम्दा ख़ातून घर पर आपको प्यार से मिट्ठू कह कर बुलाते। पाँच साल की नन्हीं सी आयु में पिता जी इस दुनिया को छोड़कर चले गये, लेकिन बड़े भाई मिर्ज़ा अहसानुल्ला बेग ने पिता की कमी का एहसास नहीं होने दिया। उन्होंने मिट्ठू की शिक्षा का बेहतर प्रबंध किया और इसमें किसी प्रकार की रुकावट नहीं आने दी।

गाँव के ही मदरसा इसलामिया प्राइमरी पाठशाला में मिट्ठू का नाम लिखा दिया गया, जहाँ से उन्होंने प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की। उसके बाद उनका ऐडमिशन आज़मगढ़ के गाँधी हाई स्कूल, मालटारी में करा दिया गया, जहाँ से उन्होंने मैट्रिक पास किया। मिट्ठू इस स्कूल के पहले बैच के छात्रों में से एक थे।

गाँधी हाई स्कूल, मिर्ज़ा अहसानुल्ला बेग के दिमाग़ की उपज था। उन्होंने इस स्कूल की रुपरेखा तैयार करने से लेकर उसके निर्माण के लिए आवश्यक सामग्री जुटाने तक में भरपूर योगदान दिया।

गाँधी हाई स्कूल, माल्टारी से मैट्रिक पास करने के बाद मिट्ठू ने शिबली इंटर कालेज, आज़मगढ़ में दाख़िला ले लिया, जहाँ पर उन्होंने बारहवीं तक की शिक्षा प्राप्त की।

बचपन में मिट्ठू अपनी माँ को सदैव ग़रीबों तथा अनाथों की सहायता करते हुए देखा करते। वह जाति और धर्म की सभी दीवारों को तोड़ते हुए, अपने आस-पास के दर्जनों अनाथ बच्चों को स्वयं अपना दूध पिलाया करती थीं। ये बच्चे दलित समुदाय के थे, जिनके माता-पिता महामारी फैलने के कारण मौत का शिकार हुए और अपने पीछे इन बच्चों को रोता-बिलखता छोड़ गये।

मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग अपने पिता को भी ज़रूरतमंदों की मदद करते और ग़रीबों की हालत सुधारने के लिए सदैव प्रयासरत पाते।

बचपन में माँ-बाप के इन कार्यों का मिट्ठू पर इतना गहरा असर हुआ कि वह खुद जीवन भर ग़रीबों के लिए बेचैन रहे। वह सदैव इसी सोच में डूबे रहते कि कैसे समाज के दबे-कुचले तथा ग़रीबी की मार झेल रहे लोगों को खुशहाल बनाया जाये, उन्हें सिर उठा कर जीना सिखाया जाये।

एक दिन शिबली इंटर कालेज के शिक्षकों ने विद्यार्थियों को एक डॉक्यूमेंट्री दिखाने का प्रबंध किया। 'भारत में अल्पसंख्यक' नाम की इस डॉक्यूमेंट्री में डॉक्टर ज़ाकिर हुसैन के व्यक्तित्व, अल्पसंखयकों के लिए उनकी दूर-दृष्टि तथा मुसलमानों के समग्र विकास में शिक्षा के रोल को बहुत अच्छे ढंग से प्रदर्शित किया गया था।

डॉक्यूमेंट्री देखने के बाद मिट्ठू, डॉक्टर ज़ाकिर हुसैन से मिलने के लिए बेचैन हो उठे और हर गुज़रते हुए दिन के साथ उनकी इस बेचैनी में वृद्धि होती गई।

मिट्ठू जिस साल आज़मगढ़ के शिबली कालेज में अपनी शिक्षा पूरी करने वाले थे, उन्हीं दिनों अपने बड़े भाई मिर्ज़ा अहसानुल्ला बेग को बताया कि वह डॉक्टर ज़ाकिर हुसैन से मिलना चाहते हैं। उन्होंने भाई से प्रार्थना की कि वह उनको दिल्ली भेजने का प्रबंध करें।

मिर्ज़ा अहसानुल्ला बेग को अपने छोटे भाई की इस बड़ी इच्छा को समझने में देर नहीं लगी, क्योंकि वह स्वयं एक सामाजिक-कार्यकर्ता, शिक्षाविद और जन-हितैषी थे। मिट्ठू को दिल्ली भेजने के लिए उन्होंने सारे प्रबंध किये। यही नहीं, मिटुठू का ऐडमिशन जामिया मिलिया इस्लामिया में आसानी से हो जाये, इसके लिए उन्होंने उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री सी. बी. गुप्ता से जामिया के कुलपति प्रोफ़ेसर मोहम्मद मुजीब के नाम एक पत्र भी लिखवाया।

अब तक मिट्ठू की समझ में यह बात अच्छी तरह आ गई थी कि समाज में परिवर्तन लाने के केवल दो ही तरीक़े हैं - पहला, अच्छे कामों में एक-दूसरे का साथ दिया जाये, जिसकी वकालत पंडित जवाहरलाल नेहरू किया करते थे। दूसरा, डॉक्टर ज़ाकिर हुसैन ने जो तरीक़ा अपनाया था कि शिक्षा, आर्थिक सहायता और सामाजिक कार्यों के द्वारा ग़रीबों को उनके पैरों पर खड़ा किया जाये।

उन्होंने सहकारी आंदोलन तथा सामाजिक कार्य (सोशल वर्क) का गहराई से अध्ययन करना शुरू कर दिया। एक तरफ़ जहाँ वह इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि ग़रीबों को उनके पैरों पर खड़ा करने के लिए उन्हें एक वित्तीय संस्था की आवश्यकता है, वहीं दूसरी तरफ़ उन्हें ऐसे दयावान लोगों की भी ज़रूरत थी, जो ग़रीबों को खुशहाल बनाने के इस कार्य में उनकी सहायता कर सकें।

उनकी पहली कोशिश यही थी कि कैसे लोगों में कौशल का विकास किया जाये, ताकि वे अपने संसाधनों का प्रयोग अपनी समस्याओं को सुलझाने में कर सकें। मिट्ठू 1958 में दिल्ली आए। यहाँ आकर उन्होंने जामिया मिलिया इस्लामिया में प्रवेश लेने के बाद सोशल वर्क की पढ़ाई शुरू कर दी।

समय यूँ ही बीतता रहा। एक शाम, जामिया नगर के तिकोना पार्क में जब वह अपने कुछ दोस्तों के साथ, देश के निर्माण में डॉ. ज़ाकिर हुसैन की भूमिका तथा शिक्षा के द्वारा अल्पसंख्यकों को आत्मनिर्भर बनाने पर वार्तालाप कर रहे थे, तभी किसी ने उनके कंधे पर हाथ रखा और कहा, ''ख़ाकसार को ज़ाकिर हुसैन कहते हैं''।

मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग ने जब पीछे मुड़ कर देखा, तो आश्चर्यचकित रह गये कि डॉ. ज़ाकिर हुसैन उनके सामने खड़े हैं। इतने हैरान हुए कि मुँह से तुरंत कुछ निकल न सका। ये वही ज़ाकिर हुसैन थे, जिनके व्यक्तित्व, उपलब्धियों

और सोच से मिट्ठू सबसे अधिक प्रभावित थे।

इस मुलाक़ात के बाद मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग डॉ. ज़ाकिर हुसैन के संपर्क में बने रहे और गुज़रते समय के साथ दोनों के आपसी संबंध भी मज़बूत होते चले गये। एक दिन मिट्ठू ने अपने प्रिय मित्र को दिल की बात बता दी, 'मुझमें लियाक़त (क्षमता) नहीं है, लेकिन ग़रीबों के लिए कुछ बड़ा करना चाहता हूँ। मित्र ने जवाब दिया, 'अगर लियाक़त नहीं है, तो ख़िदमत का जज़्बा (सेवाभाव) पैदा

कर लो, कामयाबी (सफलता) क़दम चूमेगी।

इन शब्दों ने युवा मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग के जीवन का रुख़ ही मोड़ दिया। वह हर वक़्त डॉक्टर ज़ाकिर हुसैन की इस सलाह पर विचार करते रहते।

कभी-कभी तो इतनी गहरी सोच में पड़ जाते कि उन्हें अपने आस-पास का कुछ ध्यान ही न रहता।

जामिया मिलिया इस्लामिया में सोशल वर्क की पढ़ाई के दौरान, मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग ने बहुत अच्छे दोस्त बनाए। उन्हीं दिनों उनकी जान-पहचान दिल्ली के विख्यात लोगों से भी हुई, जिनमें सामाजिक कार्यकताओं से लेकर शिक्षाविद, नौकरशाह और राजनीतिज्ञ तक, सभी शामिल थे। एक दिन सोशल वर्क डिपार्टमेंट के सीनियर टीचर श्री मदनलाल शर्मा ने भावुकता से कहा 'एक दिन मेरा मिर्ज़ा

बड़े-बड़े काम करेगा। मदनलाल शर्मा अपने होनहार छात्र मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग से बेपनाह प्यार करते और उनको जीवन में बड़े कार्य करने के लिए प्रेरित करने में गर्व महसूस करते थे।

हाथ में सोशल वर्क की डिग्री और दिल में दबे-कुचले लोगों की ज़िंदगी को बदलने का जज़्बा लिए मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग मैदान में कूद पड़े। उन्होंने जामिया क्षेत्र के ग़रीबों से मिलना तथा विभिन्न स्थानों पर बने कैंपों का दौरा करना शुरू कर दिया।

बेग साहब ने चूँकि जामिया और उसके आस-पास के क्षेत्र को अपने सामाजिक कार्यों के लिए चुना था, इसलिए उन्होंने जामिया मिलिया इस्लामिया में अतालीक़ (शिक्षक) की नौकरी प्राप्त कर ली। उन्होंने 'एक व्यक्ति, दो मिशन' का फ़ार्मूला अपनाते हुए, अपने बचे हुए समय को कमज़ोर लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में लगाना शुरू कर दिया।

पार्षद चैधरी नारायण सिंह की सहायता से उन्होंने अपना पूरा ध्यान अपने क्षेत्र में बिजली, पानी, साफ़-सुथराई और स्वास्थ्य सेवाएं पहुँचाने में लगाया। उसी ज़माने में उनकी मुलाक़ात कुछ ऐसे लोगों से भी हुई, जो पढ़ने-पढ़ाने के काम में लगे हुए थे। उन्हें पता चला कि उनमें से अधिकतर लोग ख़ुद को असुरक्षित महसूस करते हैं, छोटी सोच रखते हैं और उन्हें अपने समुदाय के बीच रहना ही ज़्यादा पसंद है।

बेग साहब ने यह महसूस कर लिया था कि अगर उन्हें एक बेहतर और ख़ुशहाल भविष्य चाहिए, तो उन्हें आबादी से बाहर निकल कर दूसरे समुदायों के साथ रहना पड़ेगा।

तभी उनके दिमाग़ में जीवन की सभी सुविधाओं से लैस एक रेगुलराइज़्ड कॉलोनी बनाने का ख़्याल आया। इसके लिए बेग साहब ने अपने सभी निकटतम मित्रों को इकट्ठा किया, उनसे इस विषय में विचार-विमर्ष किया और अपने एक क़रीबी दोस्त, इंजीनियर अहमद सईद से कहा कि वह ऐसी ही सोच रखने वाले कुछ और लोगों को जमा करें, जिन्हें इस प्रकार की कॉलोनी की ज़रूरत हो।

उसके बाद सोसायटी ने दक्षिणी दिल्ली में भूमि प्राप्त करने के लिए प्रयास तेज़

कर दिये। इस संबंध में शिक्षाविद सैय्यद हामिद, जो उस समय गृह-मंत्रालय में ज्वाइंट सेक्रेटरी थे, उन्होंने एक क़दम आगे बढ़ कर मदद की। आख़िरकार, इनकी आपसी कोशिशें रंग लाईं और इस प्रकार न्यू फ्रेन्डस कॉलोनी के सामने 4.25 एकड़ ज़मीन उन्हें एलॉट कर दी गई।

कार्य की निगरानी के लिए बेग साहब ने विख्यात आर्किटेक्ट राजरेवाल को चुना, जो निर्माण-कला और टेक्नॉलोजी के मिश्रण से सुन्दर इमारतें बनाने के लिए मशहूर थे।

राज रेवाल के माध्यम से चार करोड़ की लागत से बनने वाली और 204 इकाइयों वाली यह सुंदर कॉलोनी 1984 में बन कर तैयार हो गई। चूँकि इस आवासीय परियोजना की रूपरेखा डॉक्टर ज़ाकिर हुसैन के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर तैयार की गई थी, इसीलिए सदस्यों ने उन्हें श्रद्धांजली देते हुए इसका नाम ज़ाकिर बाग़ रखा। एक ऐसे बगीचे की तरह, जिसमें तरह-तरह के पेड़ पौधे लगे हों, ज़ाकिर बाग़ में भी भिन्न-भिन्न प्रकार के लोगों को बसाया गया, जिनमें चपरासी, क्लर्क, शिक्षाविदों से लेकर, इंजीनियर, नौकरशाह, वकील, डॉक्टर और व्यापारी तक, सभी शामिल थे। इसके अलावा बेग साहब ने एक और क़दम आगे बढ़ाते हुए यहाँ हिंदू, मुस्लिम, सिख और ईसाई वर्गों से संबंध रखने वाले लोगों को भी लाकर बसाया, ताकि यह मानव उद्यान सांस्कृतिक रंगारंगी का एक उत्कृष्ट उदाहरण साबित हो सके। यह बेग साहब की बड़ी उपलब्धियों में से एक थी।

आवास की समस्या से बेफ़िक्र होने के बाद, अब बेग साहब सामाजिक सेवा के अपने बुनियादी काम पर लगना चाहते थे, ग़रीबों को उनके पैरों पर खड़ा करना चाहते थे। जामिया कोऑपरेटिव बैंक के नाम से उन्होंने दूसरा प्रोजेक्ट शुरू किया, जिसका उद्देश्य ग़रीबों के लेए पैसे का प्रबंध करना था।

मिर्ज़ा साहब ने इस प्रोजेक्ट के बारे में उस समय के सभी सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञों से बातचीत की, एक व्यावहारिक नक़्शा तैयार किया और कागज़ी काम, अर्थशास्त्री राजा चेलैय्या के साथ मिल कर किया, जो कि पंजीकरण के समय इसके पहले अध्यक्ष थे। कुछ दिनों बाद, चेलैय्या की जगह आई. ज़ेड भट्टी ने ले ली, जिन्होंने

बैंक के दूसरे अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभाला।

आख़िरकार, सभी चिंताओं पर क़ाबू पाते हुए, जामिया कोऑपरेटि बैंक लिमिटेड (जेसीबी) ने 1995 से काम करना शुरू कर दिया। आज पूरे गर्व के साथ कहा जा सकता है कि जेसीबी अच्छे कोऑपरेटिव बैंकों में से एक है। उसके पास 152 करोड़ का डिपोज़िट बिज़नेस और 84 करोड़ की अतिरिक्त राशि मौजूद है।

आज अगर हम जेसीबी की उपलब्धियों पर नजर डालें, तो उसने ऐसे अनगिनत लोगों को ऋण दिए हैं, जो अपनी दो वक्त की जरूरत पूरी करने के लिए दर-दर की ठोकरें खा रहे थे। इसी तरह जामिया कोऑपरेटिव बैंक ने उन लोगों को ऋण दिया, जो छोटा-मोटा कोई व्यवसाय शुरू करके अपने जीवन को बेहतर करना चाहते थे। महिलाओं के सशक्तिकरण और उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए कुशल बनाया, वाहन ख़रीदने के लिए ऋण दिलवाए, ताकि उनके जीवन में भी बदलाव आये और वह समृद्ध ज़िंदगी गुज़ार सकें।

लोगों को अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए आसान शर्तों पर ऋण मुहैया कराने के अलावा, जेसीबी ने पढ़ने वाले कई बच्चों को अपनी शिक्षा जारी रखने और अपने परिवार का भाग्य बदलने में भी उनकी मदद की। मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग ने अपने दोस्त, इंजीनियर अहमद सईद से यह बात कही थी कि किसी भी बच्चे को सिर्फ़ इसलिए शिक्षा से दूर न रखा जाये कि उसके माता-पिता पढ़ाई का ख़र्च नहीं उठा सकते। उसे शिक्षित करना उन लोगों की जिम्मेदारी है, जिन्हें परमेश्वर ने हर प्रकार के संसाधन व स्रोतों से समृद्ध किया है। हमारे समाज को आगे बढ़कर शिक्षा के क्षेत्र में मदद करने की ज़िम्मेदारी स्वीकार करनी चाहिए।

बेग साहब राजधानी दिल्ली में दबे-कुचले लोगों को ग़रीबी के अंधेरे से बाहर निकालने में तो लगे हुए थे ही, इसी बीच उन्होंने अपने पैतृक गाँव अनजान शहीद, आज़मगढ़, उत्तर प्रदेश में भी कई शैक्षिक परियोजनाएं शुरू कीं।

उन्हीं शैक्षिक परियोजनाओं में से एक मिर्ज़ा अहसानुल्ला बेग गर्ल्स डिग्री कॉलेज भी था, जिसे मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग ने मिर्ज़ा महफूज़ बेग, मिर्ज़ा आरिफ़ बेग

और मिर्ज़ा क़मरुल हसन बेग के साथ मिलकर अपने बड़े भाई मिर्ज़ा अहसानुल्ला बेग की याद में बनवाया था। इसकी स्थापना में उन्हें परिवार के अन्य सदस्यों का भी भरपूर योगदान मिला। इस कॉलेज का शिलान्यास 18 फरवरी, 2003 को सेवानिवृत्त आईएएस अफ़सर तथा जामिया हमदर्द के पूर्व कुलपति स्वर्गीय सैय्यद हामिद ने रखा था।

लोगों को आर्थिक और शैक्षिक रूप से सशक्त बनाने की इन तमाम कोशिशों के बीच, मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग ने एक ऐसा तंत्र विकसित करने की ज़रूरत भी महसूस की, जहाँ आज़मगढ़ के लोग अपनी समस्याओं और चिंताओं से संबंधित बात कर सकें। फिर, उनकी ये बातें वहाँ से प्रशासन तक पहुँचाई जाएं, ताकि वे इसे अच्छी तरह समझ कर उसका कोई हल निकालें और आज़मगढ़ की जनता सरकारी सुविधाओं का लाभ उठा सके।

इसका परिणाम हमें 'वॉएस ऑफ़ आज़मगढ़, (वीओए) के नाम से एक सामुदायिक रेडियो के रूप में देखने को मिला। वॉएस ऑफ आज़मगढ़ की कार्यक्रम हेड, सीमा श्रीवास्तव के अनुसार, हम ऐसे कार्यक्रम चलाते हैं, जिनसे प्रभावित होकर लोग अपने जीवन में कुछ बड़ा कर सकें। सरकारी अधिकारियों को इस क्षेत्र के लोगों से जोड़ते हैं, ताकि वे कल्याणकारी योजनाओं के बारे में उन्हें बता सकें। गरीबों को एक खुला मंच प्रदान करते हैं, ताकि वे अपनी समस्याओं और चिंताओं को ज़ाहिर कर सकें, यहाँ से अपनी आवाज़ बुलंद कर सकें।

वर्ष 2015 के शुरूआती दिनों में मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग ने अपने पुत्रों के सामने यह इच्छा व्यक्त की कि वह दिल्ली में भी अंग्रेज़ी मध्यम के स्कूल खोलना चाहते हैं। अपने पिता की इस अंतिम इच्छा को पूरा करने के लिए उनके योग्य बेटों ने इस पर काम करना शुरू कर दिया है।

6 मई, 2015 को दिल का दौरा पड़ने से उनका देहांत हो गया। शायद इस दुनिया से ज़्यादा किसी और दुनिया में उनकी ज़रूरत थी। यहाँ के लोग अभी भी उनकी उदारता का उल्लेख करते हुए बताते हैं कि बेग साहब ने ग़रीबों की मदद करने के लिए अपनी घड़ी, अंगूठी, कपड़े और जूते आदि तक बेच डाले थे।

7 मई, 2015 की दोपहर को ईश्वर नगर के उनके घर से मैय्यत को जनाज़े की नमाज़ के लिए एक खुले मैदान में लाया गया। हज़रत सैय्यद बिलाल थानवी ने जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई। उसके बाद मैय्यत को जामिया क़ब्रिस्तान लाया गया। उनकी अंतिम आरामगाह के लिए यह जगह इसलिए भी सही थी, क्योंकि यहीं से उन्होंने अपने मिशन की शुरूआत की थी।

अब, जब कि मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग हमारे बीच मौजूद तो नहीं हैं, लेकिन इंसानों की सेवा, लोगों से अच्छा बर्ताव जैसे उनके कारनामे न केवल उन्हें सबके दिलों में जीवित रखेंगे, बल्कि उनके मिशन को भी आगे बढ़ाते रहेंगे।

औरों की नज़र में
मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग

मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग के जीवन के बारे में विस्तार से जानना उन लोगों के लिए भी गहरे शोध और जिज्ञासा की बात है, जो अनजान शहीद, आज़मगढ़ में बचपन से ही उन्हें मिट्ठू, के रूप में जानते थे और उनके लिए भी जो जामिया नगर, नई दिल्ली में पहली बार उनसे मिले।

उनकी निस्वार्थ सामाजिक सेवाओं, ख़ासकर लड़कियों को सशक्त बनाने में उन्होंने जो कुछ किया, उसे देखकर उनके बचपन के गहरे दोस्त हैरान थे कि कैसे शिक्षा के सहारे बेग साहब ने अपनी जड़ें मज़बूत कीं। दूसरी ओर, जामिया के दिनों के उनके अच्छे दोस्त इस बात के गवाह बने कि कैसे मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग उनकी समस्याओं और परेशानियों को दूर करने के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं, साथ ही उन्होंने यह भी देखा कि बेग साहब ने कैसे ज़ाकिर बाग़ और जामिया कोऑपरेटिव बैंक लिमिटेड की स्थापना करके उनकी आवासीय और आर्थिक ज़रूरतों को पूरा करने का काम किया।

बेग साहब के जीवन की सभी घटनाओं को एकत्र करने पर हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग निस्संदेह उन लोगों के लिए 'खुदा का आशीर्वाद' थे, जिन्होंने शायद अपनी मुश्किलों और परेशानियों के समय में उनके जैसे इंसान को इस दुनिया में भेजने की प्रार्थना की होगी।

इससे यह बात पूरी तरह स्पष्ट हो जाती है कि क्यों वह एक उदार दिल रखते थे और उसमें अनगिनत लोगों के लिए दया, प्रेम और कल्याण की भावना क्यों कूट कूटकर भरी हुई थी। यही वजह थी कि अंतिम साँस लेते समय भी वह इसी उधेड़बुन में लिप्त देखे गए कि उन्होंने समाज के ग़रीब लोगों के कल्याण के लिए जो संस्थान स्थापित किए हैं, उनकी स्थिति क्या है और वह ठीक-ठाक चल रहे हैं या नहीं।

प्रसिद्ध वकील और न्यायाधीश एस. एन. कुमार की पत्नी, श्रीमती अर्चना कुमार कहती हैं, ''हमारे बीच रिश्ता लगभग 35 साल पहले पेशे के आधार पर बना, लेकिन जल्द ही हम एक परिवार बन गए। मैंने मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग के बारे में महसूस किया कि वह विनम्रता, ईमानदारी और आतिथ्य का स्रोत थे। वह मेरे दोनों बच्चों से बहुत प्यार करते थे। मेरे घर पर अक्सर आते और मेरे बच्चों के लिए हमेशा स्वादिष्ट खाना लाते। मेरे घर पर, चाहे मेरी बेटी का जन्मदिन हो या कोई और सामाजिक समारोह, वे हर अवसर पर हमारे साथ होते।''

राष्ट्रीय आयोग, अल्पसंख्यक शैक्षिक संस्थान, भारत सरकार के पूर्व चेयरमैन, जस्टिस एम. एस. ए. सिद्दीक़ी के अनुसार, मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग अपने आचरण और चरित्र के हिसाब से एक इंसान रूपी फरिश्ता थे। जस्टिस सिद्दीक़ी बताते हैं कि ''मैंने अपने जीवन में ऐसा इंसान कभी नहीं देखा, जिसका एकमात्र उद्देश्य ग़रीबों को उनकी बदहाली से बाहर निकालना रहा हो और जिसने अपनी पूरी ऊर्जा और सारे संसाधन इसी काम में लगा दिए हों। वे जीवन भर यही संघर्ष करते रहे कि कैसे ज़रूरतमंद लोगों को अपने पैरों पर खड़ा किया जाए, ताकि वह भी सिर उठा कर जीवन व्यतीत कर सकें।''

इंडिया इस्लामिक कल्चरल सेंटर (आईआईसीसी), नई दिल्ली के अध्यक्ष सिराजुद्दीन कुरैशी बताते हैं, ''बेग साहब से मेरा परिचय लगभग तीन दशक पहले

न्यायमूर्ति एस. एन. कुमार और सुश्री अर्चना कुमार ने करवाया था। वह एक शरीफ आदमी और कई खूबियों के मालिक थे, जिससे मैं काफ़ी प्रभावित हुआ। बेग साहब का आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे जामिया कोऑपरेटिव बैंक के निदेशक के पद की पेशकश की, जिसे मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। मुझे आज़मगढ़ में उनके होम-टाउन अनजान शहीद का दौरा करने और वहाँ 18 फरवरी, 2012 को मिर्ज़ा अहसानुल्ला बेग गर्ल्स डिग्री कॉलेज के वाणिज्य विभाग की इमारत का शिलान्यास करने का भी मौक़ा मिला। मैं प्रार्थना करता हूँ कि उनके बच्चे बेग साहब की विरासत को आगे लेकर जाएं।''

उर्दू के नामी कवि, इक़बाल अशहर अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहते हैं, ''मेरे विचार में मिर्ज़ा साहब की सबसे बड़ी उपलब्धि मुसलमानों के लिए वित्तीय संस्था स्थापित करना था, ख़ासकर ऐसे समय में, जब इस तरह के ज़्यादातर प्रयास या तो असफल रहे या फिर उन्होंने ग़रीबों को छोड़कर अमीरों के लिए काम करना शुरू कर दिया। जामिया नगर में रहने वाले ग़रीबों की सुध लेने वाला कोई नहीं था। इसकी एक वजह यह भी थी कि वित्तीय संस्थानों ने यह घोषणा कर दी थी कि जामिया नगर निगेटिव ज़ोन है। मिर्ज़ा साहब ने जिस जामिया कोऑपरेटिव बैंक की नींव डाली, वह केवल एक बैंक ही नहीं है, बल्कि उन लाखों बेसहारा परिवारों की जीवन रेखा है, जो ग़रीबी की वजह से अपने बच्चों को पढ़ाने, अपना कोई व्यवसाय शुरू करके आर्थिक रूप से सशक्त बनने या फिर ग़रीब लड़कियों की शादी के लिए बैंक से ऋण लेने के बारे में सोच भी नहीं सकते थे।

ख़ुद इक़बाल अशहर को एक बार दिल का दौरा पड़ा, जिसकी वजह से उनकी हालत काफ़ी नाज़ुक हो गई। ऐसे में मिर्ज़ा साहब ने उनकी ज़िंदगी बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस घटना को याद करते हुए इक़बाल अशहर कहते हैं, ''एक बार मुझे दिल का दौरा पड़ा। उस समय मेरी जान बचाने वाला कोई नहीं था। ऐसे में मिर्ज़ा साहब ही थे, जिन्होंने अपने बेटों से कहा कि वह बिना किसी देरी के मेरे इलाज का बेहतर से बेहतर प्रबंध करें। उन्होंने अपने बेटों से मुख़ातिब होते हुए कहा कि ''मेरे पाँच बच्चे हैं, जिनमें से एक इक़बाल अशहर भी है। उनका अच्छा से अच्छा इलाज और हर उस चीज़ का इंतेज़ाम करो,

जिनकी उन्हें ज़रूरत है।'' मुझे एसकॉर्ट हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया, जहाँ मेरी ओपन हार्ट-सर्जरी हुई और जब तक मैं पूरी तरह स्वस्थ नहीं हो गया, तब तक उनके बेटों ने मेरा पूरा ध्यान रखा।

''तबीयत बहाल होने के बाद उनका शुक्रिया अदा करने उनके घर गया। मुलाक़ात के समय उन्होंने मुझसे कहा, 'इक़बाल, आप तो बस उर्दू साहित्य की सेवा करते रहिए, बाक़ी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। उसके लिए हम हैं।' मेरे स्वास्थ्य के बारे में पता करने के बाद उन्होंने चुपके से मुझे कुछ पैसे दिए और कहा, 'इस पैसे से कुछ फल खा लेना।' मैं उनकी सहानुभूति को सलाम करता हूँ, जिसकी वजह से मुझे एक नया जीवन मिला। अगर अल्लाह ने उन्हें मेरे पास नहीं भेजा होता, तो शायद मैं बच नहीं पाता और किसी क़ब्र में सो रहा होता।''

वरिष्ठ राजनीतिक कार्यकर्ता अतुल कुमार अंजान के अनुसार, मिर्ज़ा साहब ने एक भारतीय और एक सच्चे मुसलमान के रूप में जीवन बिताया। उन्होंने आगे बताया कि ''अगर इस देश के नागरिकों में से किसी ने भारतीय संविधान का ठीक ढंग से पालन किया है, तो मेरे विचार से मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग उसकी अनोखी मिसाल हैं, जिन्होंने अपना पूरा जीवन संविधान के अनुसार गुज़ारा। उन्होंने एक भारतीय और एक सच्चे मुसलमान होने का नमूना पेश किया। उनका दिल प्यार, मोहब्बत, बलिदान और देशभक्ति की भावना से भरा हुआ था। उन्होंने अमल करके दिखा दिया कि ईमानदारी किसे कहते हैं। बिना किसी धोखाधड़ी और ग़लत काम के, उन्होंने विकास की सभी मंजिलें तय कीं।''

अतुल कुमार अंजान आगे कहते हैं, ''वह एक धार्मिक व्यक्ति थे, लेकिन रूढ़िवादी बिल्कुल नहीं थे। ज़रूरतमंदों की मदद करते समय उन्होंने कभी यह नहीं सोचा कि उनका धर्म क्या है। उनका दिल मानवीय भावना से भरा हुआ था। वह हर धर्म और संप्रदाय के ज़रूरतमंदों की मदद करने के लिए सदैव तैयार रहते। सीमित संसाधनों के सहारे उन्होंने जामिया से अपनी पढ़ाई पूरी की और यहाँ बहुत सारे दोस्त बनाए। हालाँकि वह दिल्ली इसलिए आए थे, ताकि यहाँ अपनी पढ़ाई पूरी करें और फिर अपने देश लौट जाएं। लेकिन, अंत में उन्होंने यहीं रहने का फैसला किया, क्योंकि इस शहर ने उन्हें अपने सामाजिक

कार्यों को ठीक ढंग से अंजाम देने के बेहतरीन अवसर प्रदान किए। और सबसे बड़ी बात यह कि दिल्ली वह जगह है, जहाँ उनके रहबर डॉक्टर ज़ाकिर हुसैन रहा करते थे।''

बक़ौल शाहिद सिद्दीक़ी (संपादक नई दुनिया और पूर्व सांसद), मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग मुसलमानों के लिए एक रोल मॉडल थे। ''देश के विभिन्न भागों से बड़ी संख्या में लोग दिल्ली आए और यहीं बस गए। बेग साहब भी उन्हीं में से एक हैं। लेकिन साथ ही, वह उन लोगों में से भी एक हैं, जिन्होंने दिल्ली से कुछ लिया नहीं है, बल्कि उसे दिया है। हकीम अब्दुल हमीद के बाद बेग साहब ऐसे दूसरे व्यक्ति हैं, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में काफी काम किया है। कई लोग बातें तो बड़ी-बड़ी करते हैं, लेकिन व्यावहारिक क्षेत्र में उनकी उपलब्धि शून्य है। बेग साहब ने जामिया कोऑपरेटिव बैंक की स्थापना करके अल्पसंख्यकों के आर्थिक विकास के लिए एक बड़ा काम किया है।

''वह चाहते थे कि मुसलमान अपने बच्चों को आधुनिक प्रौद्योगिकी के अनुसार शिक्षा दिलाएं, इसीलिए वह मेडिकल कॉलेज, इंजीनियरिंग कॉलेज और अच्छा इंग्लिश मीडियम स्कूल खोलने के लिए चिंतित रहते। उन्होंने एक बार मुझसे कहा था कि तलवार का ज़माना चला गया। आज मुसलमान केवल शिक्षा के द्वारा अपनी लड़ाई लड़ सकते हैं। चींटी जिस तरह चुपचाप अपना काम करती है, उसी तरह वह भी लोगों की बेहतरी के लिए जीवन भर काम करते रहे। इस सोच और गति से काम करने वाले अगर कुछ और लोग उनके साथ जुड़ जाते, तो वह एक बड़ी क्रांति ला सकते थे।''

मिर्ज़ा साहब के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रोफ़ेसर असद अली कहते हैं, ''अपनी सकारात्मक सोच को अमली जामा पहना देना मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग की सबसे बड़ी खूबी थी। ज़ाकिर बाग़ या जामिया कोऑपरेटिव बैंक, या फिर आज़मगढ़ में स्कूलों का निर्माण, मिर्ज़ा साहब ने यह साबित कर दिया कि वह उन लोगों में से नहीं हैं, जो सोच तो बड़ी अच्छी-अच्छी रखते हैं, लेकिन उन्हें साकार नहीं कर पाते। इसके विपरीत बेग साहब ने जो सोचा, वह कर दिखाया। बेग साहब इस बात को भी बखूबी जानते थे कि किस काम के लिए किस अधिकारी से संपर्क करना है। यदि उन्हें सरकारी कार्यालय से कोई काम

कराना होता, तो पहले वह कार्यालय में जाकर वहाँ के क्लर्क से दोस्ती करते, ताकि यह समझ सकें कि संबंधित अधिकारी से मिलने से पहले क्या क्या काम करने हैं।''

मिर्ज़ा साहब से अपनी दूसरी मुलाक़ात को याद करते हुए कुँवर अजय कुमार सिंह इस घटना का उल्लेख इन शब्दों में करते हैं, ''श्री कमलापति त्रिपाठी की सलाह पर 1978 में जब मेरे पिता मिर्ज़ा अहसानुल्ला बेग के साथ श्रीमती इंदिरा गांधी से मिलने के लिए दिल्ली आए, तो उनके साथ मैं भी यहाँ आया। दिल्ली में वह मिट्ठू चाचा के घर पर बटला हाउस में ठहरे। यहाँ मैं लगभग सात दिनों तक रुका। मैंने देखा कि मिट्ठू चाचा (मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग) सुबह पाँच बजे सो कर उठ जाते और खुद अपने हाथों से गरम-गरम चाय मेरे लिए बनाकर लाते। वापसी पर मैंने अपनी माँ से कहा कि मिट्ठू चाचा बहुत अच्छे इंसान हैं। उन्होंने मेरी शिक्षा के बारे में पूछा और यह भी पता किया कि आज़मगढ़ में क्या कुछ चल रहा है, और यह कि ग़रीबों और पिछड़े लोगों की बेहतरी के लिए कैसे काम किया जाए। मैं उनकी प्रतिबद्धता और उत्साह से काफ़ी प्रभावित हुआ, हालाँकि उस समय छोटा होने की वजह से मैं उन चीज़ों को बेहतर ढंग से नहीं समझ पाता था। इसके बाद से ही मैं उन्हें काफ़ी पसंद करने लगा। वह जब भी मेरे घर आते, मेरे पिताजी उन्हें 'मिट्ठू' कहकर पुकारते। यह सुनकर मैं हँस पड़ता, क्योंकि तब मुझे वह दृष्य याद आ जाता, जब पिताजी के पुकारने पर मैंने पर्दे के पीछे से पहली बार मिट्ठू चाचा को देखा था, क्योंकि हमारे यहाँ आमतौर पर 'मिट्ठू' शब्द का प्रयोग तोते को पुकारने के लिए किया जाता है, लेकिन मैंने पहली बार देखा कि यह शब्द किसी इंसान को बुलाने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है।''

मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग की ईमानदारी और शिक्षा तथा सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने में उनकी लगन और कड़ी मेहनत के सम्मान में उन्हें 18 फरवरी, 2005 को पहले फ्रेंडशिप पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्रीराम कुँवर सिंह के 'जन्म शताब्दी समारोह' के अवसर पर यह पुरस्कार उन बेदाग़ और क्रियाशील हस्तियों को दिया जाता है, जिन्होंने शिक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हो।

कुँवर अजय कुमार सिंह ने बताया कि ''जब मैंने मिर्ज़ा साहब के बारे में अधिक जानने की कोशिश की, तो मेरे विचार से मुझे वह एक भिखारी (दरवेश) दिखाई दिए। पिछड़े लोगों को शिक्षित करने की उनकी जो सोच थी, मैं उसकी दिल की गहराइयों से सराहना करता हूँ। किसानों को जुल्म व अत्याचार से बचाने के लिए पंडित जवाहर लाल नेहरू ने सहकारी आंदोलन को सफलता का रास्ता बताया था। मिट्ठू चाचा ने पंडित नेहरू की इस विचारधारा का चतुराई से इस्तेमाल किया और अपनी सोच को हक़ीकत का रंग दिया। मुझे याद है कि मिट्ठू चाचा ग़रीबों की भलाई के काम करने के लिए कितने बेचैन रहा करते थे। सहकारी क्षेत्र में उन्होंने कहीं से कोई प्रशिक्षण नहीं लिया था, फिर भी वे इसका गहरा ज्ञान रखते थे। यह वास्तव में एक शानदार उपलब्धि थी। हालात चाहे जो भी हों, उन्होंने अपने जीवन में ईमानदारी और लगन से कभी समझौता नहीं किया।''

सेंट्रल इलेक्ट्रिसिटी प्राधिकरण के पूर्व अध्यक्ष, रामेश्वर नाथ श्रीवास्तव कहते हैं कि मिर्ज़ा साहब क्षमता और मानव व्यवहार को समझने में महारत रखते थे। व्यर्थ बातों में वह अपना समय कभी बर्बाद नहीं करते थे। बक़ौल आर. एन. श्रीवास्तव, ''शतरंज का एक माहिर खिलाड़ी अच्छी तरह जानता है कि मैच जीतने के लिए उसे किस मोहरे को कहाँ रखना है। बेग साहब भी लोगों की क्षमताओं को अच्छी तरह पहचानते थे और जानते थे कि किस काम को कराने के लिए किससे मिलना है। वह नेटवर्क बनाने के माहिर थे और इस बात को बखूबी जानते थे कि अच्छे संबंध तभी बनते हैं, जब किसी को खाने पर आमंत्रित किया जाये। इसलिए, उनके पास मिलने के लिए जब भी कोई आता, तो वह उसे खाना ज़रूर खिलाते थे। इससे यह साबित होता है कि वह एक मेहमान-नवाज़ और लोगों की ख़ातिरदारी करने वाले व्यक्ति थे। इसी दोस्ताना आदत की वजह से उन्हें लोगों तक पहुँचने में कभी कोई दिक़्क़त पेश नहीं आई। सहकारी आंदोलन में वह बहुत विश्वास रखते थे। उनका मानना था कि सहकारी आंदोलन एक ऐसा शक्तिशाली आंदोलन है, जिससे पिछड़े लोगों की अधिकांश समस्याओं को आसानी से हल किया जा सकता है और उन्हें सिर उठा के जीने लायक़ बनाया जा सकता है। इसीलिए उन्होंने बाहर निकल कर ऐसे लोगों की पहचान की और फिर उन्हें एक साथ जमा किया, ताकि उन्हें

लाभ पहुँचा सकें।''

आर. एन. श्रीवास्तव ने आगे बताया कि ''जामिया कोऑपरेटिव बैंक बनाने के लिए कुछ आवश्यक शर्तें को पूरा करना ज़रूरी था, जिनमें से एक यह भी था कि इसके लिए आपके पास इतने लोग और इतना धन होना चाहिए। यह एक कठिन काम था, लेकिन मिर्ज़ा साहब ने पूरी हिम्मत से काम शुरू किया। उन्होंने हर तरह के लोगों से संपर्क किया, चाहे वह बड़ा हो या छोटा। उन्होंने सबको अपना मुद्दा सुनाया और उनके द्वारा जो कुछ भी मिला, धन्यवाद के साथ उन्होंने इसे जमा करना शुरू कर दिया। बात करते समय उन्होंने उन लोगों के सामने कभी यह शर्त नहीं रखी कि उन्हें इतना पैसा देना ही देना है। उनके लिए हर मदद महत्वपूर्ण थी, चाहे छोटी रही हो या बड़ी। सैद्धांतिक रूप से उन्होंने पूरा धैर्य, संकल्प और उत्साह दिखाया। इसी का नतीजा था कि ज़ाकिर बाग जैसा कठिन काम पूरा हो पाया, वर्ना उस समय बड़े से बड़ा आदमी ऐसी परियोजना के बारे में सोच भी नहीं सकता था।''

मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग के क़रीबी दोस्त और एक बड़े कवि, निज़ामुद्दीन आज़मी ने उनके बारे में अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा कि ''मिर्ज़ा साहब हमेशा किसी न किसी चीज़ को धोते रहते थे, और ऐसा करते समय लगता था कि वह अपना दिल धो रहे हैं। जहाँ तक बच्चों पर करूणा और दया की बात है, तो उन्होंने अपने बच्चों और दूसरों के बच्चों में कोई भेदभाव नहीं किया। बल्कि, उन्होंने अपने बच्चों की तुलना में दूसरों के बच्चों को अधिक प्राथमिकता दी। उनके सामने सब बराबर थे, सब आदर के योग्य थे, चाहे वह ऐशो आराम का जीवन व्यतीत कर रहा हो या फिर झुग्गियों में रहने वाला कोई व्यक्ति हो। उनके अंदर नफ़रत और दुश्मनी, बैर व कटुता या फिर इस तरह का कोई भी नकारात्मक भाव नहीं था, बल्कि वह उन सब से मुक्त थे। वह लोगों को खुदा की कल्पना समझकर गले लगाने में विश्वास रखते थे। उन्होंने हर तरह से लोगों की मदद की, कभी-कभार तो उन चीज़ों से भी, जिनकी खुद उन्हें सख़्त ज़रूरत थी।''

अबू सलेम, जिन्हें प्यार से लोग 'मुन्ना भाई' कहते हैं, अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए बताते हैं, ''कमज़ोर वर्गों की मदद करने के अपने काम को

जारी रखते हुए, मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग दिल्ली में एक स्टैंडर्ड स्कूल खोलना चाहते थे। एक शैक्षिक संस्थान स्थापित करने की बारीकियों को समझने में उन्होंने काफ़ी समय बिताया, लेकिन बाद में इससे अलग हो गए, क्योंकि इसमें काफ़ी पैसा चाहिए था, जो कि उस समय उनके पास नहीं था। इसके बाद उन्होंने ग़रीबों की वित्तीय ज़रूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से एक सहकारी बैंक खोलने का फैसला किया। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद मैं होली फ़ैमिली अस्पताल में मुख्य फार्माशिस्ट (दवासाज़) बन गया। मिर्ज़ा साहब ने मुझे बुलाया और करियर से संबंधित मेरे प्लान के बारे में पूछा। मैंने जवाब दिया कि या तो दवा बनाने वाली फ़ैक्ट्री खोल सकता हूँ या फिर किसी ऐसे संगठन के साथ काम करना चाहता हूँ, जो मेरे बेहतर भविश्य की गारंटी दे सके। उन्होंने तुरंत कहा कि वह मेरे दूसरे विकल्प पर सहायता प्रदान कर सकते हैं। सौभाग्य से, उन्हीं दिनों सऊदी अरब से एक प्रतिनिधिमंडल आया हुआ था, जिसे एक फ़ार्मशिस्ट की तलाश थी। मिर्ज़ा साहब ने आगे बढ़कर अपने सभी संसाधनों का उपयोग करते हुए इस बात की कोशिश की कि मेरी नियुक्ति वहाँ सहायक फ़ार्माशिस्ट के रूप में हो जाये। मैं आठ साल रियाध में रहा, जहाँ मुझे अच्छा वेतन मिला और मैं तरक़्क़ी करते हुए मुख्य-फ़ार्माशिस्ट के पद पर पहुँच गया।

''एक बार मैं अपनी साली की बेटियों के भविश्य को लेकर काफ़ी चिंतित था। वह पढ़ने में बहुत तेज़ थीं, लेकिन वित्तीय संकट के कारण अपनी पढ़ाई जारी नहीं रख पा रही थीं। मैंने उन्हें दिल्ली बुलाया और इस समस्या पर मिर्ज़ा साहब से बात की। वह इन लड़कियों को तुरंत न्यायमूर्ति एस. एन. कुमार के पास ले गए, जहाँ न्यायाधीश साहब की पत्नी अर्चना कुमार ने उनके साथ सहानुभूति व्यक्त करते हुए उनका ऐडमिशन लेडी इरविन स्कूल में करा दिया। उनका शुक्रिया अदा करने के लिए मिर्ज़ा साहब ने सुश्री अर्चना कुमार को डिनर पर बुलाया और सभी ख़र्च सहन किए। मैंने पैसे देने की पेशकश की, लेकिन उन्होंने मुझे ऐसा करने नहीं दिया। मेरे विचार में, मिर्ज़ा साहब मानवता के लिए ख़ुदा का आशीर्वाद थे, जिन्होंने ज़रूरतमंदों की आजीवन निस्वार्थ सेवा की। उनके इस जज़्बे को सलाम करता हूँ और दिल की गहराइयों से उनका एहसान मानता हूँ।

मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग के पोतों में से एक, मिर्ज़ा साक़िब बेग अपना भाव

व्यक्त करते हुए बताते हैं, ''मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग को जिन दिनों इलाज के लिए चीन ले जाया जा रहा था, उन्होंने मुझसे कई बार कहा था कि जिस तरह चीन, अमेरिका, ब्रिटेन और यूरोप के अन्य देशों में इलाज के बहुत उच्च और सारी सुविधाओं से लैस अस्पताल हैं, वैसे ही अस्पताल भारत में भी होने चाहिए। एक सच्चे राष्ट्रवादी के रूप में, वह अपने देश में भी समाज के ग़रीब और कमज़ोर वर्गों को अच्छी चिकित्सा सेवा मुहैया होते हुए देखना चाहते थे।

''यदि कोई उनके सामने कोई ग़लत शब्द या अभद्र भाषा का प्रयोग करता, तो नाराज़गी में उनके मुँह से निकलता 'धत्त तेरी की'। वह उस आदमी को यह कहकर फटकार भी लगाते कि तुम जामिया का नाम ख़राब कर रहे हो।'' वह जामिया मिलिया इस्लामिया से इतना प्यार करते थे कि वह किसी के मुँह से उसके ख़िलाफ एक भी शब्द सुनने या संस्था का अपमान बर्दाश्त नहीं करते थे।

''जहाँ तक अल्लाह से लगाव का संबंध है, तो मैंने उन्हें पूरी तरह आज्ञाकारी पाया। नमाज़ के समय, मैंने तयम्मुम करने में उनकी मदद की। बीमारी की हालत में भी उन्होंने कभी नमाज़ नहीं छोड़ी।''

मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग के पोतों में से एक, मिर्ज़ा राहील बेग कहते हैं, ''मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग मेरे दादा थे और मेरे बहुत अच्छे पथ-प्रदर्षक (गाइड) भी। मेरे बचपन से लेकर अपने जीवन की अंतिम साँस तक, मिर्ज़ा साहब मेरे लिए चिंतित रहे। उस समय मंदी का दौर था, इसलिए एमसीए की डिग्री प्राप्त करने के बाद भी मुझे कोई नौकरी नहीं मिल पा रही थी। मिर्ज़ा साहब ने मुझे हौसला दिया और मेरी बेरोज़गारी का समाधान निकालने के लिए काफ़ी मेहनत की। उन्होंने एनसीपीयूएल के निदेशक, डॉ. मुहम्मद हमीदुल्ला भट्ट से बात की और तब जाकर उनकी सिफारिश पर मुझे नौकरी मिली।

''उनकी बहुत सारी उपलब्धियाँ हैं, लेकिन उनमें से कोई भी उनके निजी हित से संबंध नहीं रखती। उन्होंने जो कुछ सोचा और किया, वह पूरी तरह निःस्वार्थ था और केवल समाज के ग़रीब वर्गों को समृद्ध बनाने के लिए था। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि अल्लाह की उन पर ख़ास मेहरबानी थी, जिसकी वजह से ही वह इतने बड़े-बड़े काम करने में सफल हुए। अल्लाह पर उनका विश्वास इतना

दृढ़ था कि उन्होंने जो भी काम शुरू किया, उसे पूरा करके ही दम लिया।

''आज़मगढ़ के लोगों के लिए वह एक मसीहा की तरह थे, जिन्होंने उनकी समस्याओं को हल करने में अपनी पूरी ताक़त लगा दी। वे जब भी उनके पास आते, वह उन्हें अपने घर में ठहराते, उनकी अच्छी मेहमान-नवाज़ी और देखभाल करते और वहाँ से चले जाने के लिए कभी नहीं कहते। यह उनका बड़कपन ही था कि अधिक आय न होने के बावजूद, वह अपने चेहरे पर किसी प्रकार की शिकन लाए बिना लोगों की सेवा करते रहते। मैं उनके व्यक्तित्व से काफ़ी प्रभावित हूँ। उनके कार्यों पर मुझे गर्व है और प्यार और स्नेह के लिए उनका कृतज्ञ हूँ।''

मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग के नाती, फ़रहान अल्वी कहते हैं, ''मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग मेरे नाना थे, जिन्होंने एक सफल जीवन व्यतीत करने के लिए मुझे काफ़ी प्रेरित किया। उनकी करुणा और शांत स्वभाव से मैंने बहुत कुछ सीखा और अपने जीवन को सही दिशा दी। आज मैं जो कुछ हूँ, उन्हीं के कारण हूँ। मेरे ऊपर उनका बहुत एहसान है।''

मिर्ज़ा मंसूर बेग के अनुसार, मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग ने सेवा पर सबसे अधिक ज़ोर दिया। वे आगे कहते हैं, ''लोग यह सोच कर ग़रीबों से मिलने से कतराते हैं कि वे उनके पीछे पड़ जाएंगे। लेकिन, मिर्ज़ा साहब का मामला बिल्कुल अलग था। किसी व्यथित की मदद करने से उनके चेहरे पर चमक आ जाती थी। इसके अलावा, वह अपने होम-टाउन के लोगों से बेपनाह प्यार करते थे। चूँकि हर तीसरे महीने आज़मगढ़ जाता हूँ, इसलिए मिर्ज़ा साहब वहाँ के हालात के बारे में जानने के लिए हमेशा मुझ पर भरोसा करते थे। एक बार वह बीमार पड़ गए, जिसके कारण उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। इस नाज़ुक हालत में भी वह शिबली इंटर कॉलेज में होने वाले चुनाव के परिणामों को जानने के लिए बेताब थे और उन्होंने मुझसे जानकारी हासिल करनी चाही। परिणाम आने में देर हुई और इसकी घोषणा देर रात में हुई। मैंने रात में उन्हें सूचना नहीं दी, यह सोच कर कि उनकी नींद में ख़लल पड़ेगा। लेकिन, अगले दिन सुबह सवेरे ही उनका फ़ोन आ गया। उन्होंने मुझे डाँट लगाई कि मैंने रात में ही उन्हें इस ख़बर से सूचित क्यों नहीं किया। वे परिणाम जानने के लिए इतना बेचैन थे कि

रात भर सो नहीं पाए। यह था आज़मगढ़ के प्रति उनका लगाव और प्यार।''

मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग के भतीजे डॉ. आतिफ़ बेग कहते हैं, ''मिर्ज़ा साहब हम सभी के लिए एक बड़े राहबर थे, जिन्होंने 'मानवता की सेवा' को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया था। उन्होंने हमें रिश्तों का महत्व बताया और यह सिखाया कि बेकार बातों पर हम अपना समय बर्बाद न करें। उन्होंने कभी भी किसी काम के बारे में यह नहीं सोचा कि यह बड़ा है या छोटा। उन्होंने हमें दूसरे इंसानों के साथ विनम्रता और सौहार्द अपनाने की हिदायत की।''

मिर्ज़ा फ़रीदु हसन बेग की भतीजी, निशात आरा ख़ुर्शीद अली कहती हैं, ''मुझे एक घटना बहुत अच्छी तरह याद है। मैं तीसरी कक्षा में पढ़ती थी। उस समय मैंने मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग को एक पत्र लिखा, जिसमें मैंने अपनी पढ़ाई के बारे में उन्हें बताया। उनके सहानुभूति भरे दिल ने ज़ोर मारा और कुछ दिनों के भीतर ही उन्होंने मुझे पढ़ने के लिए कई दिलचस्प किताबें भिजवा दीं। मुझे बड़ी हैरानी हुई, मेरे पास शब्द नहीं थे कि मैं उन्हें धन्यवाद कर पाऊँ। बाद के दिनों में वह मेरे संपर्क में रहे और मुझे प्रेरित करते रहे। वह मेरे बच्चों से भी बहुत प्यार करते थे और उन्हें भी शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। उन्होंने मेरे परिवार के प्रति जो प्यार और मोहब्बत का इज़हार किया, उसके लिए मैं उनकी तहे दिल से आभारी हूँ।''

मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग के निकट सहयोगी, डॉक्टर शकील अहमद बताते हैं, ''मिर्ज़ा साहब के जाने से एक बड़ा ख़ालीपन पैदा हो गया है। वह जब हमारे साथ थे, तो मैं अपनी सभी समस्याएं और चिंताएं उनके साथ साझा करने में कोई झिझक महसूस नहीं करता था, और वह बिना कोई देर किए मेरी मदद के लिए तुरंत तैयार हो जाते। उनका व्यक्तित्व और सुंदर बर्ताव ऐसा राहत भरा माहौल तैयार कर देता कि हम अपना दिल उनके सामने खोल कर रख देते थे। उन्होंने एक अच्छी नौकरी के लिए मुझे खाड़ी के देश भेजने में बड़ी भूमिका निभाई, जिससे मुझे काफ़ी मदद मिली। उन्होंने अपने पीछे अपने परिवार के सदस्यों की बहुत अच्छी टीम छोड़ी है। मुझे यक़ीन है कि वे सभी 'दूसरों की मदद करने' की उनकी विरासत को आगे बढ़ाएंगे। मैं अल्लाह से उनकी माफ़ी की प्रार्थना करता हूँ।''

पूर्व केंद्रीय मंत्री सलमान खुर्शीद के अनुसार, मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग अपने आप में एक संस्था थे। इंडिया इस्लामिक कल्चरल सेंटर में आयोजित मिर्ज़ा साहब की शोक सभा में सलमान खुर्शीद ने कहा था कि ''मैं जब भी अलीगढ़ आंदोलन का एक उदाहरण ढूँढता हूँ, तो मेरी नज़र मिर्ज़ा साहब पर जाकर ठहरती है, जिन्होंने जामिया मिलिया इस्लामिया से जुड़े अलग-अलग लोगों को एक मंच पर लाने का काम किया। उन्होंने हमें व्यावहारिक तौर पर यह सिखाया कि कैसे किसी संस्था की स्थापना की जाती है और फिर उसे सफलतापूर्वक कैसे चलाया जाता है। वह इस विषय पर मुझसे अक्सर बात किया करते थे कि कैसे अपने लोगों में सही जागरूकता पैदा की जाए, बेहतर भविष्य के लिए युवाओं को कैसे शिक्षित और सषक्त बनाया जाए।''

सलमान खुर्शीद ने कहा कि ''मेरे नाना डॉ. ज़ाकिर हुसैन की बरसी पर मुझसे सबसे पहले मिलने वाले व्यक्ति मिर्ज़ा साहब ही हुआ करते थे। यही नहीं, वह इमाम साहब के मिलने से पहले ही मेरे पास पहुँच जाया करते थे। उन्हें हमारी सही श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके द्वारा स्थापित संस्थाओं को अगली मंज़िल तक पहुँचा दें। मैं प्रार्थना करता हूँ कि अल्लाह उन्हें स्वर्ग में ऊँचा स्थान प्रदान करे। लेकिन, जैसा कि उनकी आदत थी, स्वर्ग में भी वह यही कहेंगे, 'चलो, यहाँ भी कुछ नया करते हैं।''

जामिया मिलिया इस्लामिया से जुड़े प्रोफ़ेसर अख़्तरुल वासे मिर्ज़ा साहब से अपने संबंधों के बारे में बताते हुए कहते हैं, ''अगर मुझे ठीक-ठीक याद है, तो मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग साहब से मेरी पहली मुलाक़ात 1980 में हुई थी। मैंने उन्हें समाज के पिछड़े, दबे-कुचले और ग़रीब वर्गों के कल्याण के लिए सदैव चिंतित पाया। मैं खुद को भाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे उनका अपार स्नेह और प्यार मिला। वह इस्लाम की इस शिक्षा का जीता जागता सबूत थे कि जब किसी को एक हाथ से कुछ दो, तो दूसरे हाथ को उसका पता न चले।''

राष्ट्रीय आयुक्त, भारतीय भाषाई अल्पसंख्यक आयोग और ज़ाकिर हुसैन इंस्टीट्यूट ऑफ इस्लामिक स्टडीज़ के पूर्व निदेषक, प्रोफ़ेसर अख़्तरुल वासे कहते हैं, ''वह एक धार्मिक व्यक्ति थे, लेकिन फिर भी कोई उनके धर्मनिरपेक्ष चरित्र पर प्रश्न चिन्ह नहीं लगा सकता। वह हमेशा सबको मिलाकर चलने में विश्वास

रखते थे। मेहमान-नवाज़ी में उनके परिवार का जवाब नहीं। उनकी पत्नी ने उनके सभी कामों में हमेशा हाथ बँटाया। एक औरत अपने पति के व्यक्तित्व में कैसे चार चाँद लगा सकती है, किसी को अगर यह देखना हो, तो वह मिर्ज़ा साहब के परिवार को देख सकता है।''

मिर्ज़ा साहब वास्तविक अर्थों में कौन थे, इस की व्याख्या करते हुए प्रोफ़ेसर अख़्तरुल वासे कहते हैं कि ''मैंने शिक्षाविद स्वर्गीय सैयद हामिद साहब के साथ एक बार अनजान शहीद का दौरा किया। मैं मिर्ज़ा साहब की विशिष्ट खूबियों और इंसानों की निस्वार्थ सेवा की वजह से उनका बड़ा प्रशंसक रहा हूँ। मिर्ज़ा साहब को जानने के लिए हमें उनके जीवन में 1971 के बाद घटित होने वाले हालात को देखना चाहिए। देश की आज़ादी के समय जो लोग पैदा हुए, 1971 में उनकी आयु 24 वर्ष की हो चुकी थी। मिर्ज़ा साहब ऐसे वक़्त सामने आए, जब लोग निष्पक्षता, सांप्रदायिक पूर्वाग्रह और असुरक्षा की भावना से जूझ रहे थे। ऐसे में उन्होंने लोगों के अंदर यह विश्वास जगाया कि अगर आपके अंदर साहस, समर्पण और दूरदर्शिता है, तो आप उसी शहर में ज़ाकिर बाग भी बना सकते हैं, जिस शहर में 1947-48 के दौरान मुस्लिम बस्तियों को उजाड़ दिया गया था। इसके अलावा भी, आप अपनी बिरादरी के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं।

''और वह यहीं पर नहीं रुके। एक क़दम आगे बढ़ते हुए, उन्होंने जामिया कोऑपरेटिव बैंक के द्वारा लोगों के सपनों को पूरा करने में भी उनकी मदद करनी शुरू कर दी। उन्होंने लोगों को अपना घर ख़रीदने और आर्थिक रूप से उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने में मदद की और साथ ही एक ऐसे क्षेत्र में अपना व्यवसाय शुरू करने के योग्य बना दिया, जिस क्षेत्र को वित्तीय संस्थाओं और बैंकिंग सेक्टर ने ब्लैकलिस्ट कर दिया था। उन्होंने लोगों को उनकी परेशानियों से बाहर निकाला। ये लोग आज समृद्ध हैं और गौरवपूर्ण जीवन बिता रहे हैं।'' जामिया कोऑपरेटिव बैंक की अधिकारी समरीन फ़ातिमा, जिन्हें मिर्ज़ा साहब के साथ काम करने का मौक़ा मिला, बताती हैं कि मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग का ज़ोर इस बात पर था कि लड़कियों को कैसे मज़बूत, शिक्षित और सशक्त बनाया जाए, और इसके लिए जहाँ कहीं भी अवसर मिला, उन्होंने उसका भरपूर इस्तेमाल किया।

बक़ौल समरीन फातिमा, ''हमारा बैंक केवल ग़रीब वर्ग के लिए है। यदि कोई ऐसा व्यक्ति यहाँ ऋण (लोन) लेने के लिए आता, जिसके पास सदस्यता फ़ॉर्म ख़रीदने के भी पैसे नहीं होते, तो मिर्ज़ा साहब खुद अपनी जेब से उसे पैसे दे दिया करते थे। एक बार मुझे मिर्ज़ा साहब डॉ. शबिस्ताँ ग़फ़्फ़ार, जस्टिस एम. एस. ए. सिद्दीक़ी आदि के साथ आज़मगढ़ जाने का मौक़ा मिला, जहाँ हमें फ्रेंडशिप-डे के एक पुरस्कार समारोह में भाग लेना था। इस यात्रा के दौरान मुझे पता चला कि मिर्ज़ा साहब कितने बड़े ज्ञानी थे। वह समय तो चला गया, लेकिन उन्होंने मुझे यह ज़रूर सिखा दिया कि यदि हमें कोई काम कल करना है, तो हमें उसे अभी कर लेना चाहिए, क्योंकि हो सकता है हमें कल को देखने का अवसर न मिले। और, अगर हम इस काम को अभी कर लेते हैं, तो वह काम पूरा भी हो जाएगा और हमें उसके लिए अगले दिन तक परेशान भी नहीं होना पड़ेगा। वह हमेशा यही कहा करते थे कि 'हरकत में बरकत' है।''

मिर्ज़ा साहब के व्यक्तित्व का एक और पहलू उजागर करते हुए कि असली मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग कौन थे, नई दुनिया के संपादक शाहिद सिद्दीक़ी बताते हैं कि ''वह मुझे और मेरे अख़बार, दोनों से प्यार करते थे। हमारे बीच बहुत दोस्ताना और आध्यात्मिक रिश्ता था। मेरी और बेग साहब की विचारधारा एक ही थी। चूँकि मेरा भी यही मानना है कि मुसलमानों को मुसलमानों के रूप में नहीं, बल्कि भारतीयों के रूप में, जीवन के हर क्षेत्र में अपने अंदर प्रतिस्पर्धा तथा विशेषज्ञता पैदा करनी चाहिए और अपनी क्षमताओं के आधार पर अपने अधिकार प्राप्त करने चाहिए। यदि आप प्रतिस्पर्धा के लिए पूरी तरह तैयार नहीं हैं, तो अपने अधिकार प्राप्त नहीं कर सकते। अपने अधिकार पाने के लिए आपको दूसरों पर बढ़त बनानी होगी।''

शाहिद सिद्दीक़ी ने बताया कि ''सांसद के रूप में, मैंने कई स्कूलों को फ़ंड दिए। इस दौरान मैंने देखा कि पैसे लेने के बाद ज़्यादातर लोग बेपरवाह हो गए। उनमें से किसी के पास न तो इस बात का कोई हिसाब-किताब था और न ही योजना कि इन फंड्स का इस्तेमाल कैसे किया जाए, लेकिन मिर्ज़ा साहब ने हमेशा गंभीरता दिखाई और लगातार मेरे संपर्क में रहे। जब कभी ज़रूरत हुई, वह मुझे काम की प्रगति और रफ़्तार के बारे में बताते रहे। मेरे द्वारा प्रदान की गई अधिकांश

राशि बिना किसी गलती के, शिक्षा पर खर्च की गई।''

रामेश्वर नाथ श्रीवास्तव के अनुसार, सहकारी आंदोलन में मिर्ज़ा साहब का विश्वास, उनकी गंभीरता, समर्पण और इच्छा-शक्ति उनकी सफलता के रहस्य थे। आर. एन. श्रीवास्तव आगे बताते हैं, ''मुझे याद है, एक दिन किसी ने मुझे बताया था कि मदन मोहन मालवीय के मन में जब बनारस हिंदू विश्वविद्यालय स्थापित करने का विचार आया, तो उन्होंने जी. डी. बिड़ला से कुछ मदद लेनी चाही। इसके लिए वह उनके घर मिलने के लिए गए। श्री बिड़ला से मिलने के लिए वह अपनी पारी का इंतज़ार कर रहे थे कि तभी उन्होंने देखा कि श्री बिड़ला अपने चार्टर्ड एकाउंटैंट से बहस कर रहे हैं कि क्यों एक छोटी सी राशि का हिसाब मेल नहीं खा रहा है। चार्टर्ड एकाउंटैंट इस राशि को नज़रअंदाज़ करना चाहता था, जबकि श्री बिड़ला लगातार उससे बहस करते रहे और अपने एकाउंटैंट को उन्होंने इस बात की अनुमति नहीं दी कि वह इतनी छोटी राशि को भी अंदेखा कर दे।

''यह देखकर मालवीय जी ने उनसे क्षमा चाही और वहाँ से उठकर वापस चल पड़े। उन्हें वहाँ से जाता हुआ देख, श्री बिड़ला ने आवाज़ लगाई और वापस आने को कहा। उन्होंने मालवीय जी से वापस जाने का कारण पूछा, तो उन्होंने जवाब दिया कि वह उनसे एक बड़ी राशि प्राप्त करने के लिए यहाँ आए थे, लेकिन जब यह देखा कि वह इतनी छोटी सी राशि के लिए बहस कर रहे हैं, तो सोचा कि वह गलत जगह आ गए हैं, जहाँ से उनकी उम्मीद पूरी नहीं हो सकती।

''श्री बिड़ला मालवीय जी की इस साफ़गोई से बेहद प्रभावित हुए और उन्होंने यह कहते हुए एक ख़ाली चेक उन्हें थमा दिया कि वह जितनी राशि चाहें, उस पर लिख लें। मेरे विचार से, मिर्ज़ा साहब भी इसी स्वभाव के थे। यही वजह थी कि लोग उन पर बहुत भरोसा करते थे और इसीलिए मिर्ज़ा साहब को ज़ाकिर बाग के अपने पहले प्रोजेक्ट में ही लोगों का ख़ासा विश्वास हासिल हो गया। इसी विश्वास के कारण, जब उन्होंने जामिया कोऑपरेटिव बैंक की नींव डाली, तो लोगों का एक बड़ा समूह उनका साथ देने के लिए आसानी से तैयार हो गया, वर्ना इतने बड़े काम को अंजाम दे पाना संभव नहीं था।''

मिर्ज़ा साहब के क़रीबी दोस्त रह चुके चैधरी रघुनाथ सिंह, उनके बारे में और बताते हैं कि ''डॉ. ज़ाकिर हुसैन के बाद, प्रोफ़ेसर मोहम्मद मुजीब जामिया मिलिया इस्लामिया के कुलपति बनाए गए। यह भी गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करने के प्रति उतने ही गंभीर थे, जितने कि डॉ. ज़ाकिर हुसैन। उनके कुलपति बनने के बाद मिर्ज़ा साहब ने राहत की साँस ली कि जामिया एक बार फिर सुरक्षित हाथों में है। मिर्ज़ा साहब जामिया से भावनात्मक रूप से इतने जुड़े हुए थे कि वह वहाँ पर एक मामूली सी गलती भी होते हुए नहीं देखना चाहते थे। वह नहीं चाहते थे कि विश्वविद्यालय में शिक्षा का सिलसिला कभी रुके, वर्ना युवा पीढ़ी का भविष्य अंधेरे में डूब जाएगा। पढ़ाई पूरी करने के बाद जब मैं एक कर्मचारी के रूप में दिल्ली प्रशासन में शामिल हो गया, तो वह भी मेरे साथ जुड़ गए। वह प्यार से कहा करते थे कि 'तुम जहाँ भी जाओगे, मैं तुम्हारा पीछा करता रहूँगा मेरे दोस्त'।

''जब साहिब सिंह वर्मा दिल्ली के मुख्यमंत्री बने, तो मैंने अपने घर पर एक कार्यक्रम रखा। मिर्ज़ा साहब भी आए और वहाँ पर भी उन्हें यही चिंता सताए जा रही थी कि कैसे पिछड़े लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाया जाए। एक बार जब डीडीए के लोग बटला हाउस में मकानों को गिराने के लिए आए, तो मिर्ज़ा साहब एक पल के लिए भी वहाँ से नहीं हटे। उन्होंने अपने सभी परिचितों को फ़ोन किया, आख़िरकार मकान गिराने वाली टीम को वहाँ से बैरंग वापस जाना पड़ा। ''एक अन्य अवसर पर, जब डॉ. ज़ाकिर साहब का निधन हुआ, तब खुर्शीद आलम ख़ान डिप्टी डायरेक्टर जनरल के पद पर आसीन थे। हम उनके पास गए और कहा कि ज़ाकिर साहब की बेगम हमारे बीच मौजूद हैं। उन्हें इंदिरा गांधी से मिलकर खुर्शीद आलम ख़ान को राज्यसभा का सदस्य बनाने का अनुरोध करना चाहिए। इस आइडिया ने काम किया और इस तरह श्रीमती गाँधी खुर्शीद आलम ख़ान को पहले राज्य सभा का सदस्य और फिर विदेश मंत्री बनाने को राज़ी हो गईं।''

चैधरी रघुनाथ सिंह आगे बताते हैं, ''मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग और मुझमें काफ़ी पटती थी। हम दोनों की सोच एक जैसी थी, जिसकी वजह से हमारा रिश्ता काफ़ी मज़बूत था। वह अक्सर मुझे दावत दिया करते और कहते कि ''अल्लाह देवे और बंदा खावे।''

यूनाइटेड प्रेशर कूकर ग्रूप के प्रबंध निदेषक, रहमान इलाही के अनुसार, दूसरों की मदद के लिए मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग के शब्दकोश में 'कल' शब्द था ही नहीं। मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग दूसरों की मदद के लिए चैबीसों घंटे तैयार रहते। एक बार अपने बच्चे के ऐडमिशन के लिए मैंने उनसे मदद माँगी। अभी मैं अपना वाक्य पूरा भी नहीं कर पाया था कि वह खड़े हो गए और बोले, चलिए अभी चल कर संबंधित व्यक्ति से मिलते हैं। उन्होंने इस मामले को इतनी गंभीरता से लिया, मानो यह उनका ही काम हो और जब तक काम पूरा नहीं हो गया, वह वहाँ से नहीं हटे।'' रहमान इलाही मिर्ज़ा साहब को बहुत क़रीब से जानते थे। वह मिर्ज़ा साहब के साथ मुसलमानों की समस्याओं पर बात करते हुए समय बिताते और इस बात पर विचार किया करते कि युवाओं को बेहतर भविष्य के लिए तैयार करने में उनके अंदर जागरूकता कैसे पैदा की जाए।

रहमान इलाही, जो कि सर्वोत्तम प्रौद्योगिकी संस्थान के अध्यक्ष और सर्वोत्तम इंटरनेशनल स्कूल और मयूर स्कूल, नोएडा के मैनेजमेंटी भी हैं, ने बताया कि ''मिर्ज़ा साहब जब ज़ाकिर बाग़ बना रहे थे, तब उनके विरोधियों ने इस बात की पूरी कोशिश कि निर्माण कार्य में हल्के मैटीरियल इस्तेमाल किए जाएं, लेकिन मिर्ज़ा साहब ने गुणवत्ता से कभी समझौता नहीं किया और सुंदर, सुविधाजनक और अच्छी प्रौद्योगिकी पर आधारित भवन-निर्माण का नमूना पेश किया। यह उनकी ईमानदारी, गंभीरता और समर्पण की पूरी कहानी बयान करता है।''

मिर्ज़ा साहब के बचपन के दोस्त, फ़ुर्क़ान हाशमी कुछ यादों का उल्लेख करते हुए बताते हैं कि ''दुनिया का सबसे बड़ा काम किसी की सोच को बदलना है। मैं मिर्ज़ा साहब को इसका सारा श्रेय देता हूँ कि उन्होंने मेरी सोच को नया रूप दिया, जिसने मेरे पूरे व्यक्तित्व को ही बदल कर रख दिया। दरअसल, उन्होंने मुझे जीने का असली कौशल सिखाया, जिससे मुझे गर्व के साथ जीवन व्यतीत करने में मदद मिली।''

मिर्ज़ा साहब का एहसान मानते हुए, फ़ुर्क़ान हाशमी उनके बारे में अपनी भावनाओं और अनुभवों का ज़िक्र करते हुए आगे बताते हैं कि ''बचपन में अपना समय मैंने उनके पड़ोस में बिताया, जहाँ मैं यह देखता था कि मिर्ज़ा साहब अक्सर सोशल वर्क के विभिन्न कार्यों में व्यस्त रहते। वे या तो नालियों को साफ़ कर

रहे होते, लोगों को उनके राशन कार्ड बनवाने में मदद कर रहे होते, उनके बिजली बिल, टेलीफोन बिल को ठीक करा रहे होते, किसी का स्कूल में दाख़िला करा रहे होते, या फिर बुज़ुर्गों और बेसहारा लोगों को अस्पताल पहुँचा रहे होते थे। सोशल वर्क के इन कार्यों ने मेरे मासूम मन पर यह असर डाला कि जीवन केवल अपनी पसंद का खाना खाने, अच्छा घर बनाने, लाभदायक व्यापार करने या फिर केवल इस तरह जीवन बिताने का नाम नहीं है कि आगामी कल नहीं आएगा, बल्कि दूसरों की देखभाल करने और आवश्यकताओं को पूरा करने में उनकी मदद करने का नाम जीवन है। मैं सोशल वर्क के बारे में ज़्यादा नहीं जानता था, लेकिन धीरे-धीरे यह समझने लगा था कि मिर्ज़ा साहब ने उस समय मेरे मन में 'मानवता की सेवा करने' के बीज बो दिये हैं।''

मिर्ज़ा साहब के भतीजे और कनाडा के पूर्व ट्रेड कमिश्नर, मिर्ज़ा फ़ैसल बेग ने मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का उल्लेख इन शब्दों में किया, ''जब मेरे बेटे ने गणित में सौ प्रतिशत नंबर प्राप्त कर बोर्ड परीक्षा में विशेष स्थान हासिल किया, तो मिर्ज़ा साहब काफ़ी ख़ुश हुए। वह मिठाई लेकर आए और सब को इस खुशी में शामिल किया। बच्चों के लिए उनके दिल में एक ख़ास जगह थी। वह सबको अपने परिवार का ही हिस्सा मानते थे। इलाज के लिए, शिक्षा के लिए या फिर नौकरी की खोज में जब भी कोई व्यक्ति उनके पास आता, वह हर संभव तरीक़े से उसकी मदद करते। होली फैमिली अस्पताल में जब मैं उनसे मिला, तो वह मुझसे आज़मगढ़ के शिबली कॉलेज में होने वाले चुनाव के बारे में बात करने लगे। मैंने उनके साथ 2-3 घंटे बिताए। वह चुनाव परिणाम के बारे में जानना चाहते थे। मैंने उनसे वादा किया कि परिणामों की घोषणा जैसे ही होगी, मैं उन तक सूचना पहुँचा दूंगा। उन्हें अपनी बीमारी की परवाह नहीं थी, बल्कि वह अपने वतन के लिए अधिक चिंतित थे।''

मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग के छोटे भाई मिर्ज़ा महफूज़ बेग ने बताया कि ''उनके दिमाग़ में बस यही धुन सवार थी कि जामिया कोऑपरेटिव बैंक का भविष्य क्या होगा। उन्होंने मुझसे कहा था कि बैंक का भविष्य पूरी तरह सुरक्षित होना चाहिए, जिसे सुनिश्चित करने के लिए सारे प्रबंध अच्छी तरह से किए जाने चाहिए, क्योंकि अगर जामिया बैंक नहीं होगा, तो लाखों ग़रीब और बेसहारा

लोगों का भविष्य ख़तरे में पड़ जाएगा।''

मिर्ज़ा साहब चुनौतियों से पीछे कभी नहीं हटे। तो क्या, उभरता हुआ सामाजिक तनाव और बढ़ती सांप्रदायिकता ने उनके मन पर कोई नकारात्मक प्रभाव डाला था? इसका जवाब देते हुए मिर्ज़ा फ़ैसल बेग बताते हैं कि ''सामाजिक सद्भावना को ख़राब करने वाली कुछ घटनाओं से वह काफ़ी परेशान हो गए थे। उन्होंने तेज़ी से फैलती हुई सांप्रदायिक नफ़रत को महसूस कर लिया था और कहा था कि हम सभी काफ़ी कठिन समय से गुज़र रहे हैं। वह इसके लिए काफ़ी चिंतित थे, इसीलिए उन्होंने समाज में सांप्रदायिक सद्भावना को बहाल करने की पूरी कोशिश की। वह गंगा-जमुनी संस्कृति के एक बड़े पैरोकार थे। इसी गंगा-जमुनी संस्कृति ने भारत को एक राष्ट्र के रूप में हमेशा अपना सिर ऊँचा रखने का अवसर प्रदान किया और इस देश की महान हस्तियों ने इस पर हमेशा गर्व महसूस किया।'' मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग को समझने के प्रयासों को जारी रखते हुए, हमने उनके वंशज को भी खोजने की कोशिश की, जो मुग़लों से जाकर मिलता है। यह ख़ानदानी सिलसिला दक्षिण-पूर्व एशिया, ख़ासकर अफ़ग़ानिस्तान, उज़्बेकिस्तान, ईरान और मंगोलिया तक फैला हुआ है। उनका संबंध उस महान मुग़ल ख़ानदान से था, जिसने अकबर और बाबर जैसे शक्तिशाली शासक दिए, जिन्होंने अपनी उदारता, न्याय और सामाजिक सद्भाव की बदौलत लोगों के दिलों पर राज किया।

मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग के तीन भाई थे। सबसे बड़े भाई का नाम मिर्ज़ा अहसानुल्ला बेग था, जो एक शिक्षाविद थे और जिन्होंने शिक्षा के ज़रिए 'मानवता की सेवा' का सिद्धांत अपनाया। उन्होंने लोगों को जागरूक करने और अपनी क्षमतानुसार ज़रूरतमंदों की मदद करने के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। उनके बच्चों के नाम इस प्रकार हैं: मिर्ज़ा आसिफ़ बेग, मिर्ज़ा आरिफ़ बेग, मिर्ज़ा अनवर बेग, राहत बेग, तसनीम बेग और ज़रीना बेग। मिर्ज़ा अहसानुल्ला बेग के बाद दूसरे भाई थे मिर्ज़ा सदरुद्दीन बेग, जिन्होंने दारुल उलूम नदवतुल उलेमा, लखनऊ से इस्लामी शिक्षा प्राप्त की और मौलाना आज़ाद इंटर कॉलेज में मानद शिक्षक की सेवा देने के बाद धार्मिक जीवन व्यतीत किया। उनके वारिसों में चार बेटे - मिर्ज़ा मोबीन बेग, मिर्ज़ा जमाल बेग, मिर्ज़ा इरशाद

बेग, मिर्ज़ा नौशाद बेग और एक बेटी, शाहीन बेग शामिल हैं। तीसरे भाई मिर्ज़ा बदरुद्दीन बेग थे, जिनका नौजवानी में ही निधन हो गया। वे रिश्तों का आदर करने और उन्हें मज़बूत बनाने पर बहुत ज़ोर देते थे। वह अपने रिश्तेदारों से इतना प्रेम करते थे कि उनके पास अनाज या इस प्रकार की जितनी भी खाद्य सामग्रियाँ होतीं, वह उन्हें अपने रिश्तेदारों को देने में खुशी महसूस करते थे। उनके बच्चों के नाम हैं - मिर्ज़ा ज़ियाउद्दीन बेग, फ़रहत बेग, शफ़क़त बेग, इफ़्फ़त बेग और तलत बेग।

मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग

बचपन

बचपन में मिट्ठू गंभीर, दयालु, मददगार, मेल-मिलाप और सोच-विचार करने वाले इंसान थे। जीवन के शुरुआती दिनों से ही उन्होंने अपने संपर्क में आने वाले ऐसे किसी भी व्यक्ति से मुँह नहीं मोड़ा, जो व्यथित और पीड़ित हो। दर्द में डूबे हुए उस आदमी के चेहरे पर जब तक वह मुस्कान नहीं बिखेर देते, तब तक चैन से नहीं बैठते थे।

प्राइमरी स्कूल की पढ़ाई के दौरान, एक दिन में जबतक वह 10 लोगों की सहायता नहीं कर देते, तब तक परेशान रहते थे। लोगों की मदद करने से उन्हें मानसिक शांति मिलती थी। वे सांप्रदायिक झगड़े के ख़िलाफ थे। मोहनदास करमचंद गाँधी की तरह उन्होंने भी अनुसूचित जाति से जुड़े लोगों को ऊपर उठाने की जी तोड़ कोशिश की। वह छुआ-छूत और जाति के आधार पर भेद-भाव के पूरी तरह ख़िलाफ थे।

आज़मगढ़ के रसूलपुर गाँव के हाजी मोहम्मद अमीन कहते हैं कि मिट्ठू सामाजिक

सेवा से संबंधित अपनी प्यास बुझाने के लिए अक्सर उनके पास आया करते थे। मिट्ठू के मामा हाजी मोहम्मद अमीन, जो अब 100 साल से भी अधिक उम्र के हो चुके हैं, ने बताया कि ''उनकी नज़र में मानवीय रिश्ते सबसे महत्वपूर्ण थे। वह बड़ों का बहुत सम्मान करते थे। मेरी उनसे वह मुलाक़ात अच्छी तरह याद है, जब वह स्कूल में पढ़ा करते थे। मैं एक बार बीमार पड़ा। उनके पास यह ख़बर देर रात में पहुँची। उन्होंने बड़ी साहस का प्रदर्शन किया और तमाम दिक़्क़तों के बावजूद वह उसी रात मेरे पास पहुँच गए। जब उन्होंने मेरे स्वास्थ्य के बारे में सारी जानकारी ले ली और उन्हें यह मालूम हो गया कि चिंता की कोई बात नहीं है, तब जाकर वह संतुष्ट हुए। इसके अलावा, उन्हें जब कभी भी मौक़ा मिलता, वह ख़ुद मिलने के लिए मेरे पास पहुँच जाते। लोगों से तपाक से मिलना उनकी आदत का एक हिस्सा था।''

मुहमदाबाद, मऊ के शेख़ सल्लू पांडे मिट्ठू के भांजे हैं। अपने मामा के साथ उनकी बहुत बनती थी। मामा-भांजा का ये रिश्ता काफ़ी मज़ेदार था। उन्होंने अपनी एक शरारत का ज़िक्र करते हुए बताया कि ''एक बार मिट्ठू मामा मेरे घर आए। यह महज़ एक संयोग था कि उसी दिन मेरे फूफा, जो कि दैवीय शक्तियों में विश्वास नहीं रखते थे, वह भी मेरे घर आए हुए थे। वह बड़े घमंड से कहा करते थे कि वह किसी चीज़ से भी नहीं डरते और दैवीय शक्तियों पर विश्वास रखने वाले हम जैसे लोगों का मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

''संयोग से, शाम के समय फूफाजी का पेट ख़राब हो गया और उन्होंने खुले मैदान में शौच जाने का फैसला किया। हमने उन्हें सलाह दी कि वे अंधेरे में बाहर न जाएं, लेकिन उन्होंने हमें डाँट दिया। उन्होंने पानी से भरा एक लोटा लिया और शौच के लिए दूर खेतों की तरफ निकल गए, जहाँ एक बहुत पुराना महुआ का पेड़ हुआ करता था, जिसके बारे में लोगों का मानना था कि इस पेड़ पर भूत रहते हैं।

''भूत वाले पेड़ों से संबंधित अजीबो-ग़रीब घटनाओं के बारे में उन्होंने सुन रखा था, लेकिन इसके बावजूद हम लोगों को झूठा साबित करने के लिए वह उस तरफ़ निकल पड़े। यह देखकर मिट्ठू मामा को शरारत सूझी और उन्होंने मुझसे कहा कि मैं कहीं से बड़े आकार के दो सफेद चादर लाऊँ, साथ ही

उन्होंने सुई-धागा भी लाने के लिए कहा। मैंने इन चीजों का इंतेज़ाम तुरंत कर दिया। उन्होंने चादरों को सिल कर एक सफेद ऐपरन बना दिया। हमारे पास तीन जर्मन शेफर्ड कुत्ते थे। हमने उन्हें भी अपने साथ ले लिया।

''मामा ने मुझे अपने कंधों पर खड़ा करके वह ऐपरन पहन लिया, यानी अब हम दोनों ही उस ऐपरन के अंदर थे। अब हम दोनों ने आगे की ओर चलना शुरू किया, जिससे ऐसा लगने लगा कि वास्तव में कोई बहुत बड़ी चीज़ अजीबो-गरीब ढंग से चल रही है। इसके साथ ही हमने डरावनी आवाजें भी निकालनी शुरू कर दीं।

'हम जैसे ही फूफा जी की तरफ बढ़े, कुत्तों ने भौंकना शुरू कर दिया। यह दृष्य इतना भयानक हो गया कि फूफा जी डर के मारे शौच के दौरान बीच में ही उठ कर भाग खड़े हुए। डर और भय के कारण उनकी हवाइयाँ उड़ी हुई थीं, पूरा शरीर काँप रहा था, साँसें फूली हुई थीं। घर वापस भागते हुए वह बीच में कई बार गिरे भी। भय का आलम यह था कि वह अगले कई दिनों तक बुरी तरह काँपते रहे।

मिर्जा महफूज बेग बताते हैं कि बचपन में कबड्डी खेलना और गीदड़ को दौड़ाना, उनके दो प्रिय खेल थे। मिट्ठू के चचेरे भाई और करीबी साथी, महफूज बेग और विवरण देते हुए कहते हैं कि ह्यस्कूल से लौटने के बाद मिट्ठू, चार अन्य लोगों के साथ किसी गीदड़ की खोज में निकल पड़ते और जब वह जानवर मिल जाता, तो उसे इतना दौड़ाते कि वह थक जाता, फिर ये लोग उसे पकड़ लेते।

मिर्जा फरीदुल हसन बेग (सबसे बायें) जामिया के अपने मित्रों के साथ

पारंपरिक शिक्षा

प्राथमिक शिक्षा दिलवाने के लिए मिट्ठू का प्रवेश अनजान शहीद, आजमगढ़ के मदरसा इस्लामिया पाठशाला में करा दिया गया। यहाँ से पास होने के बाद उन्होंने मालटारी, आजमगढ़ के गांधी हाई स्कूल में ऐडमिशन ले लिया।

गांधी हाई स्कूल मिट्ठू के बड़े भाई मिर्जा अहसानुल्ला बेग के दिमाग की उपज था, जिन्होंने स्कूल के निर्माण के लिए आवष्यक उपकरणों की व्यवस्था करने से लेकर उसका ढाँचा तैयार करने तक में पूरा सहयोग दिया।

गांधी हाई स्कूल, मालटारी से मैट्रिक पास करने के बाद, मिट्ठू आजमगढ़ के शिबली इंटर कॉलेज पहुँचे, जहाँ से उन्होंने बारहवीं कक्षा तक की पढ़ाई पूरी की।

एक दिन शिबली इंटर कॉलेज के शिक्षकों ने छात्रों को एक डॉक्यूमेंटरी दिखाने का प्रबंध किया। ह्यभारत में अल्पसंख्यक नाम की इस डॉक्यूमेंटरी में डॉक्टर

जाकिर हुसैन के व्यक्तित्व, अल्पसंख्यकों के प्रति उनका ष्टिकोण और मुसलमानों के विकास में शिक्षा की भूमिका को बेहतर ढंग से दिखाया गया।

डॉक्यूमेंटरी देखने के बाद मिट्ठू डॉ। जाकिर हुसैन से मिलने को बेचैन हो उठे और हर गुजरते दिन के साथ उनकी इस चिंता में लगातार वृद्धि होती रही।

मिट्ठू जिस साल आजमगढ़ के शिबली कॉलेज में अपनी पढ़ाई पूरी करने वाले थे, उन्हीं दिनों अपने बड़े भाई मिर्जा अहसानुल्ला बेग को उन्होंने बताया कि वह डॉ। जाकिर हुसैन से मिलना चाहते हैं। उन्होंने भाई से अनुरोध किया कि वे उन्हें दिल्ली भेजने की व्यवस्था करें।

मिर्जा अहसानुल्ला बेग को अपने छोटे भाई की इस बड़ी इच्छा को समझने में ज्यादा देर नहीं लगी, क्योंकि वह खुद भी एक सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षाविद और मानवता से सहानुभूति रखने वाले व्यक्ति थे। मिट्ठू को दिल्ली भेजने के लिए उन्होंने सारे प्रबंध किए। यही नहीं, मिट्ठू का प्रवेश जामिया मिलिया इस्लामिया में आसानी से हो जाए, इसके लिए उन्होंने उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री सी। बी। गुप्ता से जामिया के कुलपति प्रोफेसर मोहम्मद मुजीब के नाम एक पत्र भी लिखवाया।

दिल्ली आने से पहले ही मिट्ठू ने उन सभी महान हस्तियों के बारे में विस्तार से पढ़ लिया था, जिन्होंने अपना जीवन गरीबों के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया। डॉ। जाकिर हुसैन के अलावा, जिस दूसरे व्यक्ति ने मिट्ठू के दिमाग और दिल पर गहरा असर डाला, वह पंडित जवाहर लाल नेहरू थे, जिन्होंने सहकारी आंदोलन पर सबसे अधिक जोर दिया और जो संयुक्त प्रयासों के द्वारा देश को मजबूत बनाने और साम्यवाद के सिद्धांत के आधार पर समाज में क्रांति लाने के लिए जीवन भर संघर्ष करते रहे।

जामिया मिट्ठू की शिक्षा के लिए अच्छी जगह साबित हुआ। शिक्षकों, सहपाठियों और दोस्तों के साथ गहरे संबंध और बतौर एक शहर, दिल्ली ने उन्हें जो अवसर प्रदान किए, उनकी मदद से मिट्ठू ने अपने जीवन की कार्यनीति तैयार की। जल्द ही वह मिट्ठू से मिर्जा फरीदुल हसन बेग बनकर अपने सपनों को पूरा करने के लिए मैदान में कूद पड़े।

वरिष्ठ राजनीतिज्ञ, सामाजिक कार्यकर्ता और कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय सचिव अतुल कुमार अंजान के अनुसार, मिर्जा फरीदुल हसन बेग ज्ञान की खोज में दिल्ली गए और उसी शहर को अपनी कार्यस्थली बना लिया। वह आगे बताते हैं, ह्यजामिया से पढ़ाई करने का उद्देष्य केवल आजीविका कमाना ही नहीं था, बल्कि आधुनिक परंपराओं और प्रगतिशील विचारों से परिचित होना भी था, जिसके लिए डॉक्टर जाकिर हुसैन ने जामिया को ज्ञान का आधुनिक केंद्र बनाने में महत्तवपूर्ण भूमिका निभाई थी।,

झारखंडे राय, जिन्होंने 1967, 1971 और 1980 के चुनावों में जीत हासिल करने के बाद क्रमशरू चैथे, पाँचवें और सातवें लोकसभा में घोसी के श्रमिक मजदूरों का प्रतिनिधित्व किया, उनके उत्तराधिकारी के रूप में 2014 का लोकसभा चुनाव लड़ने वाले अतुल कुमार अंजान बताते हैं कि ह्यइस विख्यात विष्वविद्यालय में बेग साहब ने न केवल अध्ययन किया, बल्कि गांधी जी और डॉ। जाकिर हुसैन के दर्शनों, विचारों को वास्तविक रूप भी प्रदान किया।,

मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग

जीवन के उद्देश्यों की खोज

बचपन में मिट्ठू अक्सर अपनी माँ को गरीबों और अनाथों की मदद करते हुए देखा करते। वह जाति, धर्म और संप्रदाय की सभी दीवारों को तोड़ते हुए अपने आसपास के दर्जन भर अनाथ बच्चों को खुद अपना दूध पिलाया करती थीं। इन बच्चों का संबंध मुख्य रूप से दलित परिवारों से था, जिनके माता-पिता संक्रामक रोग (महामारी) फैलने के कारण अपनी जान नहीं बचा पाए और अपने पीछे इन बच्चों को रोता-बिलखता छोड़ गए।

मिर्जा फरीदुल हसन बेग अपने पिता को भी जरूरतमंदों की मदद करते हुए देखा करते, जो गरीबों की स्थिति सुधारने के लिए हमेशा जी तोड़ मेहनत करते।

बचपन में माता-पिता के इन कारनामों का प्रभाव मिट्ठू पर इतना हुआ कि वह खुद जीवन भर गरीबों के लिए बेचैन रहे। वह हमेशा इसी सोच में डूबे रहते कि कैसे समाज के दबे-कुचले और गरीबी की मार झेल रहे लोगों को समृद्ध बनाया

जाए, उन्हें सिर उठाकर जीना सिखाया जाए।

दिल्ली आने से पहले ही मिट्ठू ने उन सभी लोगों के बारे में विस्तार से पढ़ लिया था, जो जीवन भर गरीबों के लिए काम करते रहे। डॉ। जाकिर हुसैन के अलावा, जिस दूसरे व्यक्ति ने मिट्ठू के दिमाग और दिल पर गहरा प्रभाव डाला, वह पंडित जवाहर लाल नेहरू थे, जिन्होंने सहकारी आंदोलन पर सबसे अधिक जोर दिया और जो संयुक्त प्रयासों के द्वारा देश को मजबूत बनाने और साम्यवाद के सिद्धांत के आधार पर समाज में क्रांति लाने के लिए जीवन भर संघर्श करते रहे।

इन लोगों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के बाद वे इसी निश्कर्श पर पहुँचे कि समाज में क्रांति लाने के केवल दो ही तरीके हैं। पहला, अच्छे कामों में एक दूसरे का साथ दिया जाए, जिसकी वकालत पंडित जवाहर लाल नेहरू करते थे। दूसरा, डॉ। जाकिर हुसैन ने जो तरीका अपनाया था कि शिक्षा, वित्तीय सहायता और सामाजिक कार्यों के माध्यम से गरीबों को उनके पैरों पर खड़ा किया जाये।

उन्होंने सहकारी-आंदोलन और सोशल-वर्क का अधिक गहराई से अध्ययन किया। एक ओर जहाँ वह इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि गरीबों को उनके पैरों पर खड़ा करने के लिए उन्हें एक वित्तीय संस्था की जरूरत है, वहीं उन्हें बड़े दिल वाले ऐसे लोगों की भी तलाश थी, जो गरीब व्यक्तियों, परिवारों, समूहों और समुदायों को व्यक्तिगत और समग्र रूप से समृद्ध बनाने में उनकी मदद कर सकें।

उन्होंने इस पर भी विचार करना शुरू किया कि मूल रूप से इस बात की कोशिश होनी चाहिए कि कैसे लोगों को कुशल और योग्य बनाया जाए कि वह अपनी समस्याओं को हल करने के लिए खुद अपने संसाधनों का उपयोग करें। मिट्ठू 1958 में दिल्ली आये। यहाँ आकर उन्होंने जामिया मिलिया इस्लामिया में दाखिला लिया और ह्यसोशल-वर्क, की पढ़ाई शुरू कर दी।

उन्हीं दिनों उनकी नजर एक किताब पर पड़ी, जिसमें इतिहास की 100 प्रमुख हस्तियों का जिक्र किया गया था। किताब का नाम था ह्यजेम 100रू । त्ंदापदह वि जीम डवेज प्दसिनमदजपंस च्मतेवदे पद भ्पेजवतल,। यह किताब अमेरिकी

एस्ट्रो फिजिशिस्ट, माइकल एच हर्ट के द्वारा लिखी गई है।

पहले संस्करण में इस किताब की पाँच लाख प्रतियां छपीं और दुनिया की 15 भाशाओं में इसका अनुवाद प्रकाशित हुआ। माइकल हर्ट ने इस किताब में पैगंबर मोहम्मद को 100 लोगों की सूची में शीर्श पर रखा है और उन्हें जीसस और हजरत मूसा से भी उच्च स्थान दिया है।

इसकी वजह बताते हुए हर्ट ने लिखा है कि पैगंबर मोहम्मद धर्म और ध

ार्मनिरपेक्षता, दोनों क्षेत्रों में ह्यसबसे सफल, रहे। उसने पैगंबर मोहम्मद के इस

रोल की भी सराहना की है कि आपने आस्था की मजबूती में अच्छे आचरण के महत्व पर सबसे अधिक जोर दिया है।

इस पुस्तक के अध्ययन के बाद मिर्जा फरीदुल हसन बेग को जो भी बुद्धि और विवेक हासिल हुआ, उसने उनके मन पर स्थायी प्रभाव डाला। उनके रोजमर्रा के व्यवहार में एक बड़ा परिवर्तन आया और वह पहले से कहीं अधिक हमदर्द और दयालु बन गए। यह इस बात की दलील है कि मिर्जा फरीदुल हसन बेग की समझ पूरी तरह इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार थी, जिसका नमूना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने जीवन में खुद दूसरों के साथ अच्छे आचरण द्वारा पेश कर चुके थे।

अल्लाह को खुश करने के लिए जब नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी इबादतों का सिलसिला दराज कर दिया, तो अल्लाह ने उन्हें आदेश दिया कि वह इबादत में संयम अपनायें। इसी तरह, जब अल्लाह की राह में सब कुछ कुर्बान कर देने का मामला आया और आपने घर में पड़ा सारा माल दान कर दिया, तब भी अल्लाह ने उन्हें आदेश दिया कि दान करते समय उदारवादी रवैया अपनायें।

इस सिलसिले को आगे जारी रखते हुए और अल्लाह को खुश करने के लिए जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह की राह में अपना सारा माल लुटा दिया और यातनाएं सहनीं शुरू कर दीं, तो एक बार फिर उन्हें यथार्थवादी रवैया अपनाने का आदेश दिया गया। लेकिन, जब उन्होंने दूसरे इंसानों के साथ नैतिकता और अच्छे बर्ताव का उच्च नमूना पेश किया, तो अल्लाह ने न केवल

उनकी प्रशंसा की, बल्कि उन्हें इस पर बधाई भी दी। अब मिर्जा फरीदुल हसन बेग को यह बात अच्छी तरह समझ आ गई थी कि खुदा और उसके बंदे, दोनों की नजर में एक सफल जीवन व्यतीत करने के लिए दो अति महत्वपूर्ण और बुनियादी चीजें यही हैं कि मनुश्यों की सेवा और सभी के साथ अच्छा व्यवहार किया जाये।

इसीलिए अल्लाह में दृढ़ विष्वास और लोगों के साथ अच्छा व्यवहार, उनके जीवन के दो मार्गदर्शक सिद्धांत बन गए। इस रास्ते में उनके सामने कई बार बाधाएं और परेशानियां आईं, लेकिन वे अपनी जगह मजबूती से कायम रहे और हर मुष्किल काम में अल्लाह ने उनकी सहायता की।

मिर्जा फरीदुल हसन बेग (पहली पंक्ति में सबसे दायें) और प्रो। मोहम्मद मुजीब
प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के साथ

सर्वप्रथम राष्ट्र

वर्श 1935 में, जब अल्लाह ने इस धरती पर विशेश मिशन के साथ एक आदमी को भेजा और उसे दूसरे इंसानों की मदद करने और उन्हें तकलीफों और परेशानियों से निजात दिलाने के लिए एक हमदर्द दिल और हिम्मत व साहस प्रदान किया, तो इसके साथ ही उसने उनके अंदर देशभक्ति का भरपूर जज्बा भी पैदा किया। उस आदमी का नाम मिर्जा फरीदुल हसन बेग था, जिसे प्यार से लोग ह्यमिट्ठू, कहकर पुकारते। बचपन में वह देश के प्रति जिस मोहब्बत और प्यार का इजहार करते हैं और जिस प्रकार के कारनामे अंजाम देते, उसे देखकर उनके सभी सगे-संबंधी चकित रह जाते। उनके पिता मिर्जा रजा बेग के अंदर भी देशभक्ति का जज्बा कूट-कूट कर भरा हुआ था, और उन लोगों के लिए एक सबक था, जो अपने देश की रक्षा के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार रहते हैं। वह राश्ट्रीय नेताओं, स्वतंत्रता सेनानियों और उन सभी का बेहद आदर करते थे, जिन्होंने अपने हर काम में देश को प्राथमिकता दी।

उनके घर की एक और शांत सदस्य, उनकी माँ थीं, जो न केवल गरीबों के

लिए एक बड़ा हृदय रखती थीं, बल्कि उन्होंने अपने बेटे को भारत के उन सभी बड़े लीडरों की कहानियां भी सुना रखी थीं, जिन्होंने प्यारे वतन के हितों की रक्षा के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

चूँकि पिता का साया उनके सिर से तभी उठ गया था, जब मिर्जा फरीदुल हसन बेग केवल छह साल के थे, इसलिए पिता के बाद उनकी शिक्षा-दीक्षा की जिम्मेदारी बड़े भाई मिर्जा अहसानुल्ला बेग के सिर आई। मिर्जा अहसानुल्ला बेग एक शिक्षा-विद, राष्ट्रवादी और अहिंसा के पुजारी थे। महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सुभाश चंद्र बोस, अशफाकुल्ला खान, मौलाना अबुल कलाम आजाद, सर सैय्यद अहमद खान और बदरुद्दीन तैयब जी आदि उनके आयडियल नेता थे। खुद मिर्जा अहसानुल्ला बेग भी एक स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने दूसरे राश्ट्रवादी नेताओं के साथ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था।

भारतीय राश्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) ने 1985 में अपने शताब्दी समारोह के अवसर पर मिर्जा फरीदुल हसन बेग को आमंत्रित करने का फैसला किया, ताकि उन्हें सम्मानित किया जाये, क्योंकि आजमगढ़ क्षेत्र में पार्टी कैडर को मजबूत करने और लोगों को कांग्रेस में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

मुंबई में शताब्दी समारोह आयोजित होने से पहले प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की नजर अपनी माँ श्रीमती इंदिरा गांधी की व्यक्तिगत डायरी पर पड़ी, जिस पर मिर्जा अहसानुल्ला बेग का नाम लिखा हुआ था। उनका नाम कांग्रेस के शुभचिंतकों की सूची में शामिल था, जिन्होंने पार्टी की निस्वार्थ सेवा की, गांधीवादी विचारधारा को अपनाया और देश को सदैव सर्वोपरि रखा। श्री राजीव गांधी के अंदर मिर्जा अहसानुल्ला बेग के बारे में और अधिक जानने की जिज्ञासा पैदा हुई तथा उन्हें पता चला कि मिर्जा अहसानुल्ला बेग ने कांग्रेस पार्टी को आगे बढ़ाने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उनकी उपलब्धियों और सेवाओं को स्वीकार करने के अलावा, कांग्रेस पार्टी ने मिर्जा अहसानुल्ला बेग को 1970-71 में आजमगढ़ के जिला बोर्ड का चेयरमैन बना दिया। मिर्जा अहसानुल्ला बेग चूँकि शिक्षा द्वारा आजमगढ़ क्षेत्र के विकास के लिए एक व्यापक रूपरेखा अपने मन में रखते थे, इसलिए बहुत कम समय में

ही उन्होंने वहाँ के अल्पसंख्यकों के बीच शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देष्य से 70 प्राथमिक स्कूल स्थापित किए। उनका निधन 1986 में हुआ, लेकिन समाज के कमजोर और गरीब वर्ग से जुड़े लोग आज भी उनकी उपलब्धियों को याद करके उनकी प्रशंसा करते हैं। आज, जब कि उनके निधन को 29 साल बीत चुके हैं, फिर भी लोग मिर्जा अहसानुल्ला बेग को याद करते हैं, जिन्होंने आजमगढ़ क्षेत्र के विकास के लिए काम किया और पिछड़े लोगों, खासकर अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों को ऊँचा उठाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

एक जिज्ञासु छात्र और गहरे पर्यवेक्षक के रूप में, मिर्जा फरीदुल हसन बेग ने अपने परिजनों से कई चीजें सीखीं और मातृभूमि के प्रति गहरा लगाव और त्याग व बलिदान की भावना अपने अंदर पैदा की। मोहनदास करमचंद गांधी के अहिंसा के सिद्धांत से वह बहुत प्रभावित थे और जब कभी उनके सामने यह चुनौती आई कि देश और स्वार्थ में से किसे चुना जाए, तो उन्होंने देशी हितों को ही बाकी चीजों पर प्राथमिकता दी। गांधीवादी होने के कारण वह जीवन भर शांति के सिद्धांत पर कायम रहे और देश के हित को सबसे ऊपर रखा। राश्ट्रीय त्योहारों के अवसर पर तिरंगा फहराना उनका प्रिय शगल था। देश के सम्मान और गरिमा की निशानी के तौर पर वह खादी कुर्ता-पायजामा और नेहरू टोपी पहना करते थे।

अतुल कुमार अंजान के अनुसार, मिर्जा साहब गांधीवादी दर्शन के असली प्रतिनिधि थे। सीपीआई (एम) के राश्ट्रीय सचिव अतुल कुमार अंजान बताते हैं कि ह्यअगर इस देश के नागरिकों में से किसी ने भारतीय संविधान का सख़्ती से पालन किया है, तो मेरे विचार से मिर्जा फरीदुल हसन बेग उसकी अनोखी मिसाल हैं, जिन्होंने अपने पूरा जीवन संविधान के अनुसार बिताया। उन्होंने एक भारतीय और एक सच्चे मुसलमान की मिसाल पेश की। उनका दिल प्यार, मोहब्बत, बलिदान और देशभक्ति की भावना से भरा हुआ था।,

नई दुनिया के संपादक शाहिद सिद्दीकी एक घटना का जिक्र करते हुए कहते हैं कि ह्यएक बार मिर्जा साहब नई दुनिया अखबार में जामिया से संबंधित कुछ छपवाने के लिए मेरे कार्यालय तशरीफ लाए। पहली नजर में ही वह पूरी तरह एक धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति दिखे। उनके अंदर तनिक भी ऐसी कोई बात नहीं थी, जिसे देखकर यह लगता हो कि वे भारतीय नहीं हैं। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ

कि आप अगर हिंदुत्व के एक कट्टर अनुयायी से मिलें और उसे कई सुविधाओं का हवाला देते हुए उसे अमेरिका में बस जाने का विकल्प प्रस्तुत करें, तो वह तुरंत हामी भर लेगा और देश छोड़ कर वहाँ चला जाएगा। लेकिन, मिर्जा साहब ने न तो खुद पाकिस्तान जाने का इरादा किया और न ही कभी अपने बच्चों को अमेरिका में बसाने का, हालाँकि यदि वे चाहते तो बड़ी आसानी से यह काम कर सकते थे। वह अपने बच्चों को भारत में ही रखना चाहते थे, ताकि वह पूरे जोश और लगन से अपने देश की सेवा कर सकें।,

उन्होंने आगे बताया कि ह्यदिल से वह एक भारतीय थे और चरित्र से एक धर्मनिरपेक्ष इंसान। मैंने उनके मुँह से किसी धर्म या पंथ के खिलाफ कभी एक शब्द भी नहीं सुना। वह हर किसी की मदद करना चाहता था, चाहे वह मुस्लिम हो या फिर किसी और धर्म का मानने वाला। वे चाहते थे कि हर कोई एक सम्मानजनक जीवन बिताये और इसके लिए वह हर सहायता करने को हमेशा तैयार रहते। वह सही मायने में एक मानवीय व्यक्ति थे।

राश्ट्रीय आयोग, अल्पसंख्यक शैक्षिक संस्थान, भारत सरकार के पूर्व चेयरमैन, जस्टिस एम। एस। ए। सिद्दीकी के मुताबिक, भारतीय न्यायपालिका में मिर्जा साहब का भरोसा और देश से प्यार ने जामिया मिलिया इस्लामिया मामले में मजबूत फैसला सुनाने में उनकी मदद की। जस्टिस सिद्दीकी बताते हैं कि ह्यमुझे लालच दी गई कि अगर मैं जामिया मिलिया इस्लामिया के खीलाफ फैसला सुनाऊँ और इसे अल्पसंख्यक संस्था होने का दर्जा न दूँ, तो सेवानिवृत्ति के बाद मुझे कोई बड़ा पद सौंपा जाएगा, राज्यसभा की सीट दी जाएगी और इसके अलावा अधिक सुविधाएं भी मुझे प्रदान की जाएंगी। यह प्रस्ताव सत्तारूढ़ दल के एक वरिश्ठ नेता की ओर से मेरे पास आया। उसी जमाने में मिर्जा साहब मेरे पास आए और मुझसे सही फैसला सुनाने का अनुरोध किया। मैंने उनसे कहा कि अपने पूरे कार्यकाल के दौरान अपने पेशे के प्रति ईमानदार और सच्चाई के रास्ते पर चलने वाला व्यक्ति रहा हूँ। अगर हालात जामिया के पक्ष में हैं, तो मैं उसे अल्पसंख्यक संस्था होने का फैसला सुनाने में जरा भी डगमगाऊँगा नहीं। मैंने अपने दिल की बात सुनी और केस के मेरिट को ध्यान में रखते हुए जामिया मिलिया इस्लामिया को अल्पसंख्यक संस्था घोशित कर दिया।

सहकारी आंदोलनः एक परिचय

1947 में अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति के बाद से ही भारत में सहकारी सोसायटी को काफी बढ़ावा मिला है, खासकर इसने कृशि क्षेत्र में बड़े पैमाने पर मदद की है।

उदाहरण के लिए, भारत में चीनी बनाने वाली जितनी भी मिलें हैं, वे सभी स्थानीय सहकारी सोसायटी की संपत्ति हैं। दूसरी ओर, इन सहकारी सोसायटियों के सदस्य वे सभी छोटे और बड़े किसान भी हैं, जो इन मिलों को गन्ना की आपूर्ति करते हैं।

ये सहकारी सोसायटीज डेयरी (दूध और उससे संबंधित उत्पादन की) मार्केटिंग और बैंकिंग में भी बड़ी भूमिका निभाती हैं। भारत के सहकारी बैंक ग्रामीण और शहरी, दोनों समाजों की सेवा में लगे हुए हैं। वर्गीस कुरियन ने अपनी किताब ह्यमेरा भी एक सपना था, (प् जवव ींक ं त्तमंउ) में उन सभी समस्याओं, उनके समाधान और अनुभवों का जिक्र विस्तार से किया है, जिनका सामना उन्हें ष्अमूलष के नाम से प्रसिद्ध डेयरी कोऑपरेटिव सोसायटी के निर्माण में करना पड़ा।

भारत में सहकारी आंदोलन की सफलता का गहराई से अध्ययन करने के बाद मिर्जा फरीदुल हसन बेग अंत में इसी निश्कर्श पर पहुँचे कि समाज में क्रांति लाने के केवल दो ही तरीके हैं - पहला, अच्छे कामों में एक दूसरे का साथ दिया जाए, जिसकी वकालत पंडित जवाहर लाल नेहरू करते थे। दूसरा, डॉ। जाकिर हुसैन ने जो तरीका अपनाया था कि शिक्षा, वित्तीय सहायता और सामाजिक कार्यों के माध्यम से गरीबों को उनके पैरों पर खड़ा किया जाये।

उन्होंने सहकारी-आंदोलन और सोशल-वर्क का गहराई से अध्ययन किया। एक ओर जहाँ वह इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि गरीबों को उनके पैरों पर खड़ा करने के लिए उन्हें एक वित्तीय संस्था की जरूरत है, वहीं उन्हें बड़े दिल वाले ऐसे लोगों की भी तलाश थी, जो गरीब व्यक्तियों, परिवारों, समूहों और समुदायों को व्यक्तिगत और सामुहिक तौर पर समृद्ध बनाने में उनकी मदद कर सकें।

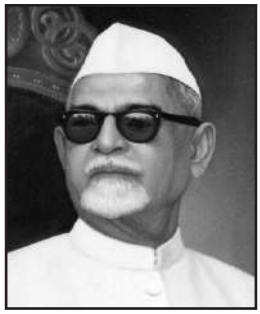

डॉ. ज़ाकिर हुसैन का अधूरा मिशन

पिछड़ों, खासकर संघर्श करते अल्पसंख्यकों को शिक्षा, घर और आर्थिक स्वायत्तता प्रदान करना डॉ। जाकिर हुसैन का अधूरा मिशन था। चूँकि समाज के दबे-कुचले और वंचित लोगों के प्रति डॉ। जाकिर हुसैन का जो दर्द था, वही दर्द मिर्जा फरीदुल हसन बेग का भी था, इसलिए उन्होंने जाकिर हुसैन के अधूरे मिशन को पूरा करने का फैसला किया।

गरीबों को घर दिलाने के लिए मिर्जा फरीदुल हसन बेग ने दक्षिणी दिल्ली में एक आवासीय कॉलोनी बनाने के बारे में सोचा, जो एक रेगुलराइज्ड कॉलोनी की तरह ही सभी सुविधाओं से लैस हो। सहकारी सोसायटी को दी गई सुविधाओं का लाभ उठाते हुए, मिर्जा फरीदुल हसन बेग ने अपनी सोसायटी के पंजीकरण के लिए आवासीय सहकारी सोसायटी के रजिस्ट्रार से संपर्क किया।

सोसायटी से जुड़े सभी सदस्यों से विचार-विमर्ष के बाद यह निर्णय लिया गया कि यह सोसायटी खुद डॉक्टर जाकिर हुसैन के नाम पर दर्ज होनी चाहिए और

इस कॉलोनी का नाम जाकिर बाग रखा जाना चाहिए। पंजीकरण से संबंधित पहले चरण को ही पूरा करने में लगभग 11 वर्श (1973-1984) लग गए। अब दूसरा चरण था भूमि आवंटित करवाना और यह भी कोई आसान काम नहीं था।

सरकार द्वारा जो पहला जवाब मिला, वह बहुत नकारात्मक था। उसने भूमि आवंटित करने के मामले को लंबित रखा। काफी मेहनत और परेशानियों के बाद सराय जुलेना गाँव के पास जमीन के एक टुकड़े की पहचान की गई। लेकिन, वहाँ के स्थानीय निवासियों ने इसमें बाधा डालनी शुरू कर दी, हालांकि ये लोग अवैध रूप से सरकारी जमीन पर कब्जा किए हुए थे। वह जब भी देखते थे कि जमीन उनके हाथ से निकल जाएगी, तो हंगामा और बदमाशियाँ करना शुरू कर देते थे।

काफी संघर्श के बाद आखिरकार वह जमीन सोसायटी को आवंटित कर दी गई। अब तीसरा चरण यह था कि कैसे निर्माण का एक खाका तैयार किया जाए, ताकि पूरी कार्यवाही सरकारी नियमों के अनुसार हो। और इसके लिए सोसायटी को एक ऐसे प्रतिभाशाली वास्तुकार (आर्किटेक्ट) की जरूरत थी, जो इस काम को अच्छी तरह अंजाम दे सके।

बेग साहब ने अपनी दूरदर्शिता का उपयोग करते हुए इस काम के लिए भारत के उस जमाने के मशहूर आर्किटेक्ट राज रेवाल की सेवाएं हासिल कीं, जो पूरी दुनिया में ऐसी इमारतें बनाने के लिए अपनी अनोखी पहचान रखते थे, जो तेजी से बढ़ती हुई शहरी आबादी, पर्यावरण और संस्कृति की मांग से सटीक मेल खाता हो।

एक ऐसे देश में, जो विकासशील भी हो और औद्योगिक भी, जहाँ प्राचीन इमारतें भी पाई जाती हों और नई भी और जहाँ का समाज रूढ़िवादी होने के साथ-साथ बहुलवादी भी हो, वहाँ पर रीवाल का काम आधुनिक तकनीक और इतिहास तथा इसकी पृश्ठभूमि का मिश्रण है और उन्होंने न केवल इसका अच्छा डिजाइन तैयार किया, बल्कि इसमें स्थानीय स्तर पर मिलने वाले अच्छे सामानों का भी इस्तेमाल किया, जिससे इन इमारतों को एक नई पहचान मिली।

बेग साहब ने राज रेवाल को इस काम में क्यों लगाया, इसके पीछे जहाँ कई कारण हैं, उनमें से एक कारण यह भी है कि उन्होंने दिल्ली और लंदन से शिक्षा प्राप्त की थी और नई दिल्ली में अपना काम शुरू करने से पहले वह एकोचार्डस के पेरिस में स्थित कार्यालय में भी काम कर चुके थे। उन्हें बहुत से पुरस्कार और सम्मान से सम्मानित किया गया, जिनमें इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स से स्वर्ण पदक और कॉमनवेल्थ एसोसिएशन ऑफ आर्किटेक्ट्स से प्राप्त किया गया रॉबर्ट मैथ्यू पुरस्कार भी शामिल हैं।

वह सही मायने में इन पुरस्कारों के हकदार थे, क्योंकि जाकिर बाग के रूप में उन्होंने जो कृति बनाई, जल्द ही रचनात्मक हलकों में उसकी चर्चा होने लगी। पूरे देश में इंजीनियरिंग और आकीर्टेक्चर डिजाइनिंग की पढ़ाई करने वाले छात्र बड़ी संख्या में इसे देखने के लिए आने लगे, क्योंकि आर्किटेक्चर और प्रौद्योगिकी का यह सबसे अच्छा संयोजन है। राज रेवाल के माध्यम से चार करोड़ की लागत से बनने वाली और 204 इकाइयों वाली यह सुंदर कॉलोनी 1984 में बन कर तैयार हो गई। चूँकि इस आवासीय परियोजना की रूपरेखा डॉ। जकिर हुसैन के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर तैयार की गई थी, इसलिए उन्हें भेंट करते हुए इसका नाम ष्जाकिर बागष रखा गया।

एक ऐसे बगीचे की तरह, जिसमें तरह-तरह के पेड़-पौधे लगे हों, जाकिर बाग में भी तरह-तरह के लोगों को बसाया गया, जिनमें शिक्षाविदों से लेकर, इंजीनियर, नौकरशाह, वकील, डॉक्टर और व्यापारी तक, सभी शामिल थे। ये बेग साहब की बड़ी उपलब्धियों में से एक थी।

इंजीनियर शबीहुल हसन, जो कॉउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च से सेवानिवृत्त हुए, अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि ह्यमैं मिर्जा फरीदुल हसन बेग से 1960 में तब मिला, जब जामिया मिलिया इस्लामिया के एक प्रोजेक्ट पर काम कर रहा था। ओखला में हमें आवासीय घरों की जबरदस्त किल्लत का सामना करना पड़ता था। डॉ। जाकिर हुसैन के निधन के बाद यही एक सफल सहकारी सोसायटी थी, हालांकि और भी कई सोसायटीज बनीं, लेकिन वे सभी बुरी तरह विफल रहीं। मुझे जो चीज मिर्जा साहब के पास लाई, वे अपनी विष्वसनीयता और गरीबों के प्रति उनके भीतर निस्वार्थ सेवा और

बलिदान की भावना थी। मैंने उनसे अनुरोध किया कि वे सहकारी सोसायटी के सदस्य बन जाएं, जिसे उन्होंने सहर्श स्वीकार कर लिया। मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा। यदि मिर्जा साहब न होते, तो मैं दक्षिणी दिल्ली के बीच में घर कभी नहीं खरीद पाता।,

शबीहुल हसन ने बताया कि ह्यजरूरतमंद और पिछड़े लोगों के लिए उन्होंने जो परियोजना शुरू की थी, उसके बारे में वे इतने चिंतित रहा करते थे कि अंतिम साँस लेने से पहले भी उन्होंने पूछा था कि जाकिर बाग का प्रमाणपत्र पूरा हो पाया या नहीं। जाकिर बाग के कागजात को सही ढंग से तैयार करने और प्रमाण पत्र के पूरा होने से संबंधित मेरे प्रयासों की उन्होंने काफी सराहना की थी।,

प्रोफेसर असद अली के अनुसार, मिर्जा साहब का कारनामा केवल यही नहीं है कि उन्होंने अपने लिए घर की व्यवस्था की, बल्कि उन्होंने दक्षिणी दिल्ली के बीचोंबीच उन 200 लोगों के लिए भी घर का इंतेजाम किया, जो एक सुरक्षित और बेहतर मकान की खोज में थे। वे बताते हैं कि ह्यदरअस्ल, जाकिर बाग उस कोऑपरेटिव सोसायटी की देन है, जिसे पंडित जवाहर लाल नेहरू की समाजवादी विचारधारा से प्रभावित होकर और उनके सहकारी आंदोलन से सबक लेकर स्थापित किया गया था। एक आवासीय सोसायटी के लिए संसाधन जुटाना काफी मुष्किल काम था। इसे ध्यान में रखते हुए सदस्यों के चुनाव में मिर्जा साहब ने काफी दूरदृश्टि से काम लिया। इसीलिए उन्होंने जानबूझकर सोसायटी के सदस्यों के रूप में कुछ बड़े नामों और धनवान लोगों का चुनाव किया।,

एन। एस। एसोसिएट्स के निदेशक, देवेंद्र रावत अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं, ह्यजब जाकिर बाग का निर्माण चल रहा था, उस समय मैं जामिया मिलिया इस्लामिया में इंजीनियरिंग का छात्र था। अनोखी वास्तुकला के कारण जाकिर बाग की बनावट की पूरे शहर में चर्चा होने लगी। इस संबंध में जब बेग साहब से मिला, तो उन्होंने मुझे बताया कि जाकिर बाग का पूरा आकीर्टेक्चर किसी और ने नहीं, बल्कि प्रमुख वास्तुकार राज रीवाल ने तैयार किया है, जो प्रकृति के साथ आधुनिक प्रौद्योगिकी का तालमेल बैठाने में विशेशज्ञता रखने के कारण काफी प्रसिद्ध थे। उन्होंने इसकी संरचना मुस्लिम समाज में पर्दे की

परंपरा को ध्यान में रखते हुए बनाई और ऐसा करते समय उन्होंने निर्माण कला की उत्कृष्टता से भी कोई समझौता नहीं किया। आप अपनी खुली और हवादार बालकनी में बैठ कर प्रकृति का आनंद ले सकते हैं।,

मिर्जा साहब के करीबी दोस्त, इंजीनियर अहमद सईद बताते हैं कि आवासीय कॉलोनी के रूप में जाकिर बाग कैसे अस्तित्व में आया। ह्यकुछ लोगों ने किसानों की जमीन खरीदी और जाकिर बाग बनाना शुरू कर दिया। उस दौर में हमें भी एक घर की जरूरत थी। चूँकि सरकार ने तब हाउसिंग सोसायटी को मंजूरी देना बंद कर दिया था और भूमि केवल अनाधीकृत क्षेत्रों में ही उपलब्ध थी, इसलिए हम सब काफी उल्झन की स्थिति में थे। हमने इस संबंध में मिर्जा साहब से बात की, तो उन्होंने हमसे और लोगों को तैयार करने के लिए कहा, ताकि भविश्य में यदि कोई सोसायटी बनती है, तो वे इसके संभावित सदस्य बन सकें।

'वह तारीख 31 अक्टूबर, 1971 थी, जब कुछ लोग इकट्ठा हुए और उन्होंने 10 रुपये की फीस और 100 रुपये के शेयर के साथ एक ग्रुप बनाया। हमारी पहली बैठक जामिया मिलिया इस्लामिया के सोशल वर्क विभाग में हुई। उन्हीं दिनों हमने आवासीय मकानों के लिए जमीन की कमी, खासकर दिल्ली के अल्पसंख्यक वर्गों से संबंधित एक लेख पढ़ा, जो हिंदुस्तान टाइम्स के ष्इवनिंग न्यूजष् में प्रकाशित हुआ था। इसी लेख में इंद्र कुमार गुजराल का वह बयान भी शामिल था, जिसमें उन्होंने कहा था कि अल्पसंख्यकों को अगर जमीन चाहिए, तो उन्हें एक कोऑपरेटिव सोसायटी बनानी चाहिए।

'यह हमारे लिए काफी मददगार साबित हुआ। उस समय श्री झा नामक एक व्यक्ति थे, जो रजिस्ट्रार कोऑपरेटिव सोसायटी (आरसीएस) के पद पर कार्यरत थे। मैंने उनसे कहा कि उनके स्टैंड और अखबार में छपे उनके मंत्री के बयान में काफी विरोधाभास है।

'मैंने उनसे यह भी कहा कि चूँकि हमारा संबंध अल्पसंख्यक समुदाय से है, इसलिए हमें परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। श्री झा ने हमसे मंत्रालय से संपर्क करने को कहा, तो हमने वहाँ जाकर श्री आई के गुजराल से मिलने का फैसला किया।

'हम जब वहाँ गए, तो हमारी मुलाकात श्री ओम मेहता से हुई, क्योंकि गुजराल साहब का कहीं और ट्रांसफर हो गया था और उनकी जगह ओम मेहता ने ले ली थी। हमने उन्हें अपनी परेशानियों के बारे में बताया, जिसके जवाब में उन्होंने सहानुभूति व्यक्त करते हुए सोसायटी के पंजीकरण का द्वार खोल दिया। हमने आवेदन किया, अतः कुछ आवष्यक शर्तों और बुनियादी कार्यों को पूरा करने के बाद 1972 में हमें सोसायटी का पंजीकरण प्रमाणपत्र मिल गया।

'सोशल-वर्क के हमारे शिक्षक, ए। आर। सैयद और उनकी पत्नी, दोनों ने हमें पढ़ाया था। हमने इस संबंध में उनसे भी राय माँगी। इसके बाद हम लोग अपने क्षेत्र के सांसद शशि भूषण के पास गए और उनसे अनुरोध किया कि वह भूमि-आवंटन के मामले में हमारी सिफारिश कर दें।

'उसके बाद हमने एक संयुक्त ज्ञापन तैयार करके, उस पर दिल्ली के सभी 7 सांसदों के हस्ताक्षर कराने के बारे में सोचा। चूँकि मैं एक इंजीनियर था, इसलिए मैंने दिल्ली का मास्टर-प्लान और साथ ही उसका जोनल-प्लान भी तैयार किया और अपनी सोसायटी के लिए जमीन खोजने की कोशिश की।

'हमने वह पत्र मंत्रालय को दिया। भोला पासवान नए हाउसिंग कमिष्नर थे। उन तक कैसे पहुंचा जाए, इसके लिए हमने एक रणनीति बनाई और डॉ। जाकिर हुसैन की पुत्री, सईदा आपा को अपने साथ लेकर भोला पासवान से मिलने पहुंचे। डॉ। जाकिर हुसैन जब बिहार के राज्यपाल थे, तो उस समय भोला पासवान उनसे कई बार मुलाकात कर चुके थे और उनके व्यक्तित्व से भी काफी प्रभावित थे। सईदा आपा को देखकर उन्होंने हमसे बात की और हमारी चिंताओं पर संवेदना व्यक्त की। उन्होंने इस फाइल को पास कर दिया, जिसके बाद हमें एक पत्र मिला, जिसमें कहा गया था कि सोसायटी को जमीन दी जा सकती है। हमें जमीन पाने के लिए काफी संघर्श करना पड़ा। आखिरकार सराय जुलेना के पास 4।25 एकड़ भूमि का टुकड़ा हमें आवंटित कर दिया गया।

'इसके बाद हमने पहले एचडीएफसी बैंक के अध्यक्ष, एच। टी पारेख से संपर्क किया कि वह हमारी परियोजना को वित्तीय सहायता प्रदान करें, लेकिन बैंक ने मना कर दिया। मिर्जा साहब के अनुरोध पर, उन्होंने परियोजना की जगह का

व्यक्तिगत दौरा किया, जहाँ उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया और खुब मेहमान-नवाजी की गई। हमारे आतिथ्य, दोस्ताना व्यवहार और गंभीरता को देखकर एच। टी। पारेख काफी प्रभावित हुए और परियोजना को वित्तीय सहायता देने के लिए राजी हो गए। उस समय के जाने माने आर्किटेक्ट राज रीवाल को निर्माण-प्लान तैयार करने के काम में लगाया गया, जिसे उन्होंने बहुत खूबसूरती और बेहतर ढंग से अंजाम दिया और इस तरह कुछ दिनों बाद 204 मकानों वाला जाकिर बाग बन कर तैयार हो गया।

जरीना भट्टी के अनुसार, जाकिर बाग को विकसित करने और जामिया कोऑपरेटव बैंक की स्थापना में मिर्जा साहब ने जिस निस्वार्थ भाव का प्रदर्शन किया, इतिहास में उसकी मिसाल कहीं और नहीं मिलती। जरीना भट्टी कहती हैं, ह्यउन्होंने दूसरों के लिए जो काम शुरू किये, जब उनके कागजात तैयार करने का समय आया, तो उन्हें इसके बारे में बहुत अधिक जानकारी नहीं थी, लेकिन वह यह जरूर जानते थे कि इस काम को करने के लिए सबसे अच्छा व्यक्ति कौन हो सकता है। उन्होंने मेरे पति स्वर्गीय आई। जेड। भट्टी से संपर्क किया, जो कि एक अर्थशास्त्री थे और जानते थे कि कागजात ठीक से कैसे तैयार किए जाते हैं। मिर्जा फरीदुल हसन बेग के अनुकूल बर्ताव और आतिथ्य ने उनका दिल जीत लिया, जिसकी वजह से दोनों में खूब बनने लगी। इस तरह मिर्जा साहब को सहकारी बैंक बनाने के लिए अच्छी सलाह मिल गई और साथ ही मेरे पति ने इसके लिए ठीक तरह से कागजात तैयार करने में भी उनकी खूब मदद की।,

जरीना भट्टी आगे बताती हैं कि ह्यलोगों के साथ रिष्ते बनाने में जब बेग परिवार के आतिथ्य, उदारता और मेल-मिलाप बढ़ाने की बात आती है, तो मेरे पास वर्णन करने के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं, क्योंकि मेहमानों पर इतनी उदारता और स्नेह जताने का उदाहरण मैंने कहीं और नहीं देखा। और सबसे बड़ी बात यह कि, दूसरों की मदद के लिए वे हर समय जिस तरह तैयार रहते हैं, उसकी वजह से परिवार के सदस्यों का हर कोई सम्मान करता है, यही नहीं, उनका सुंदर व्यवहार और त्याग का जज्बा अपने जीवन के उद्देष्यों की पूर्ति में भी उन्हें उच्च स्थान प्रदान करता है।,

जामिया कोऑपरेटिव बैंक लिमिटेड

रिश्ता यक़ीन का

हैदराबाद की अपनी एक यात्रा के दौरान, मिर्जा साहब एक ऑटो रिक्षा चालक के साथ बात करने लगे। उन्होंने उससे पूछा कि वह कैसे गुजारा करता है और एक महीने में कितना कमा लेता है। रिक्षा चाललक ने बड़े गर्व से कहा कि वह ड्राइवर नहीं, बल्कि उस ऑटो रिक्षा का मालिक है।

मिर्जा साहब ने उससे सवाल किया कि ह्यतुमने इस रिक्षा को खरीदने के लिए पैसे की व्यवस्था कहाँ से की?, उत्तर में रिक्षा वाले ने कहा कि ह्यहमारे राज्य में सहकारी सिस्टम चल रहा है, जिसकी वजह से हमें सहकारी बैंकों से आसान शर्तों पर ऋण मिल जाते हैं। कुछ वर्शों के बाद हम ऋण की वह धनराशि बैंक को लौटा देते हैं और मालिक बन जाते हैं।,

यह बातचीत मिर्जा साहब के अंदर जल रही उस चिंगारी को शोला बनाने में काफी कारगर साबित हुई, जिससे वे आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को सशक्त बनाने की तरकीब खोजने में लगे हुए थे। हैदराबाद से वापसी के बाद, उन्होंने अपने उन करीबी दोस्तों से इस विशय पर बात की, जिनके बारे में उनका मानना था कि वे सही सलाह देंगे।

आखिरकार, सभी चिंताओं पर काबू पाते हुए, जामिया कोऑपरेटिव बैंक लिमिटेड

(जेसीबी) ने 1995 से काम करना शुरू कर दिया। आज वह पूरे गर्व के साथ कह सकता है कि वह बेहतरीन सहकारी बैंकों में से एक है। उसके पास 152 करोड़ का डिपोजिट बिजनेस और 84 करोड़ की अतिरिक्त राशि मौजूद है।

आज अगर हम जेसीबी की उपलब्धियों पर नजर डालें, तो उसने ऐसे अनगिनत लोगों को ऋण दिए हैं, जो अपनी दो वक्त की जरूरत पूरी करने के लिए दर-दर की ठोकरें खा रहे थे। इसी तरह जामिया कोऑपरेटिव बैंक ने उन लोगों को ऋण दिया, जो छोटा-मोटा कोई व्यवसाय शुरू करके अपने जीवन को बेहतर करना चाहते थे। महिलाओं के सशक्तिकरण और अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए उन्हें कुशल बनाया, उन्हें वाहन खरीदने के लिए ऋण दिलवाए, ताकि उनका जीवन भी बदले और वह समृद्ध जीवन जी सकें।

जेसीबी ने पढ़ने वाले कई बच्चों की, अपनी शिक्षा जारी रखने और अपने परिवार का भाग्य बदलने में भी मदद की। मिर्जा फरीदुल हसन बेग ने अपने दोस्त इंजीनियर अहमद सईद से यह बात कही थी कि ह्यकिसी भी बच्चे को सिर्फ इसलिए शिक्षा से दूर न रखा जाये कि उसके माता-पिता पढ़ाई का खर्च नहीं उठा सकते। उसे शिक्षित करना उन की जिम्मेदारी है, जिन्हें परमेष्वर ने हर प्रकार के संसाधन व स्त्रोतों से समृद्ध किया है। हमारे समाज को आगे बढ़कर शिक्षा के क्षेत्र में मदद करने की जिम्मेदारी स्वीकार करनी चाहिए।,

डॉ। जाकिर हुसैन की पोती और जामिया कोऑपरेटिव बैंक की डायरेक्टर, रेहाना मिश्रा के अनुसार, कमजोर वर्गों और विशेश कर मुसलमानों के लिए वित्तीय जीवन रेखा तैयार करने में मिर्जा साहब ने सराहनीय काम किया। बकौल रेहाना मिश्रा, ह्यमिर्जा फरीदुल हसन बेग सही मायने में जनहितैशी व्यक्ति थे, जिन्होंने कमजोर वर्गों का जीवन बदलने के लिए निरूस्वार्थ सेवा की। अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने के लिए अनगिनत लोगों ने जामिया कोऑपरेटिव बैंक से ऋण (लोन) लिए और आज वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र होकर जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इसके अलावा, अनंत लोगों ने अपने बच्चों के लिए बैंक से एजुकेशन लोन लिए। शिक्षा प्राप्त करने के बाद आज यह बच्चे या तो कहीं अच्छा काम कर रहे हैं या फिर उन्होंने अपना कोई व्यवसाय शुरू कर दिया है। इस प्रकार ऐसे सभी लोगों के जीवन में इस बैंक की वजह से बड़ा परिवर्तन

हुआ और वे सिर उठाकर जीने योग्य बने। ये सारे लोग आज खुश हैं और एक बेहतर जीवन जी रहे हैं।, एक संयुक्त बातचीत के दौरान रेहाना मिश्रा की बहन निलोफर मेनन ने भी इसी प्रकार के विचार व्यक्त किए।

मिर्जा फरीदुल हसन बेग के साले, जफर खान, जो अमेरिका में रहते हैं, बताते हैं, ह्यमिर्जा साहब जब जामिया सहकारी बैंक बना रहे थे, तो उन दिनों वह कहा करते थे कि हमारे पास एक सलाहकार है, जो अमेरिका में रहता है। वे यह जानते थे कि लोगों से कैसे काम लेना है और अपने लक्ष्य को कैसे हासिल करना है। वह एक दूरदर्शी इंसान थे। उन्होंने बैंक, जाकिर बाग का निर्माण और आजमगढ़ में शैक्षिक संस्थान स्थापित करके यह साबित कर दिया कि वे अपने मिशन के पक्के हैं। उनके अंदर मानव स्वभाव को समझने की अच्छी क्षमता मौजूद थी।,

राश्ट्रीय अल्पसंख्यक शैक्षिक संस्थान आयोग (एनसीएमएआई) के पूर्व चेयरमैन, जस्टिस एम। एस। ए। सिद्दीकी, मिर्जा फरीदुल हसन बेग के साथ अपनी मुलाकात को याद करते हुए कहते हैं, ह्यमिर्जा साहब मेरे पास आए और मुझसे जामिया कोऑपरेटिव बैंक की एक शाखा का उद्घाटन करने का आग्रह किया। मैंने बचने की कोशिश की, लेकिन जब उन्होंने यह कहा कि यह बैंक समाज के गरीब और कमजोर तबकों को लाभ पहुँचाने के लिए बनाया गया है, तो मैंने गरीबों के प्रति उनकी निस्वार्थ भावना को देखते हुए हामी भर दी। ईष्वर की कृपा से इस शाखा ने इतनी तरक़्की की कि आज बड़ी संख्या में उसके खाता धारक मौजूद हैं।,

अलीगढ़ मुस्लिम विष्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, महमूदुर्रहमान ने कहा कि, 'मिर्जा कमरुल हसन बेग काफी ऐक्टिव और सक्षम व्यक्ति हैं। मुझे पूरा यकीन है कि वह न केवल जामिया कोऑपरेटिव बैंक को नई ऊँचाइयों तक ले जाएंगे, बल्कि शीघ्र ही मिर्जा साहब के अधूरे सपनों को भी पूरा करेंगे।ह्व

जामिया मिलिया इस्लामिया में गालिब की मूर्ति

जामिया मिलिया इस्लामिया से प्रेम

मिर्जा फरीदुल हसन बेग ने जब से शिक्षाविदों, खासकर सर सैय्यद अहमद खाँ और डॉ। जाकिर हुसैन के जीवन का अध्ययन किया, वह बेचैन हो गए और डॉ। जाकिर हुसैन से मिलने की उनकी इच्छा और प्रबल हो गई।

एक दिन शिबली इंटर कॉलेज के शिक्षकों ने छात्रों को एक डॉक्यूमेंटरी दिखाने का प्रबंध किया। ष्भारत में अल्पसंख्यकष् नाम की इस डॉक्यूमेंटरी में डॉ। जाकिर हुसैन के व्यक्तित्व, अल्पसंख्यकों के लिए उनका विजन और मुसलमानों के विकास में शिक्षा की भूमिका को बेहतर ढंग से दिखाया गया था।

डॉक्यूमेंटरी देखने के बाद मिद्धू डॉ। जाकिर हुसैन से मिलने को बेचैन हो उठे और हर गुजरते दिन के साथ उनकी इस बेचैनी में लगातार वृद्धि होती रही।

मिद्धू 1958 में दिल्ली आये। यहाँ आकर उन्होंने जामिया मिलिया इस्लामिया में प्रवेश लिया और सोशल वर्कष् की पढ़ाई शुरू कर दी। उन्होंने सोशल वर्क की

पढ़ाई पूरी की तथा मानव सेवा को अपने जीवन का उद्देष्य बनाया। जामिया मिलिया इस्लामिया के संस्थापकों में से एक चूँकि डॉ। जाकिर हुसैन भी थे और यह प्रोफेसर मोहम्मद मुजीब की जामिया के नाम से भी मशहूर थी, अतः मिर्जा फरीदुल हसन बेग को इस विष्वविद्यालय से एक अलग तरह का लगाव था। उन्होंने सोशल वर्क में अपनी पढ़ाई पूरी की और मानवता की सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। जामिया मिलिया इस्लामिया के संस्थापकों में से एक चूँकि डॉ। जाकिर हुसैन भी थे और यह विष्नविद्यालय प्रोफेसर मोहम्मद मुजीब की जामिया के नाम से भी प्रसिद्ध थी, इसलिए मिर्जा फरीदुल हसन बेग को इस विश्वविद्यालय से एक विशेष प्रकार का लगाव और प्यार था।

शायद यही वजह थी कि एक संस्था के रूप में जामिया को जब भी कोई संकट आता, मिर्जा फरीदुल हसन बेग उससे लड़ने के लिए हमेशा तैयार रहते, और जामिया को इस योग्य बना दिया कि वह अपनी लड़ाई खुद लड़ सके।

जामिया को जब अल्पसंख्यक संस्थान का दर्जा दिलाने का समय आया, तो मिर्जा साहब ने प्रतिभाशाली लोगों को इकट्ठा करके, उसकी कानूनी लड़ाई को अंजाम तक पहुँचाने में मुख्य भूमिका निभाई।

कुछ वर्शों के बाद जब केस सही जगह पर पहुँच गया और उसकी सुनवाई एनसीएमएआई के जस्टिस एम। एस। ए। सिद्दीकी के सामने हुई, तो मिर्जा साहब ने न्यायाधीश से संपर्क किया और उन्हें अपनी चिंता बताई कि वह इस मामले में न्याय होते देखना चाहते हैं। उन्होंने न्यायाधीश से यह भी अनुरोध किया कि वह किसी के दबाव में न आएं, क्योंकि यह मामला उन अनंत छात्रों के भविश्य से जुड़ा हुआ है, जो इसे अल्पसंख्यक संस्थान का दर्जा प्राप्त होने के बाद विष्वविद्यालय में अपनी क्षमता के अनुसार पढ़ाई कर सकेंगे।

मिर्जा फरीदुल हसन बेग ने गुस्से में कहा, ह्यदेखिए जज साहब, मैं चाहता हूँ कि जामिया के साथ न्याय हो। और अगर ऐसा नहीं हुआ, तो मैं आपके बंगला के सामने अपने शरीर पर मिट्टी का तेल डालकर खुद को आग लगा लूँगा। और आप यह न सोचें कि मैं हवा में बातें कर रहा हूँ। पूरे मीडिया को बुलाऊंगा और लोगों की भीड़ के सामने खुद को आग लगालुंगा।,

ऐडवोकेट तारिक सिद्दीकी के अनुसार, यह बहुत मुष्किल केस था, क्योंकि अलीगढ़ मुस्लिम विष्वविद्यालय (एएमयू) से संबंधित अजीज बाशा का एक ऐसा ही मामला अदालत में लंबित था और सरकार का रुख। था कि एएमयू अल्पसंख्यक संस्था नहीं है।

ऐडवोकेट तारिक सिद्दीकी ने बताया कि ह्यहमने गहराई से पूरे केस का अध्ययन किया और जामिया मिलिया इस्लामिया की ओर से तीन याचिकाएं दाखिल कीं। हमने अपने केस को जहाँ तक संभव हो सकता था, अच्छे तरीके से रखा और अंततः छह सालों की लड़ाई के बाद, जामिया को अल्पसंख्यक संस्था घोशित कर दिया गया।,

अल्पसंख्यक संस्था का दर्जा मिलने के बाद जामिया मिलिया इस्लामिया में चारों ओर खुशी की लहर दौड़ गई। ऐडवोकेट तारिक सिद्दीकी के अनुसार, ह्यजब एक रिक्षा चलाने वाले को यह मालूम हुआ कि जस्टिस एम। एस। ए। सिद्दीकी ने जामिया अल्पसंख्यक संस्था घोशित कर दिया है, तो उसने प्रसन्नता से दस रुपये का नोट अपनी जेब से निकाला और बोला, ष्मैं भी खुशी की इस घड़ी में शामिल होना चाहता हूँ और इस अवसर पर मिठाई खरीदने के लिए अपनी ओर से दस रुपये देता हूँ।,

ऐडवोकेट तारिक सिद्दीकी ने बताया कि ह्यमिर्जा फरीदुल हसन बेग बहुत अच्छे इंसान थे। बिना किसी भेद भाव के, जरूरतमंदों की मदद करने के लिए वह हमेशा तैयार रहते। वे सहकारी आंदोलन में विष्वास रखते थे। उन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना डटकर किया और सभी सदस्यों को एक साथ मिलाकर रखा।,

हरयाणा कैडर के पूर्व आईएएस अधिकारी, जे। एस। सांगवान ने मिर्जा साहब के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा कि ह्यमैंने जामिया मिलिया इस्लामिया से अपनी पढ़ाई पूरी की है। कॉलेज के दिनों में मेरी मुलाकात एक दिन मिर्जा फरीदुल हसन बेग से हुई। उनसे मुलाकात करने से पहले मैं अपने पिता को अपना आदर्श मानता था, लेकिन मिर्जा साहब से मिलने के बाद उनके स्वभाव और दरियादिली को देख अब उनका भक्त बन गया। मेरे पिता भी

आजीवन विपरीत परिस्थितियों से लड़ते रहे, ऐसा ही मिर्जा साहब के साथ भी हुआ। दोनों के बीच एक बात कॉमन है और वह यह कि दोनों ही समाज के लिए और आने वाली पीढ़ियों,

खासकर गरीबों और कमजोर लोगों को लाभ पहुँचाने के लिये बहुत कुछ करने का साहस रखते थे।,

जे। एस। सांगवान ने बताया कि ह्यअपने छात्र जीवन के दिनों में, मुझे जामिया में अलग-अलग बैकग्राउंड के लोगों से करीब से मिलने का मौका मिला। जामिया परिसर में मुझे जातिवाद, सांप्रदायिकता या उग्रवाद का तनिक भी आभास नहीं हुआ। यहाँ पर सभी एक ही विचारधारा को मानते हैं, और वह है भारतीयता। यह कैम्पस भारत को, उसकी मूल भावना के रूप में प्रस्तुत करता है।,

चैधरी रघुनाथ सिंह जामिया मिलिया इस्लामिया में छात्र जीवन के दौरान अपने अनुभवों का जिक्र करते हुए कहते हैं, ह्यभारत सरकार ने शिक्षा मंत्रालय के माध्यम से पूरे भारत में 10 ग्रामीण विकास संस्थान खोले। उन्हीं संस्थानों में से एक जामिया मिलिया इस्लामिया भी था, जहाँ मैं ग्रामीण विकास पाठ्यक्रम के पहले बैच का स्टूडेंट था।,

चैधरी रघुनाथ सिंह ने आगे बताया कि ह्यस्वतंत्रता के बाद गांधी जी ने डॉ। जाकिर हुसैन साहब से कहा कि हमें लोगों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए, जो जमीनी स्तर पर उनके लिए लाभदायक हो। चूँकि भारत के 80 प्रतिशत से अधिक लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं, इसलिए केवल स्नातक (बीए) या मास्टर्स (एमए) की शिक्षा ही पर्याप्त नहीं है। शिक्षा से केवल रोजगार ही नहीं मिलना चाहिए, बल्कि इससे ग्रामीण भारत का विकास भी होना चाहिए। ग्रामीण संस्थानों की स्थापना का उद्देष्य भी यही था। इस कोर्स में विष्व संविधान, समाजशास्त्र, इतिहास, भूगोल, हिंदी, अंग्रेजी और उर्दू भाशाओं को शामिल किया गया था, ताकि भारत की वास्तविक समस्याओं को समझा जा सके।,

मौलाना आजाद इंटर कॉलेज, अंजान षहीद, आजमगढ़ में स्थापना दिवस

समाज की चिंता

अपने जीवन के लक्ष्य को अच्छी तरह समझ लेने के बाद, मिर्जा फरीदुल हसन बेग ने राश्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को महसूस किया और वह विष्वास व्यक्त किया, जिसने एक बेहतर इंसान बनने में उनकी सहायता की।

जस्टिस एम। एस। ए। सिद्दीकी के अनुसार, मिर्जा साहब की सबसे बड़ी उपलब्धि यही थी कि उन्होंने जामिया कोऑपरेटिव बैंक के माध्यम से लोगों को सशक्त बनाने का काम किया। जस्टिस सिद्दीकी कहते हैं, ह्यजामिया कोऑपरेटिव बैंक के रूप में उन्होंने जिस माइक्रो फाइनेंसिंग की शुरुआत की, वह कमजोर वर्गों को सशक्त बनाने का सबसे अच्छा तरीका था। उनकी दूरदर्शिता और प्रशासन को सलाम करता हूँ, जहाँ उन्होंने वस्तुतः यह करके दिखा दिया कि किसी संस्था को सफलतापूर्वक कैसे चलाया जाता है।ह्न

जस्टिस सिद्दीकी ने आगे बताया कि ह्यस्वतंत्रता हासिल किए हुए हमें 60 साल से अधिक हो चुका है। इस अवधि में व्यक्तिगत काम तो बहुत सारे हुए हैं,

लेकिन कौम के लिए कोई साझा या असली काम नहीं हुआ है। मिर्जा साहब ने इतनी कम अवधि में जो काम करके दिखा दिया, वह वाकई काबिले तारीफ है। खुद अपने कस्बा अनजान शहीद में, उन्होंने शिक्षा के जरिए लोगों को सशक्त बनाने का काम शुरू किया और यहाँ दिल्ली में उन्होंने जामिया कोऑपरेटिव बैंक के रूप में वित्तीय संस्था की नींव डाली, ताकि बेशुमार कमजोर वर्गों को शिक्षा ग्रहण करने, अपनी बेटियों की शादी करने, परिवहन का कारोबार शुरू करने, घर बनाने और अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए छोटा व्यवसाय शुरू करने में उनकी मदद की जा सके। मैं उनके व्यक्तित्व का वर्णन करने के लिए कुछ पंक्तियाँ सुनाना चाहता हूँरू

मत सहल हमें जानो, फिरता है फलक बरसों
जब खाक के पर्दे से इंसान निकलता है
वह खामोशी है कि सब हो गए हैं पत्थर के
यकीन न हो तो किसी को पुकार कर देख

'एक बार मुझे उनके पैतृक गाँव अनजान शहीद जाने का मौका मिला। मैं स्कूल के एक कार्यक्रम में भाग ले रहा था, जहाँ मैंने उनके बारे में एक शेर सुनायारू

किसी को हो न सका उसके कद का अंदाजा
वह आसमान है मगर सर झुकाए रहता है

'मैं ईष्वर से प्रार्थना करता हूँ कि हर सदी में हमारी कौम को मिर्जा फरीदुल हसन बेग जैसा व्यक्ति मिले, जिन्होंने गरीबों को समृद्ध बनाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया और कौम की निस्वार्थ सेवा की।ह्न

नई दुनिया के संपादक, शाहिद सिद्दीकी का कहना है, ह्यमैंने उनको अपनी कौम के लिए गहरी चिंता में डूब पाया। वे चाहते थे कि मुसलमान अपने संकीर्ण दायरे से बाहर निकलें और बेहतर भविश्य के लिए शिक्षा प्राप्त करें। वह मेरी इस बात से सहमत थे कि भारतीय मुसलमानों का भविश्य इस देश के भविश्य के साथ जुड़ा हुआ है। मुसलमानों को यह बात समझनी होगी कि चाहे उनकी अर्थव्यवस्था का मामला हो या फिर किसी और क्षेत्र की बात, उनके अपरोच में कहीं न कहीं कोई गलती है। उन्हें दूसरी कौमों के साथ तालमेल बढ़ानी होगी। उन्हें यह बात समझनी होगी कि दूसरे समाज के लोग उनके दुष्मन नहीं हैं।

लेकिन, अगर वे उनके बारे में ऐसा सोचते भी हैं तो फिर उन्हें शिक्षा और प्रतिस्पर्धा के माध्यम से पराजित करना होगा।

शाहिद सिद्दीकी ने कहा कि ह्यमिर्जा साहब की जिस बात ने मुझे प्रभावित किया, वह गरीबों और खासकर गरीब मुसलमानों को उच्च उठाने को लेकर उनकी चिंता थी। उन्होंने मुझे बताया था कि कैसे उनके लिए घर, अर्थशास्त्र, शिक्षा और सामाजिक सुधार से संबंधित मंच और फोरम तैयार किए जाएं। और सबसे बड़ी बात यह कि उन्होंने कभी इसका श्रेय लेने की कोशिश नहीं की और न ही कोई पुरस्कार प्राप्त करने के लिए कभी सरकार से संपर्क किया।

'मिर्जा साहब मुख्य रूप से एक धर्मनिरपेक्ष इंसान थे, लेकिन साथ ही मुसलमानों के लिए उनकी चिंता अभूतपूर्व थी। मेरे लिए, वे सही मायने में एक किसान थे। वह चीन से लौटने के बाद एक विष्व स्तरीय अस्पताल बनाना चाहते थे। हालांकि यह जानते थे कि अब वह ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रहेंगे, तब भी एक सच्चे किसान के रूप में, वह एक बीज बोना चाहते थे, ताकि आने वाली पीढ़ियां इससे फायदा उठा सकें। लोग आमतौर पर सशक्तिकरण की बातें करते हैं, लेकिन मेरा और मिर्जा साहब का यही मानना था कि किसी को अपने पैरों पर खड़ा कर देना ही असली सशक्तिकरण है। इस संबंध में शिक्षा का नंबर सबसे पहले आता है, जो हमें आर्थिक समृद्धि की ओर ले जाती है। मैं शब्द ष्प्रतिस्पर्धाष् पसंद करता हूं, जो कि आज के संदर्भ में मुसलमानों के लिए काफी महत्वपूर्ण है। उन्हें और अधिक प्रतियोगी बनना पड़ेगा। क्या है और आगे क्या होगा, इसके बारे में उन्हें अधिक जागरूक होना पड़ेगा। यह खूबी मैंनें मिर्जा साहब के अंदर देखी, जिनकी नजर हमेशा भविश्य पर रहा करती थी। वह मुसलमानों को शिक्षा के क्षेत्र में दूसरों के बराबर खड़ा करना चाहते थे। मुस्लिम समुदाय के दर्द को अगर हम महसूस करते हैं, तो हमें उन्हें इस दर्द से निजात दिलानी होगी और इसका इलाज शिक्षा और उनके अंदर प्रतिस्पर्धा बढ़ाने के अलावा कुछ भी नहीं है। मुझे अच्छी तरह याद है, एक दिन मिर्जा साहब ने मेरे सामने पूरी दुनिया के मुसलमानों के बारे में अपनी चिंता व्यक्त की। मैंने उनसे यही कहा कि मुसलमानों के लिए अंतर्राश्ट्रिय स्तर पर मुष्किल दौर चल रहा है। अरब दुनिया के लोग यह सोच रहे हैं कि दूसरे लोग उनके खिलाफ साजिश कर रहे हैं, हालांकि जरूरत इस बात की है कि

दूसरों को दोशी ठहराने के बजाय वह खुद अपनी गलतियों को सुधारें। पिछले सौ वर्शों के दौरान अरबों पर वर्चस्व स्थापित करने की कोशिशें होती रहीं, जिसका असर उन्हें अब देखने को मिल रहा है। तेल की दौलत ने उन्हें यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि उन्हें सब कुछ प्राप्त हो चुका है।

'मेरा अखबार, नई दुनिया मुसलमानों में सुधार, उनके सोचने के तरीके को बदलने और उन्हें सही स्थिति से अवगत कराने के लिए समर्पित है। यदि आपने खुद को उनके लिए समर्पित कर दिया है, तो आपको उन्हीं की भाशा में उनसे बात करनी होगी। इसीलिए मैंने उर्दू में काम करने का फैसला किया, हालांकि मैं चाहता तो आसानी से अंग्रेजी में भी काम कर सकता था। मिर्जा फरीदुल हसन बेग और हकीम अब्दुल हमीद जैसी दो महान हस्तियों ने भी यही किया। दोनों ही अपने देश से बेहद प्यार करते थे और इसी को उन्होंने अपनी कार्यस्थली बनाने का फैसला किया। मिर्जा साहब ने जहाँ जामिया के लोगों के लिए काम करने का फैसला किया और जाकिर बाग, जामिया कोऑपरेटिव बैंक बनाए, वहीं अब्दुल हमीद साहब ने जामिया हमदर्द स्थापित किया। उनके दृश्टिकोण और काम की सराहना करता हूँ, क्योंकि उनके पास जितना पैसा था, अगर वे चाहते तो आसानी से भारत के बाहर जा सकते थे, अपने बच्चों को किसी और देश में बसा सकते थे और जीवन का आनंद उठा सकते थे, लेकिन दोनों ने खुद को अपनी जड़ों से ही बांधे रखने का फैसला किया और यहाँ समाज के साथ-साथ अपने देश की भी सेवा करते रहे।

इंजीनियर अहमद सईद ने अपनी कौम और कमजोरों के प्रति मिर्जा साहब की चिंता का उल्लेख करते हुए बताया कि ह्यसामाजिक कार्यों को लेकर बेग साहब की गंभीरता से काफी प्रभावित था। मैंने कई अवसर पर उनके साथ बहुत से ऐसे मुद्दे हल किए, जिनके बारे में हमें लगता था कि इससे जरूरतमंदों को राहत मिलेगी। हमने अपने क्षेत्र में चिकित्सा सेवा मुहैया कराने के लिए सरकार से संपर्क करने के बारे में सोचा। सरकार तैयार हो गई, लेकिन डिस्पेंसरी बनाने के लिए कोई जगह उपलब्ध नहीं थी। हमने तब रसूल खान नाम के एक सज्जन से मुलाकात की, जो कि वायु सेना से रिटायर हुए थे। उन्होंने खुशी- खुशी अपने घर को डिस्पेंसरी के रूप में इस्तेमाल करने की अनुमति दे दी। डिस्पेंसरी

जब काम करने लगी, तो मिर्जा साहब यह देखकर काफी खुश हुए कि गरीबों को चिकित्सा सुविधाएं मिलने लगी हैं।

आईएएस और अलीगढ़ मुस्लिम विष्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, महमूदुर्रहमान के अनुसार, मुसलमानों की शिक्षा के लिए मिर्जा साहब सदैव चिंतित रहे और हमेशा इसी प्रयास में लगे रहे कि शिक्षण संस्थान कैसे बनाए जाएं, जिनसे उन्हें लंबी अवधि तक लाभ मिलता रहे। महमूदुर्रहमान बताते हैं, ह्यमिर्जा फरीदुल हसन बेग एक विष्वविद्यालय बनाना चाहते थे, जिसका उल्लेख उन्होंने मुझसे किया था। दुर्भाग्य से उन्हें इस सपने को पूरा करने का समय नहीं मिल पाया।

महमूदुर्रहमान आगे बताते हैं कि ह्यआईआईसी और वायएमसीए की तर्ज पर हमें ऐसे अंतरराश्ट्रीय केन्द्रों की जरूरत है, जहाँ युवा मुस्लिम एक शानदार बौद्धिक वातावरण में स्वतंत्रता के साथ बातचीत कर सकें। इन केंद्रों में हमारे युवाओं को ठहरने, सामाजिक ट्रेंड्स पर चर्चा करने, शैक्षिक कार्यशाला आयोजित करने और विभिन्न धर्मों के बीच आपसी बातचीत के लिए विष्वस्तरीय सुविधाएं उपलब्ध होनी चाहिएं। अपनी इस तीव्र इच्छा को व्यक्त करते हुए मिर्जा साहब ने एक बार मुझसे कहा था, 'दिल करता है कि मुसलमान लड़के और लड़कियाँ आगे आएं, वार्तालाप करें, आधुनिक बौद्धिक वातावरण और सस्ते दामों पर ठहरने की सुविधाएं प्राप्त करें, जहाँ उन्हें खुद आगे बढ़ने का हौसला मिले और वे दूसरों को भी इसके लिए तैयार कर सकें।

महमूदुर्रहमान ने कहा कि ह्यअलीगढ़ मुस्लिम विष्वविद्यालय और जामिया मिलिया इस्लामिया ने कई चमकते सितारे पैदा किए हैं, लेकिन अभी कई और संस्थानों की जरूरत है, जहाँ ऐसे विशेषज्ञ पैदा किए जा सकें। और अगर हम मिर्जा साहब के द्वारा प्रस्तुत किये गए दृश्टिकोण और मार्गदर्शन से सबक हासिल करें, तो यह मुष्किल भी नहीं है कि जब भी कोई शुरुआत की जाए, तो वह पूरी तरह ईमानदारी और गंभीरता पर आधारित हो। हमें इन संस्थाओं द्वारा अपने मुस्लिम युवाओं में यही कैरेक्टर और गुण पैदा करने की जरूरत है।

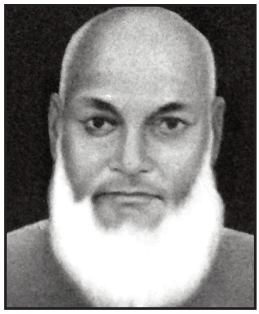

स्वर्गीय मिर्ज़ा रज़ा बेग

रज़ा ज़कात फ़ाउंडेशन

बेग परिवार के सभी रिष्तेदारों और करीबी दोस्तों से एकत्र की गई जकात की धनराशि को सही जगह खर्च करने के लिए एक नई शुरुआत की गई, ताकि इसके उद्देष्य को पूरा किया जा सके। घर के सभी सदस्यों को इसकी सूचना दी गई और आपसी विचार-विमर्श से यह फैसला हुआ कि इस राशि से उन गरीब, हकदार और जरूरतमंद छात्रों की मदद की जाए, जिन्हें वित्तीय संकट के कारण अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी।

और, इसे ष्तेल डाली हुई मशीन की तरह चलाने के लिए वर्श 2009 में रजा जकात फाउंडेशन का पंजीकरण कराया गया। फाउंडेशन मिर्जा फरीदुल हसन बेग की बहू, सदफ बेग की निगरानी में काम कर रहा है। एक बड़े उद्देष्य के लिए तैयार करने में मिर्जा साहब ने उनके जीवन में क्या भूमिका निभाई, उसे याद करते हुए सदफ बताती हैं, ह्ययह हमारे संरक्षक स्वर्गीय मिर्जा साहब के विचारों और भावनाओं के सम्मान में शुरू की गई एक पहल है, जिन्होंने गरीब छात्रों की हमेशा

मदद की। वे बच्चों को शिक्षा के जरिए सशक्त बनाना चाहते थे। उनकी बहू होने के अलावा, मैं उनके साथ कई तरह से जुड़ी हुई थी। उन्होंने मुझे जीवन से प्यार करना और इसे सार्थक उद्देष्यों के लिए व्यतीत करना सिखाया। रजा जकात फाउंडेशन के तहत हम उन छात्रों की मदद करना चाहते हैं, जो प्रतिभाशाली हैं, लेकिन पैसे की कमी के कारण अपनी पढ़ाई जारी नहीं रख सकते।,

रजा जकात फाउंडेशन के कोशाध्यक्ष, अयाज मुबीन बताते हैं, ह्यआरजेडएफ 2009 में पंजीकृत हुआ और शुरुआत में इसने लगभग 4 लाख रुपये जमा किए। आज फाउंडेशन के पास इतनी धनराशि जमा हो चुकी है कि इससे विभिन्न क्षेत्रों में पढ़ाई कर रहे छात्रों का प्रायोजन किया जा रहा है। यह बच्चे इंजीनियरिंग, मेडिकल, साहित्य, अर्थशास्त्र और भाशा आदि का अध्ययन कर रहे हैं। धनराशि का 75 प्रतिशत हिस्सा शिक्षा पर खर्च किया जाता है, जबकि बाकी पैसे से समाज के बेसहारा और आर्थिक रूप से खस्ताहाल व्यक्तियों की त्वरित (इमरजेंसी) जरूरतें पूरी की जाती हैं।,

एक ऐसे देश में, जहाँ आबादी तेजी से बढ़ रही है और शिक्षा के प्रति लोग जागरूक हो रहे हैं, ऐसे छात्रों की एक लंबी सूची है, जिन्हें अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए वित्तीय सहायता की जरूरत है। इतनी बड़ी संख्या में से फाउंडेशन हकदार बच्चों का चयन कैसे करता है? इस पर प्रकाश डालते हुए रजा जकात फाउंडेशन की सचिव, सदफ जफर बेग कहती हैं, ह्यहम आवेदक के शैक्षिक ट्रैक रिकॉर्ड की अच्छी तरह जाँच करते हैं और यह भी ध्यान में रखते हैं कि उसकी सिफारिश किसने की है। इसके अलावा हम खुद भी उससे मिलकर बातचीत करते हैं, ताकि यह पता लगा सकें कि वास्तव में वह इसका हकदार है, और संतुश्ट होने के बाद हम उसके पूरे कोर्स का खर्च वहन करते हैं, चाहे वह शॉर्ट-टर्म कोर्स हो या लाँग-टर्म। यदि हमें पता चला कि वह व्यक्ति हकदार तो है, लेकिन पैसे की कमी के कारण वह अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकताध्सकती, जबकि उसके अंदर क्षमता है, तो हम उसे इस आष्वासन के साथ एक मौका देते हैं कि वे मेहनत से पढ़ाई करें और कम से कम 80 प्रतिशत अंकों के साथ परीक्षा पास करें।,

मिर्ज़ा अहसानुल्ला बेग गर्ल्स डिग्री कॉलेज, अंजान शहीद, आज़मगढ़ में
भाषण देते हुए मिर्ज़ा फ़रीदुल हसन बेग

उर्दू भाषा से लगाव

मिर्जा साहब उर्दू शायरी के प्रशंसक और उर्दू कवियों के महत्व से परिचित थे। वे भारतीय समाज में कवि की गरिमा को हमेशा बहाल करना चाहते थे। भारत में उर्दू भाषा के पतन के कारण एक आम आदमी की तुलना में कवियों का सम्मान घटता जा रहा था।

मिर्जा साहब उर्दू भाषा को इसलिए इतना पसंद करते थे, क्योंकि यही वह भाषा थी, जो उन्होंने अपनी माँ से सीखी, इसी भाषा में उनका दिमाग परिपक्व हुआ, इसी भाषा में वे सोचा करते थे, और इसी भाषा के ज्ञान और साहित्यिक खजाने से उन्होंने अपनी हैसियत के अनुसार लाभ उठाया।

वह जज्बा क्या था, जिसने मिर्जा साहब के जीवन को प्रभावित किया? अनेकता में एकता की खोज, विनाश में निर्माण की इच्छा और एक मिली-जुली संस्कृति इसका जवाब है। भारत में अपनी संस्कृति की अभिव्यक्ति के जितने भी स्वरूप

हैं, उनमें एकता की भावना अपने वास्तविक रूप में और पूरी स्पश्टता के साथ जिस भाशा में पेश की गई है, वह केवल उर्दू है। इसीलिए मिर्जा साहब उर्दू भाशा की प्राकृतिक खूबसूरती से इतने प्रभावित थे।

उर्दू के विख्यात कवि इकबाल अशहर, जिनकी मिर्जा साहब काफी सराहना करते थे, बताते हैं कि ह्यमिर्जा साहब उर्दू से इतना प्यार करते थे कि जब भी उन्हें यह मालूम होता कि उर्दू से जुड़ा हुआ कोई व्यक्ति किसी परेशानी में गिरफ्तार है, तो वह तुरंत उसकी मदद के लिए पहुँच जाते, ताकि उसने इस भाशा की सेवा करने का जो बीड़ा उठाया है, वह न रुके। मेरे मामले में भी उन्होंने यही कहा कि उर्दू की सेवा करना जारी रखूँ और समस्याओं से निपटने की जिम्मेदारी उन पर छोड़ दूँ।,

मिर्जा साहब के पोतों में से एक, मिर्जा साकिब बेग अपने दादा को याद करते हुए कहते हैं, ह्यउर्दू शायरी से उनके दिल को बड़ी राहत मिलती थी। अगर कोई गजल सुनाता, शेर गुनगुनाता या उर्दू के वाक्यांशों का प्रयोग करता, तो वह उसे सुनकर बहुत खुश होते थे। मिर्जा साहब की इस रुचि को देखते हुए मैंने चाचा से अनुरोध किया कि वह मुझे कुछ शेर लिखकर भेज दें, ताकि मैं उन्हें सुना सकूँ, जिसे सुनकर वह न केवल खुश होते, बल्कि मेरी प्रशंसा भी करते।,

मिर्ज़ा महफूज़ बेग तथा परिवार के अन्य सदस्य जैश पब्लिक स्कूल,
अंजान शहीद, आज़मगढ़ में स्वतंत्रता दिवस मनाते हुए

याद रही गाँव की मिट्टी

बेग साहब जिन दिनों जामिया नगर इलाके में गरीबों के कल्याण के कार्यों में व्यस्त थे, उन्हीं दिनों उत्तर प्रदेष के आजमगढ़ स्थित अपने पैतृक कस्बे अनजान षहीद में भी उन्होंने कई षैक्षिक परियोजनाएं षुरू कीं।

मिर्जा अहसानुल्ला बेग गर्लस डिग्री कॉलेज के संस्थापक मिर्जा फरीदुल हसन बेग, मिर्जा महफूज बेग, मिर्जा आरिफ बेग और मिर्जा कमरुल हसन बेग हैं, जिन्हें इस कार्य में परिवार के अन्य सदस्यों से भी पूरा सहयोग मिला। कॉलेज का षिलान्यास सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी और जामिया हमदर्द के कुलाधिपति सैयद हामिद ने 18 फरवरी, 2003 को रखा। इस समारोह में जिन अन्य लोगों ने भाग लिया, उनके नाम हैं अबू आसिम आजमी, सांसदय अख़्तरुल वासे, राश्ट्रीय आयुक्त, भारतीय भाशाई अल्पसंख्यकेंय मुनव्वर हाजिक, लीजन मनेजर, एमीरेटस एयरलाइंस और नई दुनिया के संपादक षाहिद सिद्दीकी की

जगह पर स्काई ऐडवरटाइजिंग ऐंड मार्केटिंग के षफीकुल हसन।

कुछ वर्शों के बाद, मिर्जा महफूज बेग पर मिर्जा फरीदुल हसन बेग द्वारा जोर डालने पर, बीएड का नया पाठ्यक्रम षुरू किया गया, ताकि आजमगढ़ के छात्रों को षिक्षण प्रोफेषन के अवसरों का लाभ उठाने योग्य बनाया जा सके। कुछ दिनों बाद मिर्जा आरिफ बेग के पुत्र, मिर्जा अराफात बेग ने कुछ कदम और आगे बढ़ाते हुए इसमें बेसिक टीचिंग सर्टीफिकेट (बीटीसी) और स्पेषलाइज्ड और पेषेवर पाठ्यक्रमों की षुरुआत की, खासकर लड़कियों को आर्थिक रूप से सषक्त बनाने के लिए।

मिर्जा महफूज बेग बताते हैं, ह्यमेरे भाई मिर्जा फरीदुल हसन बेग अपनी जड़ों से इतनी मुहब्बत और उनकी इतनी चिंता करते थे कि भले ही वह दिल्ली में रहते हों, लेकिन उनका दिल हमेषा आजमगढ़ के लोगों के लिए धड़कता था। दिल्ली से जब भी वह अपने होम टाउन आते, तो आजमगढ़ क्षेत्र में घुसते ही अपनी सभी चिंताओं को भूल जाते थे और खुषी से उनका चेहरा चमकने लगता था। और, मैं भावनात्मक रूप से उनसे इतना जुड़ा हुआ था कि उनकी इच्छा मेरे लिए आदेष बन गई। उनका सपना था कि आजमगढ़ में एक अच्छा इंग्लिष मीडियम स्कूल खोला जाए। मैंने उनके इस सपने को पूरा करने का फैसला किया और जैष पब्लिक स्कूल (जेपीएस) की नींव डाली, जो इस समय सुश्री अनीमा सक्सेना की प्रिंसिपलषिप में तेजी से विकास कर रहा है। जेपीएस का षिलान्यास सैयद बिलाल थानवी ने 7 मई, 2014 को मिर्जा फरीदुल हसन बेग, मिर्जा महफूज बेग, मिर्जा आरिफ बेग, मिर्जा कमरुल हसन बेग, कुँवर अजय कुमार सिंह, मिर्जा यासिर बेग और बेग परिवार के अन्य महत्वपूर्ण सदस्यों की उपस्थिति में डाला। इसके बाद, 10 जनवरी, 2015 को छात्रों के पहले बैच को उत्तर प्रदेष के षिक्षा मंत्री वसीम और मिर्जा फरीदुल हसन बेग की उपस्थिति में ऐडमिषन फार्म वितरित किए गए। अपने होमटाउन आजमगढ़ की मिर्जा साहब की यह अंतिम यात्रा थी, जहाँ उन्होंने मिर्जा अहसानुल्ला बेग गर्लस डिग्री कॉलेज की छात्राओं के साथ, उनकी स्वायत्तता की निषानी के रूप में अपना जन्मदिन (10 जनवरी) मनाया।,

इसी दौरान उन्हें एक ऐसा मंच तैयार करने की जरूरत महसूस हुई, जहाँ

आजमगढ़ के लोग अपनी समस्याओं और चिंताओं पर बात कर सकें, फिर उनकी यह बातें वहाँ से प्रषासन तक पहुँचाई जाएं, ताकि वे इसे अच्छी तरह समझ कर उसका कोई समाधान निकाल सकें और आजमगढ़ की जनता सरकारी सुविधाओं का लाभ उठा सके।

इसका परिणाम हमें ष्वॉएस ऑफ आजमगढ़ष् (आजमगढ़ की आवाज) के नाम से एक सामुदायिक रेडियो के रूप में देखने को मिला। वॉएस ऑफ आजमगढ़ की प्रोग्राम हेड, सीमा श्रीवास्तव के अनुसार, ह्यहम ऐसे कार्यक्रम चलाते हैं, जिनसे प्रभावित होकर लोग अपने जीवन में कुछ बड़ा कर सकें। सरकारी अधिकारियों को इस क्षेत्र के लोगों से जोड़ते हैं, ताकि वे कल्याणकारी योजनाओं के बारे में उन्हें बता सकें। गरीबों को एक खुला मंच प्रदान करते हैं, ताकि वे अपनी समस्याएं और चिंताएं बता सकें, यहाँ से अपनी आवाज बुलंद कर सकें।,

मिर्जा फरीदुल हसन बेग के भतीजे, मिर्जा आरिफ बेग के अनुसार, मिर्जा साहब केवल एक अनोखे सामाजिक कार्यकर्ता ही नहीं थे, बल्कि एक मैनेजमेंट गुरु भी थे। ह्यमेरे पिताजी का निधन 68 वर्श की आयु में हो गया था। वह मेरे हीरो और बड़े दूरगामी थे, जो षिक्षा के माध्यम से क्रांति लाना चाहते थे। मेरे चाचा मिर्जा फरीदुल हसन बेग मेरे पिता से 18 साल छोटे थे। उनसे उन्होंने बहुत कुछ सीखा। मेरे पिता की तरह उन्होंने षिक्षा के जरिए लोगों की सेवा करने में महारत हासिल की। स्कूल स्टाफ की नियुक्ति के समय उन्होंने मुझे लाख टके का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि उच्च पदों, खासकर प्रिंसिपल या विभागाध्यक्ष की नियुक्ति 5 साल से अधिक अवधि के लिए नहीं होनी चाहिए। अगर उनका प्रदर्षन बेहतर हो, तो उनके कार्यकाल को आगे बढ़ा दें। इस सलाह पर जब मैंने अमल किया, तो उसे एक क्रांतिकारी सलाह पाया। लोगों से जब संबंध बनाने या स्वक्षता की बात आती, तो इसमें वह काफी सक्रिय दिखाई देते। वह फाइलों को उठाते, उन पर जमी हुई धूल को साफ करते और ऐसा करते समय अपनी स्थिति या स्थान पर कोई ध्यान नहीं देते। मुझे ऐसी कोई घटना याद नहीं आती, जब कोई जरूरतमंद उनके पास आया हो और उन्होंने उसकी मदद करने से मना कर दिया हो। कई बार तो इस हद तक आगे बढ़ जाते कि दूसरों की मदद करने के लिए अपने व्यक्तिगत उपयोग की चीजों को बेच देते और कई बार दूसरों से पैसा उधार मांग

लेते। ऐसे लोग दुनिया में मुष्किल से आते हैं। उन्होंने अपने पीछे एक बड़ा वैक्यूम छोड़ा है, लेकिन उनकी बातें उनकी अनुपस्थिति में भी हम सभी लोगों का मार्गदर्षन करती रहेंगी।,

एक आम आदमी के विपरीत, मिर्जा साहब हमेषा अपनी जड़ों को मजबूत करने के कायल रहे। ष्आजमगढ़ष षब्द सुनते ही उनकी आँखें चमक

उठतीं। वे हमेषा इन्हीं कोषिषों में लगे रहे कि कैसे आजमगढ़ की भूमि और साथ ही वहाँ के निवासियों के साथ संबंधों का निर्माण किया जाए।

वरिश्ठ राजनीतिज्ञ और सामाजिक कार्यकर्ता, अतुल कुमार अंजान ने कहा कि ह्यउन्होंने आजमगढ़ में गरीबी, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक भेदभाव को अपनी आँखों से देखा था। एक बच्चे के रूप में उनके नाजुक दिमाग पर इन सभी परिस्थितियों का बहुत बुरा असर पड़ा। चूँकि मिर्जा साहब एक समृद्ध परिवार से संबंध रखते थे और ब्रिटिष षासनकाल में इस परिवार का समाज में इच्च स्थान था, इसलिए आजमगढ़ के लोगों पर उन्होंने अच्छी पकड़ बनाई। और केवल मिर्जा फरीदुल हसन बेग ही नहीं, बल्कि अपने पिता, चाचा और अन्य महत्वपूर्ण सदस्य सहित, उनका पूरा परिवार गरीबों की मदद के लिए हमेषा तैयार रहता। गाँव वाले उनके पास अपनी परेषानियां लेकर आते और बेग परिवार पैसे, भोजन या जो कुछ भी उनके पास मौजूद होता, उससे उनकी मदद करने की पूरी कोषिष करता। बेग परिवार के सदस्यों को सभी नेक इंसान मानते थे।,

जैष पब्लिक स्कूल, आजमगढ़ के निदेषक, मिर्जा यासिर बेग के अनुसार, मिर्जा साहब ने व्यावहारिक षिक्षा पर सबसे अधिक जोर दिया, जो आदमी को नौकरी दिलाकर उसे अपने पैरों पर खड़ा कर सकती हो। बकौल मिर्जा यासिर बेग, ह्यवह जब भी मुझसे मिलते, जैष पब्लिक स्कूल के बारे में जरूर पूछते। मुझे याद है कि एक बार मैंने जैष पब्लिक स्कूल के पाठ्यक्रम के बारे में उन्हें बताया था। वे इसे पढ़ने के लिए बेचैन थे। उन्होंने कई लोगों को यह पाठ्यक्रम दिखाया, ताकि उनके द्वारा सार्थक सलाह मिल सके। वे गुणवत्ता को लेकर इतने चिंतित रहते कि उसकी छोटी-छोटी बारीकियों पर नजर रखते थे।,

मिर्जा यासिर बेग ने आगे बताया कि ह्यआप चाहे जो भी करें, अध्ययन करें,

नौकरी या फिर कोई और काम, यह सब उच्च गुणवत्ता का होना चाहिए। जैष के स्कूल स्टाफ की नियुक्ति के दौरान वह मुझसे हमेषा गुणवत्ता पर ध्यान देने को कहते। इसके अलावा, आम सामाजिक पैटर्न के मामले में, वह सब कुछ बलिदान करने में विष्वास रखते थे। जब लोगों का कोई समूह एक साथ खाना खा रहा होता था, तो वह जूठी प्लेटें उठाकर किचन में ले जाते। यहाँ भी, वह दूसरों को नहीं, बल्कि अपनी व्यक्तिगत षांति के लिए इस काम को अंजाम देते।,

मिर्जा फरीदुल हसन बेग के करीबी दोस्त, निजामुद्दीन आजमी ने उनके बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ह्यउन्हें अपनी जड़ों से इतना लगाव था कि वह आजमगढ़ को युन्नान क्षेत्र से कम नहीं समझते थे। दूसरा विभाग जिसके लिए वह काफी चिंतित रहा करते थे, वह लड़कियों की शिक्षा थी। वह कहा करते थे कि लड़कियों को फूल की कली की तरह कुचल कर फेंका नहीं जाना चाहिए, जिसका कोई भविश्य ना हो और उनकी पूरी ताकत छोटी आयु में ही निचोड़ ली जाए। वे चाहते थे कि आजमगढ़ की हर लड़की गरिमापूर्ण जीवन बिताये और यह तभी संभव था, जब वे सही शिक्षा प्राप्त करें। मिर्जा अहसानुल्ला बेग गर्लस डिग्री कॉलेज मिर्जा साहब के इस सपने को काफी हद तक पूरा कर रहा है।,

अतुल कुमार अंजान ने देखा कि मिर्जा फरीदुल हसन बेग में समाजसेवा का जुनून पूरी शिद्दत के साथ मौजूद था। वह अपनी जड़ों को, खासकर लड़कियों की शिक्षा और उनकी स्वायत्तता के लिए सब कुछ करना चाहते थे। बकौल अतुल कुमार अंजान, ह्यएक बार मैंने उन्हें सलाह दी कि वह शिबली कॉलेज के कामकाज में हाथ बटाएँ, क्योंकि शैक्षिक संस्थान को आगे ले जाने का जज्बा उनके अंदर बेमिसाल था। मैंने सोचा कि उनके जैसा व्यक्ति इस संस्था की समस्याओं को आसानी से हल करा लेगा, क्योंकि इसे चलाने वाला उनसे बेहतर मेरी नजर में कोई और इंसान उस समय मौजूद नहीं था। उन्होंने मेरी बात को ध्यान से सुना, लेकिन इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। मैंने अपमान महसूस किया, अतः बहुत दिनों तक हम दोनों में कोई बातचीत नहीं हुई। एक दिन वह मेरे पास आए और विस्तार से बताया कि किसी संस्था को चलाने का काम उससे कहीं अधिक मुष्किल होता है, जितना कि समझा या बताया जाता है। और वह इस

तरह की निरर्थक गतिविधियों में अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहते। उन्होंने लाख टके की बात यह भी कही कि किसी भी संस्था को चलाने का काम रुकना नहीं चाहिए। उन दिनों शिबली कॉलेज का माहौल काफी खराब था, ऐसे में अगर उन्हें भी कॉलेज में शामिल कर लिया जाता, तो वहाँ के कई कर्मचारी नाराज हो जाते, जिससे वातावरण और बिगड़ता और छात्रों का नुकसान होता। वे ऐसा नहीं चाहते थे।,

अतुल कुमार अंजान चूँकि अपने निर्वाचन क्षेत्र में काफी सक्रिय हैं और इस क्षेत्र के लोगों को फायदा पहुँचाने के तरीके ढूँढते रहते हैं, इसलिए

मिर्जा साहब ने एक बार मुझे सलाह दी कि मैं अपने क्षेत्र के लोगों के साथ सही तरीके से संबंध बनाऊँ।

अतुल कुमार अंजान बताते हैं, ह्यमैं यही सोचा करता था कि मैं जो कुछ कर रहा हूँ, वही सबसे अच्छा है, लेकिन मिर्जा साहब ने लोगों के दुख-दर्द को समझने का इससे भी बेहतर तरीका मुझे बताया। मैंने लोगों के साथ समय बिताना, उनसे मिलना-जुलना और उनकी समस्याओं और परेशानियों को समझने के लिए उन्हीं के दृश्टिकोण से जीवन को देखना शुरू कर दिया। यह तरीका सफल रहा और उसने उन लोगों के साथ संबंधों को मजबूत बनाने में मेरी काफी मदद की। मेरी नजर में वह एक मानवीय व्यक्ति थे। वे उच्च मूल्यों वाले थे और भारतीय संस्कृति को अच्छी तरह जानते, समझते थे। मैं मिर्जा फरीदुल हसन बेग के दृश्टिकोण और समझ को दिल की गहराइयों से सलाम करता हूँ।,

मिर्जा साहब के साथ अपनी विभिन्न बैठकों का जिक्र करते हुए वे कहते हैं कि ह्यएक बार मिर्जा साहब ने मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा के बारे में मेरी राय जानने की कोशिश की। मैंने अपने दिल की बात उन्हें बताई, जिसकी उन्होंने जमकर तारीफ की। 1981 में, मैंने मऊ के डीसीएसके पीजी कॉलेज का दौरा किया। उस जमाने में इस कॉलेज में बहुत कम मुस्लिम लड़कियां हुआ करती थीं। आज मैं सैकड़ों बुर्कापोश लड़कियों को इस कॉलेज में जाते हुए देखता हूँ।

'एक अन्य अवसर पर, मिर्जा साहब ने लड़कियों के लिए कौशल आधारित शिक्षा की उपयोगिता पर मुझसे बात की। उन्होंने इसका एक रोडमैप तैयार किया

और उस पर काम करना शुरू कर दिया। भारत लड़कियों के लिए स्किल मैनेजमेंट की बात आज कर रहा है, जबकि मिर्जा साहब ने इसके बारे में न केवल बहुत पहले सोच लिया था, बल्कि 10 साल पहले ही इसे लागू भी कर दिया था।

'बेग साहब ने जितनी बातें कही थीं, उनमें से कुछ अभी तक पूरी नहीं हुई हैं, लेकिन मुझे पूरा विष्वास है कि परिवार के लोग उसे पूरा करके दिखाएंगे, क्योंकि वह बहुत योग्य, मेहनती, साफ दिल, ईमानदार और काम करने वाले लोग हैं। यदि वह इस पर गंभीरता से काम करें, तो यह उस व्यक्ति के प्रति सबसे बड़ी भेंट होगी, जो दोबारा तो कभी पैदा नहीं होगा,

लेकिन उसके गुण और उपलब्धियाँ तब तक मनुश्यों को लाभ पहुँचाती रहेंगी, जब तक यह दुनिया कायम है।

'चूँकि हम दोनों ही आजमगढ़ और उसके परिवेश को लेकर चिंतित रहा करते थे, इसलिए उन्होंने एक दिन बदलती परिस्थितियों के बारे में मेरी राय जाननी चाही। एक राजनीतिक कार्यकर्ता, सामाजिक परिवर्तन का बारीकी से निरीक्षण करने वाले व्यक्ति के रूप में, जो दुनिया की गतिविधियों को खुली आँखों से देखता है, मैंने उनसे कहा कि दुनिया को इस समय दो अति गंभीर समस्याओं का सामना है - आक्रामक तानाशाही, जिसकी वजह से मध्य-पूर्व में युद्ध हो रहा है और दुनिया के अन्य भागों में इसकी वजह से बेचैनी पैदा हो रही है, और दूसरा - लाखों लोगों को उनके अधिकारों से वंचित करना, जो कि अंतरराश्ट्रीय फाइनेंशियल कैपिटल की नीतियों से सबसे बड़ा खतरा बन गया है। सैन्य रूप से शक्तिशाली देशों द्वारा विकासशील और कम विकसित देशों के संसाधनों पर कब्जा के कारण प्राकृतिक संसाधनों की लूट हो रही है, अशांति फैल रही है, टकराव वाले क्षेत्रों में वृद्धि होती जा रही है और इस प्रकार की अधिक बुराईयां फैल रही हैं। उन्होंने हाँ में सिर हिलाया और मुझे सलाह देते हुए कहा कि शिक्षा क्रांति के लिए काम जारी रखें, क्योंकि एक दिन ऐसा आएगा जब बुराइयों को अपना पैर फैलाने की जगह नहीं मिलेगी।

'भारतीय संदर्भ में, मैंने उनसे कहा कि मेरी सबसे बड़ी प्राथमिकता इस समय

यही है कि भारतीय संविधान के धर्मनिरपेक्ष चरित्र को कैसे बचाया जाए। अगर धार्मिक उग्रवाद व्यवस्थित ढंग से फैलता है, तो इससे बड़े पैमाने पर नरसंहार होगा और भारत पूरी तरह नश्ट हो जाएगा। इसीलिए रूढ़िवाद, चाहे वह हिंदू रूढ़िवाद हो या इस्लामिक, के खिलाफ लड़ना ही सही तरीका होगा। उन्होंने हँसते हुए फिर से हाँ में सिर हिलाया। मुझे समझ में आ गया कि वह जीवन भर जिसके लिए प्रतिबद्ध रहे, वह यही बात थी। वह हमेशा विभिन्न संप्रदायों को आपस में मिलकर रहने की हिदायत करते थे। उनके यहाँ आक्रामकता या कट्टरपंथ की कोई जगह नहीं थी। और चूँकि वे जीवन भर एक ही सिद्धांत पर कायम रहे, इसलिए वह लोगों की तकलीफों और परेशानियों को दूर करने में सफल हुए। आर्थिक संप्रभुता द्वारा उनके ऊपर अवसरों के नए द्वार खोल कर उन्होंने उनके अंदर आत्मविष्वास का नया जज्बा पैदा किया। दूसरों के जीवन को समृद्ध बनाने की उनके अंदर जो निस्वार्थ भावना और उत्साह था, वह आज के दौर में विलुप्त हो चुका है।,

मिर्ज़ा फरीदुल हसन बेग पत्नी नूर जहाँ खानम, बेटियों,
बहुओं तथा पोता-पोती के साथ

पारिवारिक जीवन

मिर्जा फरीदुल हसन बेग ने जरूरतमंदों की मदद करने में हमेशा सहमति दिखाई। उनसे मदद लेने वालों में उनके सगे-संबंधी तो थे ही, साथ ही इसमें बिल्कुल अजनबी, उनके सीनियर्स और जूनीयर्स, उनके दोस्त और नौकर सभी शामिल थे। पैसा और घरेलू उपयोग की अन्य वस्तुएं दूसरों के साथ साझा करने में उन्हें एक विशेष प्रकार की खुशी मिलती थी। उनकी करुणा की कोई सीमा नहीं थी, जिसके कारण उनके परिवार की परेशानियाँ बढ़ने लगीं। उनके पास जब लगातार और पर्याप्त आय के स्रोत थे, तब भी उनकी दरियादिली की वजह से उनकी पत्नी को परेशानी उठानी पड़ती थी। उनकी आय में जैसे-जैसे वृद्धि होती गई, वैसे-वैसे उनकी दरियादिली भी बढ़ती चली गई।

बेग साहब की जीवन शैली सादगी, विनम्रता और स्वक्षता से परिपूर्ण थी। जिन दिनों वे वित्तीय तंगी के बुरे दौर से गुजर रहे थे, तब भी उनके शरीर पर साफ-सुथरे और सादे कपड़े हुआ करते थे। उनके अंदर कभी किसी को कोई त्रुटि

नजर नहीं आई, न ही किसी ने उनके सीमित संसाधनों पर संवेदना व्यक्त की।

उनकी पत्नी नूरजहाँ खानम, चार बेटे - मिर्जा शम्सुल हसन बेग, मिर्जा कमरुल हसन बेग, मिर्जा अस्फर बेग और मिर्जा अहमद बेग, और दो बेटियाँ - निशात बेग गुप्ता और सबा बेग खान के अंदर भी वही सादगी और खुशमिजाजी देखने को मिलती है, जो मिर्जा फरीदुल हसन बेग की विशेशता थी।

उनकी पत्नी की नजर में दुनिया का अधिक महत्व नहीं था और साथ ही उनका हृदय भी सादगी भरा था। बेग साहब वास्तव में एक भाग्यशाली व्यक्ति थे, जिन्हें इतनी गुणवान पत्नी मिलीं। सबसे बड़ी बात यह कि दोनों के स्वभाव और व्यवहार में समानता थी। इसकी वजह से घर का वातावरण इतना अच्छा हो गया कि उन्हें अपने सामाजिक कार्यों को करने, खुदा की इबादत करने और अच्छे ढंग से अपने साथी मनुश्यों की सेवा सहृदय करने का मौका मिल गया। बेग साहब अपनी पत्नी की विशेशताओं का वर्णन अक्सर किया करते थे। एक बार उन्होंने अपने बड़े बेटे से कहा कि ह्यायदि आपकी माँ इतनी सलीके वाली, इतनी सरल, इतनी बाकमाल और एक साथ इतनी खूबियों की मालिक न होतीं, तो आज जो कुछ भी मैं हूँ, वह नहीं होता।,

मिर्जा फरीदुल हसन बेग पत्नी नूर जहाँ खानम के साथ
अपने विवाह की 50वीं वर्शगांठ के अवसर पर

मानवीय रिश्तों का महत्व

मिर्जा फरीदुल हसन बेग के व्यक्तित्व में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का उदय हमें स्पश्ट रूप से दिखाई देता है। उन्होंने सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों के साथ नैतिकता और लगाव को शीर्श पर रखा। उन्होंने अपने जीवन के मामलों में छोटे और बड़े वर्ग के लोगों के बीच कभी भेद नहीं किया। उन्होंने समाज सेवा के जितने बड़े काम किए, उतनी ही उनके अंदर विनम्रता आती चली गई। उनका स्थान जितना उच्च होता चला गया, उतना ही वह अच्छाई और न्याय के द्योता बनते चले गए, उतना ही उनके अंदर व्यथित और पीड़ित मनुश्यों के प्रति सहानुभूति और प्यार का जज्बा बढ़ता चला गया। उनका संदेश सही मायने में पूरी मानवता के लिए प्यार व मोहब्बत का संदेश बन गया। उनके अंदर यह खूबियाँ आद्धात्मिक गुरुओं के जीवन का अध्ययन करने के बाद उत्पन्न हुईं, जिसने उन्हें मार्गदर्शन दिया और अपने साथी मनुश्यों के साथ हमदर्दी की भावना प्रदान की।

अतीक अहमद कहते हैं, ह्यमानवीय रिष्तों, विनम्रता और लोगों से सहानुभूति के मामले में वह मेरे रोल मॉडल थे। उनको सभी काम सहजता से करते हुए देख कर मैंने बहुत कुछ सीखा।,

मिर्जा फैसल बेग के अनुसार, मिर्जा फरीदुल हसन बेग के लिए सबसे कीमती चीज मानवीय रिष्ते थे। कनाडा के पूर्व व्यापार आयुक्त और यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलंबिया के निदेशक के रूप में उसके भारत में स्थित कार्यालय के वर्तमान प्रमुख, मिर्जा फैसल बेग बताते हैं, ह्यजब मैं दिल्ली आया, तो यह मिर्जा साहब ही थे, जिन्होंने मुझे आगे का रास्ता दिखाया और एक ऐसे शहर में मेरे अभिभावक बने, जो कि मेरे लिए अनजान था। समय बीतने के साथ ही वह मेरे चहीते हो गए। उन्होंने दिल्ली के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में जाने के लिए मुझे सुनहरे अवसर प्रदान किए। वह पूरे परिवार को एक साथ इकट्ठा कर लेते और फिर हमें दूतावासों के प्रोग्रामों में लेकर जाते, विशेश रूप से लीबिया के राश्ट्रीय दिवस के अवसर पर। दुनिया भर की वित्तीय परेशानियों के बावजूद, वह इस बात को अवष्य सुनिष्चित करते थे कि उनके पास थोड़ा बहुत जो भी है, वह मेरे लिए उपलब्ध हो।,

मिर्जा फैसल बेग ने आगे बताया कि ह्यएक बार मुझे एक सांप ने काट लिया, जिसके बाद मुझे तुरंत सिटी हॉस्पिटल ले जाया गया। मेरे पीछे-पीछे वह भी आए और आधी रात को मेरे माता-पिता के पास यह बताने खुद पहुँच गए कि मैं ठीक हूँ। यह आदमी की गुणवत्ता को प्रदर्शित करता है। वे काफी संवेदनशील थे और अंधेरी काली रात में इसके लिए उन्होंने पैदल दो किलोमीटर की दूरी तय की।, एनएस एसोसिएट्स के निदेशक, देवेंद्र रावत एक घटना का जिक्र करते हुए कहते हैं, ह्यजब मैं जामिया मिलिया इस्लामिया में पढ़ाई कर रहा था, उस समय मुस्लिम दोस्तों के साथ मेरी बहुत अच्छी बनती थी। मैं अपने दोस्तों से इस्लाम, उसके नियम-कानून और दूसरे इंसानों के साथ व्यवहार के बारे में बहुत कुछ सीखा। उनके साथ एकजुटता व्यक्त करते हुए रमजान के दिनों में रोजे (उपवास) भी रखता था। मिर्जा साहब को जब इसके बारे में पता चला, तो उन्होंने इफ्तार का विशेश प्रबंध किया। उन्होंने इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले लगभग 400 लोगों के सामने मेरे इस कार्य पर खुशी जताई। मुझे विशेश सम्मान देने के लिए उन्होंने जो कुछ किया, उससे मैं काफी प्रभावित हुआ।,

मिर्जा साहब के करीबी दोस्त, इंजीनियर अहमद सईद ने भी इसी तरह की एक घटना का जिक्र करते हुए बताया कि ह्यएक बार मिर्जा फरीदुल हसन बेग मेरे पास कुछ सुझाव लेने के लिए आए। उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने कुछ पैसे जमा किए हैं, जिससे वे एक प्लॉट खरीदना चाहते हैं। उन दिनों मेरे पास एक स्कूटर हुआ करता था। हम दोनों उस पर बैठे और एक क्षेत्र की ओर निकल पड़े। उन्होंने मुझे वह प्लॉट दिखाया और पूछा कि क्या हम वहाँ पर एक घर बना सकते हैं। वहाँ जमीन पर माचिस का एक खाली डिब्बा पड़ा हुआ था। मैंने उसे उठाया और जमीन पर इमारत का एक नक्षा बनाकर उन्हें समझाने की कोशिश की। कुछ दिनों बाद मुझे पता चला कि मिर्जा साहब ने बिना किसी बदलाव के, हूबहू उसी नक्षे के अनुसार वहाँ पर मकान बनवा लिया है, जैसा कि मैंने उन्हें जमीन पर बनाकर दिखाया था।,

मिर्जा साहब के बचपन के दोस्त, फुर्कान हाशमी ने बताया कि ह्यजामिया से मैं सिविल इंजीनियर बनकर निकला और मेरे पास जाकिर बाग प्रोजेक्ट पर काम करने का अनुभव भी था। मिर्जा साहब ने केवल मेरा परिचय महत्वपूर्ण हस्तियों से कराया, बाकी मैंने जो कुछ किया, वह मेरी मेहनत और योग्यता का परिणाम था। हालांकि, मैंने वहाँ बहुत थोड़े समय के लिए काम किया, फिर भी मुझे कॉलोनी निर्माण और विकास के बारे में बहुत कुछ सीखने का मौका मिला। मिर्जा साहब का बड़ा कारनामा जाकिर बाग के निर्माण के लिए आवासीय सोसायटी स्थापित करना या जामिया कोऑपरेटिव बैंक बनाना नहीं था, बल्कि अपनी अंथक मेहनतों से इन संस्थानों को सफलतापूर्वक चलाना उनकी बड़ी उपलब्धि है।,

मिर्जा साहब के भतीजे इरशाद बेग कहते हैं कि उनके परिवार पर मिर्जा साहब का बड़ा एहसान है कि उन्होंने उसे शिक्षित और समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इरशाद बेग बताते हैं, ह्यजब मैं प्राथमिक विद्यालय में था, तब मिर्जी फरीदुल हसन बेग जामिया के छात्र थे और अनजान शहीद आए हुए थे। एक दिन ताँगा से हम कहीं जा रहे थे। मिर्जा साहब ने देखा कि सड़क के किनारे एक आदमी एक लड़के को बुरी तरह मार रहा है। ऐसा लग रहा था कि वह आदमी जो लड़के को मार रहा था, वह निर्दोश है। मिर्जा साहब को यह अन्याय सहन नहीं हुआ। वह ताँगा से नीचे कूद पड़े और उस आदमी से कहा कि वह

लड़के को मारना बंद करे, लेकिन वह नहीं माना। मिर्जा साहब काफी गुस्से में आ गए। उन्होंने ताँगा वाले के हाथ से छड़ी छीनी और उसे लगे पीटने। वह उसे तब तक मारते रहे, जब तक कि उसने लड़के को छोड़ नहीं दिया।,

इरशाद बेग ने बताया कि ह्य1974 में एएमयू से पढ़ाई पूरी करने के बाद, जब मैं दिल्ली आया, तो मिर्जा साहब ने मुझे जाकिर हुसैन सहकारी सोसायटी बनाने की बात कही। मैं भी सदस्यों को तैयार करने और समस्याओं से निपटने के काम में लग गया। वह एक बहुत उच्च चरित्र और दृश्टि वाले सुधारक थे। वे ईष्वर द्वारा प्रदान की गई चीजों का आनंद लेने में विष्वास रखते थे, लेकिन साथ ही गरेबों का अधिकार देना भी नहीं भूलते थे।,

इरशाद बेग की पत्नी, सलमा खानम अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहती हैं, ह्यमिर्जा फरीदुल हसन बेग अनमोल नगीना थे, जिन्होंने अपना जीवन गरीबों और कमजोर लोगों को समर्पित कर दिया था। मिर्जा साहब का कैरेक्टर और व्यवहार इतना अच्छा था कि उन्होंने किसी के भी साथ उसकी सामाजिक स्थिति के कारण निश्पक्षता नहीं की। उन्होंने हमें सिखाया कि अगर कोई मेहमान हमारे यहाँ आता है, तो हमें उसकी बेइज्जती या अपमान नहीं करना चाहिए, और हमारे पास जो कुछ भी मौजूद हो, वह उसे पेश करना चाहिए, बिना किसी झिझक या हीन भावना के।,

फुर्कान हाशमी, जो उनके करीबी घरेलू दोस्त थे, मिर्जा साहब के मानवीय रिष्तों और विनम्रता का जिक्र करते हुए कहते हैं, ह्यएक बार लोकसभा चुनाव के दौरान प्रसिद्ध राजनेता और भारतीय राश्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य, अर्जुन सिंह अपनी पत्नी और एक दोस्त के साथ जामिया क्षेत्र में प्रचार के लिए आए। समूह ने मिर्जा साहब को भी साथ ले जाने की जिद की। तब मैं छोटा था। जोश और उल्लास में, अपने हाथ में पोस्टर लेकर मैं भी उनके साथ शामिल हो गया। वह गर्मी भरा दिन था। वह जब तीन बजे दिन में यहाँ आए, तो मिर्जा साहब उन्हें अपने घर ले गए। वह स्वयं किचन में गये, रोटी और दाल उठाई, और बिना झिझक प्रत्येक व्यक्ति को भोजन खिलाया। मैंने अपने जीवन में ऐसा आतिथ्य कभी नहीं देखा था। उन्हें इस बात की परवाह बिल्कुल नहीं थी कि अर्जुन सिंह जैसा कद्दावर नेता उनके बारे में क्या सोचेगा। मिर्जा साहब के पास जो कुछ भी था, उन्होंने पूरे आदर-सतकार और सम्मान के साथ मेहमानों को पेश किया।

मिर्जा फरीदुल हसन बेग फिजियो-थैरैपिस्ट डॉ। विषाली कक्कड़ मेहता के साथ

महिलाओं का सम्मान और उनकी स्वायत्तता

मिर्जा फरीदुल हसन बेग के अच्छे व्यवहार का एक सुंदर पहलू महिलओं का सम्मान भी था। वह उनकी गरिमा और रूतबे को काफी महत्व देते थे। उनके साथ राजकुमारियों जैसा व्यवहार किया जाता था और किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह उनसे ऊँची आवाज में बात करे या उनका अपमान करे। खुद बेग साहब अपने कर्तव्यों से इसका उदाहरण पेश करते, यहाँ तक कि वह खुद अपने हाथों से चाय बनाकर उन्हें परोसते। उनके परिवार में महिलाओं का एक विशेश स्थान था, और वह जब तक जीवित रहे, उन्होंने उनके इस स्थान को बनाए रखा।

परिवार के पुरुशों को कई बार इससे ईर्श्या होती, लेकिन बेग साहब ने उन्हें कभी भी महिलाओं पर प्राथमिकता नहीं दी, बल्कि दोनों के रिश्तों में इस तरह का समन्वय बिठाया कि पूरा माहौल सदैव के लिए सुखद हो गया।

मिर्जा साहब की नातिन, सौम्या गुप्ता के अनुसार, ह्यमेरे नाना महिलाओं का

बहुत सम्मान करते थे। इसीलिए बेग परिवार में यह परंपरा बन गई है कि वह अपनी बहुओं को किचन में काम नहीं करने देंगे। इसके अलावा भी उन्हें कोई और काम नहीं लिया जाता था। मेरे नाना की नजर में यह महिलाओं का सम्मान करने का एक तरीका था। हमारे परिवार में महिलाओं का सम्मान किया जाता है और हर मामले में उन्हें शीर्ष पर रखा जाता है, जो कि वास्तव में एक शानदार कृत्य है। यदि हम महिलाओं को न दबाएँ, तो हमारे समाज में बहुत सी विषेशताएं पैदा हो सकती हैं।, सौम्या अपने विचार व्यक्त करते हुए आगे कहती हैं, ह्यमेरे नाना मुझे हमेशा प्रेरित करते रहते थे कि मैं गाऊँ और एक अच्छी महिला कलाकार के रूप में चमकती रहूँ। उन्होंने मुझ पर कई बार जोर डाला कि मैं मंच पर परफॉर्म करूँ, जो कि मैंने किया भी। केवल मेरी ही नहीं, बल्कि वह अन्य लड़कियों को भी इसी तरह प्रोत्साहित किया करते थे। वह इस बात के जबरदस्त प्रवक्ता थे कि महिलाओं को सामने आना चाहिए और अपनी उपस्थिति का एहसास कराना चाहिए।

डॉ। शबिस्ताँ गफ्फार के अनुसार, मिर्जा साहब महिलाओं की शिक्षा और उनके सशक्तिकरण को लेकर हमेशा चिंतित रहे। डॉक्टर शबिस्ताँ गफ्फार, पूर्व अध्यक्ष, कमेटी ऑन गर्ल्स एजुकेशन, राश्ट्रीय आयोग, अल्पसंख्यक शैक्षिक संस्थान, भारत सरकार आगे बताती हैं कि ह्यमिर्जा साहब लैंगिक समानता में विष्वास रखते थे। दरअसल, महिलाओं के सम्मान को वह सबसे अधिक प्राथमिकता देते थे। महिलाओं के सम्मान के मामले में बेग परिवार का जवाब नहीं है, जहाँ हर महिला सदस्य का बेहद सम्मान किया जाता है और उन्हें विशेष सुविधाएं प्रदान की जाती हैं।,

जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली में कार्यरत समाज शास्त्री, तरन्नुम फुक र्नि हाशमी ने बताया कि ह्यपंद्रह साल पहले, शादी के बाद मैं जब उनसे पहली बार मिली, तो वह मेरे सम्मान में अपनी जगह से उठ खड़े हुए, रसोई में गए और अपने हाथों से मेरे लिए चाय बनाकर ले आए। उन्होंने इतने प्यार से मुझे चाय पेश की कि उनकी इस विनम्रता और सम्मान से मैं बहुत प्रभावित हुई। मैंने ऐसा आदमी पहले कभी नहीं देखा, जो जीवन भर महिलाओं की इतनी इज्जत करता रहा।,

मिर्जा फरीदुल हसन बेग ने समाज को कई सुंदर चीजें प्रदान कीं। वह खुद महिलाओं का दिल से सम्मान करते थे और अपने बच्चों को भी उन्होंने यही बातें सिखाईं। तरन्नुम फुर्कान हाशमी, जिन्हें प्यार से मिर्जा साहब ने एक बार ष्प्रियंका गांधीष् कहकर पुकारा था, आगे बताती हैं कि ह्यइस परिवार की अनोखी बात, जिस पर वह गर्व कर सकता है, यह है कि यहाँ महिलाओं का स्थान सबसे ऊँचा है, जो कि कहीं और देखने को नहीं मिलता।,

मिर्जा फरीदुल हसन बेग अपनी पत्नी नूर जहाँ खानम के साथ नौजवानी के दिनों मे

पत्नी का सहयोग

मिर्जा फरीदुल हसन बेग को अपने परिवार से संबंधित लोगों, अपने नौकरों, बुजुर्गों, दोस्तों और समकालीन लोगों के बीच एक विशेश स्थान मिला। वे सभी को प्रिय थे। उनके दोस्त उनके गाइड बन गए, जबकि परिवार के सदस्य उन पर गर्व करते थे। उनकी पत्नी नूरजहाँ खानम ने घरेलू जिम्मेदारियों से उन्हें मुक्त कर दिया था। वह अपना सारा ध्यान घरेलू कार्यों पर लगातीं और अपने पति तथा बच्चों की हर तरह से खयाल रखतीं। ऐसा भी समय आया, जब बेग साहब की आय बहुत सीमित हो गई। अधिकतर उनकी जेब में एक भी पैसा नहीं होता। इसके बावजूद उनके अंदर दया तथा आतिथ्य की भावना कूट कूटकर भरी हुई थी। यह उनके आचरण का एक हिस्सा था। उनकी पत्नी ने मुष्किल घड़ी में भी परिवार का भरपूर साथ दिया और कभी किसी प्रकार का गिला-शिकवा नहीं किया।

ह्यउन्हें वेतन से जितना भी पैसा मिलता था, ला कर मेरे हाथ पर रख देते थे। मैं

काफी संभल कर उसमें से खर्च करती, साथ ही कुछ पैसे बचाकर रख भी लेती थी। इन पैसों से आकस्मिक स्थिति से निपटने में काफी मदद मिलती थी। दरअसल, मेरे माता-पिता ने जितने भी कपड़े मुझे दिए थे, मैंने बहुत बाद में जाकर उन्हें इस्तेमाल किया और अपने पति से कभी भी कोई माँग नहीं की।, यह सारी बातें मिर्जा फरीदुल हसन बेग की पत्नी नूरजहाँ खानम ने बताईं, जिनकी शादी 1961 में हुई थी और जो मिर्जा साहब के संघर्श भरे जीवन में, वित्तीय बदहालियों के बावजूद जीवन व्यतीत करती रहीं और उम्मीद का दामन कभी अपने हाथ से नहीं छोड़ा। और आखिरकार वह दिन भी आया, जब ईष्वर की कृपा हुई और पूरा परिवार खुशहाल जीवन व्यतीत करने लगा।

इस संघर्श की कहानी विस्तार से बताते हुए नूरजहाँ खानम आगे कहती हैं, ह्यमैं जब भी उनसे उनके काम के बारे में पूछती, तो वह मुझसे अपने कामों के बारे में पूछने या उसमें हस्तक्षेप करने से मना कर देते। इस प्रकार के व्यवहार से हमारे विवाहित जीवन में कई समस्याएं पैदा हुईं, लेकिन चूँकि मैं एक अच्छे और खाते-पीते परिवार से आई थी, इसलिए मैंने सब कुछ संभाल लिया। शादी में मुझे जो भी कपड़े मिले थे, मैंने उन सभी का उपयोग बाद के दिनों में किया और अपने पति से कभी कुछ नहीं माँगा।,

मर्जा फरीदुल हसन बेग पत्नी नूर जहाँ खानम के साथ दुबई की यात्रा के दौरान

सादा जीवन, बड़ी सोच

मिर्जा फरीदुल हसन बेग का लाइफ-स्टाइल सादगी भरा था, जिसमें आपका स्वभाव और सफाई दोनों शामिल थी। उन दिनों में भी, जब वे वित्तीय संकट के दौर से गुजर रहे थे, तब भी वह साफ सुथरा और अच्छा वस्त्र पहने रहते। उन्हें देखकर कोई भी उनकी अंदर कोई त्रुटि नहीं ढूँढ पाया, न ही कभी किसी को उनकी हालत देखकर तरस आया।

मिर्जा जफर बेग की सुपुत्री, अलीजा बेग अपने विचार इन शब्दों में व्यक्त करती हैं, ह्यदादाजी अपनी साज-सज्जा को लेकर काफी संवेदनशील थे और हमेशा सम्मोहक दिखना चाहते थे। वह अपने चेहरे पर झुर्रियां नहीं देखना चाहते थे। इसलिए, वे अक्सर एलुवीरा लगाते, ताकि चेहरा चमकता रहे। दादा पूरी तरह खुश-मिजाज और शांतिप्रिय थे। वह अपने आप को ही नहीं, बल्कि दूसरों को भी स्मार्ट और रोबदार देखना चाहते थे।,

मिर्जा साहब की बहू, सफिया कमरुल हसन बेग के अनुसार, पिताजी काफी स्मार्ट और सुंदर व्यक्ति थे, जिन्हें देखकर लोग तुरंत आकर्शित हो जाते। डैडी व्यक्तिगत साफ-सफाई पर हमेशा ध्यान देते और बनाव-सिंगार से कभी समझौता नहीं करते थे। वे अपनी त्वचा को चमकाने के लिए एलुवीरा का इस्तेमाल करते थे। सलमा मौसी (इरम की माँ) उन्हें अच्छी क्वालिटी का एलुवीरा भेजितीं, जिसके बारे में वह कहते कि यह सलमा का करिष्माई एलुवीरा है। एलुवीरा का उपयोग वह केवल अपने चेहरे को ही चमकाने के लिए नहीं करते थे, बल्कि अपनी पत्नी की त्वचा पर भी लगाते थे। उनका चेहरा हमेशा चमकता रहता था, दाँत पूरी तरह से स्वक्ष, मजबूत और चमकते रहते।,

डॉ। विशाली कक्कड़ मेहता कहती हैं, ह्यमैंने कभी भी ऐसे पति को नहीं देखा, जो अपनी पत्नी के सौंदर्यीकरण में भी उतनी ही रुचि लेता हो। वह हमेशा क्लीन-शेव रहते, बालों में तेल डाल कर कंघियाँ की हुई होतीं। उनकी साफ-सफाई की एक खास बात यह भी थी कि उन्होंने अपने शरीर पर कभी कोई सुगंधित पदार्थ नहीं लगाया, और हमेशा साफ कपड़े पहने रहते। मेरे लिए वह एक शानदार आदमी थे, जो शरीर की सफाई पर पूरा ध्यान देते। वह उन लोगों से बड़ी घृणा करते थे, जो अपनी साज-सज्जा को लेकर बेपरवाह होते और उस पर ध्यान नहीं देते थे। ष्दाढ़ी बड़ी हो तो हजामत बनाइए, दोनों को फिर मिला के सारंगी बजाइयेष्, वह अक्सर यह लाइनें गुनगुनाते रहते, ताकि सामने वाले को यह एहसास हो जाए कि उसकी गंदी शक्ल व सूरत से दूसरों को परेशानी हो रही है। बेग साहब और उनकी पत्नी को फिजियो-थेरैपी कराने के लिए मैं रोज शाम को उनके घर जाती, जहाँ मैं उन्हें सदैव ऐक्टिव लाइफ स्टाइल गुजारते हुए पाती।,

मिर्जा फरीदुल हसन बेग चीन से सफल क्रियो-सर्जरी कराके लौटने के बाद अपने पोत-पोतियों के साथ

प्यारे दादा/नाना

मिर्जा फरीदुल हसन बेग ने जहाँ एक ओर जीवन के गंभीर मुद्दों को हल करने में अपनी तेज दिमागी का प्रदर्षन किया, वहीं दूसरी ओर परिवार के कम उम्र लोगों के साथ अपार करूणा और प्यार भी दिखाया। परिवार के प्रत्येक सदस्य के साथ उनका एक खास रिष्ता हुआ करता था।

वास्तव में, परिवार के हर छोटे सदस्य ने, चाहे वह फिजा बेग हों, हिरा बेग, अबरार बेग, सारा बेग, इफरा बेग, हम्दी बेग, अलीजा बेग, अजहान बेग, हमजा बेग, ताहा बेग, सौम्या गुप्ता, काव्या गुप्ता, हयात खान या अदीबा खान हों, सभी ने उनके साथ बड़े मजे किए। वह उनमें से प्रत्येक को निजी, विषेश और खुष रखने के लिए किसी भी हद तक चले जाते थे। चाहे वह पैसे का मामला हो, भावनाओं का या फिर किसी और प्रकार की सहायता, हर मायने में वह हम सबके प्यारे दादाध्नाना थे।

उनकी समस्याओं को हल करना और बेहतर भविश्य के लिए उन्हें तैयार करना, दादा की सबसे बड़ी प्राथमिकता थी। उन्होंने हरेक की समझ को पहचान कर उसे एक विषेश नाम दिया था।

मिर्जा साहब की पोती सारा बेग, जो उनके सबसे बड़े बेटे मिर्जा षम्सुल हसन बेग की सुपुत्री हैं, कहती हैं, ह्यदादा मुझे ष्आर्किटेक्टष् पोती कहते थे, क्योंकि मैं आर्किटेक्चर में अपना करियर बनाना चाहती थी और वह भी मुझे ऐसा ही देखना चाहते थे। कॉलेज खत्म होने के बाद, मैं लगभग हर दिन दादा से मिलने जाया करती थी। अगर कभी मैं अपने सिर पर हाथ रखकर बैठी होती, तो वे मेरे पास आते और पूछते कि क्या मुझे किसी चीज की जरूरत है। अक्सर मैं उन्हें अपनी परेषानी के बारे में न भी बताती, तो वह मेरी जरूरत को भाँप लेते। मैंने उन्हें केवल दूसरों के लिए जीवन बिताते हुए पाया।,

सारा बेग के भाई हम्दी बेग एक मजेदार घटना का जिक्र करते हुए कहते हैं, ह्यएक बार मेरे माता-पिता उमरा (मक्क-मदीना की तीर्थ-यात्रा) के लिए गए हुए थे। उनकी अनुपस्थिति में मुझे उनकी बड़ी याद आ रही थी और मैं खुद को अकेला महसूस कर रहा था। दादाजी को मेरी इस परेषानी का पता चल गया, तो उन्होंने मुझसे पूछा कि मुझे क्या चीज परेषान कर रही है। उन्होंने प्यार से मुझे गले लगाया और परिस्थितियों का सामना करने के बारे में बताया। उनके इस सुझाव का मेरे ऊपर जादुई असर हुआ और कुछ ही मिनटों के भीतर मैं ठीक हो गया।,

सौम्या गुप्ता बताती हैं कि यदि नाना (मिर्जा साहब) उनके जीवन में न होते, तो उनके अंदर इतनी विनम्रता न होती, जितनी कि आज है। मिर्जा साहब की सबसे बड़ी बेटी, निषात गुप्ता की पुत्री, सौम्या गुप्ता कहती हैं, ह्यलोग अपने जीवन में सुपर मैन, स्पाइडर मैन या फिर ऐसी ही कोई बड़ी हस्ती बनना चाहते हैं, लेकिन मैं अपने नाना जैसा बनना चाहती हूँ, जिन्होंने मुझे सबसे पहले इंसान बनना सिखाया। उन्होंने हमें धार्मिक होने और धर्मनिरपेक्ष होने का अंतर बताया। धार्मिक व्यक्ति के रूप में आप अपने धर्म में विष्वास करते हैं, लेकिन एक धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति के रूप में आपका विष्वास केवल अपने धर्म में ही नहीं होता, बल्कि आप दूसरों के धर्मों का भी सम्मान करने लगते हैं।,

सौम्या आगे कहती हैं, ह्यआज की दुनिया में, जहाँ चारों ओर बेईमानी ही बेईमानी है, विभिन्न प्रकार की समस्याएं हैं, ऐसे में उन्होंने कैसे सच्चाई का रास्ता अपनाया, यह वास्तव में सराहनीय है।,

मिर्जा फरीदुल हसन बेग को किस चीज ने सुलझा हुआ इंसान बनाया, इसके बारे में बताते हुए निशात गुप्ता की छोटी बेटी, काव्या गुप्ता कहती हैं, ह्यउनका ऐपरोच पूरी तरह आधुनिक था, जिसने उन्हें सुलझा हुआ इंसान बनाया। चीजों को प्रतिक्रिया के रूप में सीधे-सीधे ठुकराने के बजाय, वह हमेशा उसकी अच्छाइयों और बुराइयों को परखते थे, फिर कोई रास्ता निकालने की कोशिश करते थे। वह एक सुलझे हुए आदमी थे और हमारे साथ बिना किसी झिझक के सामान शेयर करते थे।,

मिर्जा साहब के आचरण की एक और खूबी उनके द्वारा अन्य धर्मों का सम्मान करना भी था। काव्या कहती हैं, ह्यउन्होंने हमें सिखाया कि सोच की स्वतंत्रता क्या होती है। मुझे इस बात पर भी गर्व है कि उन्होंने मेरी मम्मी की शादी अपनी बिरादरी और धर्म से बाहर की, जिसके बारे में दो दशक पहले सोचना भी लगभग नामुमकिन था।,

फिजा बेग के अनुसार, मिर्जा साहब ऐसे व्यक्ति थे, जो समय से पहले पैदा हो गये थे। मिर्जा साहब के बेटे मिर्जा कमरुल हसन बेग की बड़ी बेटी, फिजा बेग कहती हैं, ह्यवह (दादा) चाहते थे कि बच्चों के सामने सारी चीजें परोस दी जाएं, ताकि वे खुद ही उनमें से अपने लिए चुन सकें। वे नहीं चाहते थे कि दूसरों के जीवन में कोई हस्तक्षेप करे। उन्हें बच्चों की समझ पर पूरा विष्वास था कि वह अपना रास्ता स्वयं ही ढूँढ लेंगे। जब यहाँ डोमिनोज खुला, तो वह हम बच्चों को वहाँ पीज्जा खिलाने ले जाया करते थे। बच्चे जब पीज्जे का आनंद ले रहे होते, तो वे उन्हें फास्ट फूड के लाभ और साइड इफेक्ट के बारे में भी बताते रहते।,

फिजा बेग की छोटी बहन, हिरा बेग कहती हैं, ह्यदादा ने मेरी हर तरह से मदद की। उन्होंने मेडिकल प्रोफेशन को अपनाने और डॉक्टर बनने के लिए मुझे प्रेरित किया। एक बार मैं मम्मी से नाराज हो गई थी और गुस्से से मैंने दरवाजे को जोर

से पटक दिया। मम्मी ने क्रोध में आकर मुझे थप्पड़ मार दिया। दादी ने यह बात दादा को बता दी कि बहू (मेरी मम्मी) ने मुझे मारा है। दादा को बर्दाष्त नहीं हुआ और वे काफी नाराज हो गए। मुझे मनाने के लिए वे तुरंत आइसक्रीम ले आए और तब तक इंतेजार करते रहे, जब तक मेरे चेहरे पर मुस्कान नहीं आ गई। वह जज्बातों का बहुत ध्यान रखते थे।,

अच्छे करियर के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करने के अलावा, मिर्जा साहब उनके चेहरे पर मुस्कान लाने की भी हमेशा कोशिश करते थे। मिर्जा साहब की सबसे छोटी साली, रुबाब खान, जो एक डिजीटल एनालिटिक हैं और बैंकिंग ग्राहकों के लिए काम करती हैं, बताती हैं कि ह्यएक बार किसी का बर्थडे मनाया जा रहा था। अचानक उन्होंने देखा कि गली के दो बच्चे बाहर झाँक रहे हैं और केक काटने के कार्यक्रम को लालच से देख रहे हैं। परिवार के सदस्यों और वहाँ उपस्थित अन्य मेहमानों की कोई परवाह किए बिना, वह चुपचाप उठे और बाहर जाकर उन बच्चों को अपने साथ अंदर ले आए। जष्न में उन बच्चों को भी शामिल कर लिया गया, उन्हें केक और खाने के अन्य सामान दिये गए। उन बच्चों को बड़ा मजा आया और उनके चेहरे खुशी से चमक उठे। उनके इस करुणा भाव को देखकर मैं काफी प्रभावित हुई कि उन्होंने अपने स्टेटस की भी परवाह नहीं की और गली के बच्चों के चेहरे पर मुस्कान लाने के लिए अपने दिल की बात मानी।,

मिर्जा साहब की सबसे छोटी बेटी, सबा खान के सुपुत्र हयात खान एक घटना का जिक्र करते हुए कहते हैं, ह्यमुझे एक घटना याद है, जब मेरे नाना ने मुझे बहुत अच्छा सुझाव दिया था। मैं फुटबॉल खेलने वाले एक समूह का हिस्सा हुआ करता था। कुछ लड़कों ने ईर्ष्या के मारे फुटबॉल खेलने के मैदान के चारों ओर बाड़ लगाकर हमारे खेल में बाधा पैदा करने की कोशिश की। काफी परेशान हुआ, इसलिए मैंने यह बात नाना को बताई। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं खुद उन लोगों से जाकर मिलूँ, उन्हें फुटबॉल के एक अच्छे मैदान के क्या लाभ हैं, यह बताऊँ और यह भी बताऊँ कि हमें हरे-भरे मैदान की देखरेख कैसे करनी चाहिए। मैंने दोस्ताना तरीका अपनाते हुए वही किया, जो नाना ने मुझसे कहा था। इसने वास्तव में जादू की तरह काम किया और उन लड़कों ने वह बाड़

हटा ली, जो उन्होंने हमें खेल को रोकने के लिए तैयार की थी।,

हयात की बहन अदीबा खान कहती हैं, ह्यएक बार परीक्षा में मुझे बहुत कम अंक मिले। इसकी वजह से घर पर सभी ने मुझे डाँट पिलाई, लेकिन नाना ने मुझे समझा और उल्टे उन लोगों को डाँटा। नाना के शब्द मेरे लिए इतने उत्साहजनक साबित हुए कि मैंने कड़ी मेहनत की और अगली बार परीक्षा में अच्छे अंक लेकर आई।,

हमजा बेग के अनुसार, मिर्जा साहब बच्चों को हमेशा प्रेरित करते थे, चाहे काम कितना ही कठिन और जटिल क्यों न हो। मिर्जा अहमर बेग के सुपुत्र, हमजा बेग बताते हैं, ह्यएक बार मुझे एनसीसी के एक टूर पर जाना था। मुझे अपने जूते साफ करने और अन्य कार्यों को अपने हाथों से करने में शर्म आ रही थी। इसी पशोपेश की स्थिति में, मैंने दादा से परामर्श किया। उन्होंने मुझे इस प्रकार के टूर के लाभ बताए और सलाह दी कि मैं अपने काम खुद करूँ। मैंने उनकी सलाह का पालन किया और मेरे आष्चर्य की सीमा न रही कि इसका परिणाम बहुत ही अच्छा रहा। मैंने अपने मन में कोई भी नकारात्मक विचार पैदा किए, सारे काम स्वयं ही किये, जिससे इस टूर में मुझे बड़ा मजा आया।,

हमजा बेग के चचेरे भाई-बहनों में सबसे छोटी, अलीजा बेग दादा को सुलझा हुआ इंसान बताती हैं, जिन्होंने उनको जीवन में विनम्रता सिखाई। जफर बेग की सुपुत्री, अलीजा बेग कहती हैं, ह्यएक बार बंदर का नाच दिखाने वाला नट हमारे क्षेत्र में आया। हर आदमी उस प्रशिक्षित बंदर का तमाशा देखने को बेताब था। कुछ ही दूरी पर कुछ गरीब बच्चे खड़े थे, क्योंकि उनके पास पैसे नहीं थे, इसलिए वह बंदर का तमाशा देखने में असमर्थ थे। हम तो बंदर के नाच का मजा ले रहे थे और उन बेचारे बच्चों को भी देख रहे थे। दादा ने जब यह देखा तो वे उन बच्चों के पास गए और उन्हें कुछ पैसे दिए, जिससे वह भी तमाशा का आनंद उठाने लायक हुए।,

अलीजा आगे कहती हैं, ह्यमेरा चचेरा भाई हमजा, अक्सर लापरवाही से चप्पल उलटे पैर में पहन लेता था। मैं उसकी इस लापरवाही को बर्दाष्त नहीं कर पाती थी और हमेशा उसे टोकती और उसकी गलती को सुधारती थी। दादा ने हमजा

से कहा कि ष्लीजोष इतना छोटा होकर भी अपने काम ठीक ढंग से करता है, जब कि हमजा उससे बड़ा होने के बावजूद अपनी काम ठीक ढंग से नहीं कर सकता। दादा की इस बात पर उसे शर्म आई और फिर उसने कभी गलती नहीं की।,

बकौल इफरा बेग, ह्यदादा ने हर तरह से मेरी मदद की और हमेशा की। वह बहुत ही आधुनिक और खुले दिमाग के व्यक्ति थे। जब कभी मुझे यह लगता कि मैं जो कुछ करना चाहती हूँ, मेरे माता-पिता उसकी अनुमति नहीं देंगे, तो मैं दादा से अनुमति ले लेती थी। इसके बाद मुझे किसी और से अनुमति लेने की जरूरत नहीं होती थी।,

मिर्जा अबरार बेग कहते हैं, ह्यउनके अंदर विनम्रता और करुणा इस हद तक थी कि वह सड़क से कचरा उठाकर कूड़ेदान में डालने से शरमाते नहीं थे। वेटिकन सिटी में हम एक गिरजाघर में गए, जहाँ पर चर्च प्लाजा के फर्श पर सिगरेट के टुकड़े पड़े हुए थे। दादा ने उसे उठाकर डस्टबिन में डाल दिया और ऐसा करते समय उन्हें जरा भी हिचक महसूस नहीं हुई। हमारे बीच आयु का एक बड़ा अंतर था, लेकिन मैंने इसे कभी महसूस नहीं किया। दादा ने मेरे माता-पिता को इस बात के लिए राजी किया कि वह मुझे नासा, अमेरिका में अपने स्कूल का प्रतिनिधित्व करने दें। हमने देश के अंदर या विदेश के जितने भी दौरे किए, उन सभी में दादा हमेशा हमारे साथ रहे, हमारे दोस्त की तरह।,

नूर जहाँ खानम अपने बेटे और बेटियों के साथ

विरासत के रखवाले

मिर्जा फरीदुल हसन बेग का व्यक्तित्व ऐसा था, जो मुष्किल से पाया जाता है। उनके शानदार आचरण पर नजर डालें, तो उनके अंदर जो मान-सम्मान था, वैसा लाखों में से किसी एक व्यक्ति में मिलता है। वह बहुत तेज दिमाग और बुद्धिमान व्यक्ति थे और हर समस्या की गहराई तक आसानी से पहुँच जाते थे। उनका दिल इतना नरम था कि वह हृदय की गहराई से पूरी मानवता के लिए चिंतित रहते। वह हर एक के कल्याण के बारे में सोचा करते। किसी को हानि पहुँचाने की बात उनके दिल व दिमाग के किसी भी कोने में मौजूद नहीं थी। ऐसा खयाल कभी उनके मन में आया ही नहीं। जिन लोगों ने उन्हें तकलीफ पहुँचाई, उनके साथ भी वह धैर्य और प्यार से पेश आते थे। उनका बात करने का अंदाज इतना प्यारा था कि लोग स्वयं ही उनके पास खिंचे चले आते थे।

बेग साहब हमेशा परिपक्वता और सौंदर्य की तलाश में रहे। इसकी लगातार खोज ही उनके जीवन की सुंदरता थी। सौंदर्य और परिपक्वता की खोज ने ही

बागों और फूलों में उनकी रुचि बढ़ाई और वह चित्रकारी, संगीत और लेखन कला के सर्वश्रेश्ठ नमूनों की हमेशा सराहना करते।

बेग साहब का धार्मिक विष्वास किनारा करने वाला या सबसे अलग हटकर नहीं था, बल्कि उनका दृढ़ विष्वास था कि अल्लाह की बादशाहत और उसकी दया सभी दुनिया के लिए है। इसके अलावा, उनका धार्मिक विष्वास कट्टरपंथ या उग्रवाद पर आधारित नहीं था। उनके ध्यान और गतिविधि का केंद्र एक एकेला व्यक्ति था। वह अकेला व्यक्ति, जो अपने कर्मों के लिए जिम्मेदार है, इस दुनिया में और यहाँ के बाद भी। हालाँकि, बेग साहब ने इस बात पर जोर दिया कि यह दुनिया इंसानों के लिए कर्म-स्थली है, जहाँ वह व्यापक मानव समाज का हिस्सा रहते हुए नैतिक और आध्यात्मिक रूप से विकास कर सकता है। इसलिए, उन्होंने अपने धार्मिक कर्तव्य के रूप में सामाजिक पुनर्वास और सार्वजनिक कल्याण के मिशन पर काम करना शुरू किया। वह एक मुसलमान थे, जो कुरआन की शिक्षाओं और पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों को व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन की समस्याओं के लिए सबसे अच्छा इलाज और समाज के नैतिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य का अच्छा स्रोत मानते थे।

इतने गहरे अर्थ और जीवन के उद्देष्य को समझने के बाद, उनकी इच्छा यही थी कि उनके बच्चे (चार बेटे और दो बेटियाँ) भी उनके द्वारा बनाई गई इस विरासत को आगे ले जाएं, ताकि वे भी एक सार्थक जीवन जी सकें और उदारता के काम को अंजाम देते हुए, वह भी अपने पिता की तरह सफलता प्राप्त कर सकें और अल्लाह की कृपा से इस दुनिया और आखिरत में भी आनंद ले सकें।

रामेष्वर नाथ श्रीवास्तव के अनुसार, मिर्जा साहब जीवन के हर क्षेत्र में कामेयाब थे। ह्यमिर्जा साहब ने अपने बच्चों को एक स्वस्थ वातावरण प्रदान किया। उन्होंने अपने जीवन में ही उनको अपने पैरों पर खड़ा किया। उन्होंने अपने बच्चों को काम करने और आगे बढ़ने का भरपूर मौका दिया, जो कि उनकी कड़ी मेहनत और क्षमता पर आधारित था। उन्होंने उनको सिखाया था कि ष्हरकत में बरकत है।,

मिर्जा शम्सुल हसन बेग

जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली से सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की

मुझे घर पर पालतू जानवरों और चिड़ियों को रखने का शौक था। इसीलिए मुझे एक पिंजड़े या पालतू जानवरों के लिए एक घर की जरूरत थी। इसके लिए एक बार मैं चुपके से जामिया कैंपस से लोहे की एक छड़ उठा लाया। शाम को डैडी की नजर उस पर पड़ी, तो उन्होंने मुझसे इसके बारे में पूछा। मैंने सच बोलते हुए कहा कि मैं इसे जामिया मिलिया इस्लामिया कैंपस से उठा कर लाया हूँ। वह क्रोध से भर गए और मेरी पीठ पर जोर से थप्पड़ मारा। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं इसे जहाँ से उठा कर लाया था, वहीं ले जाकर रख दूँ। यह एक बड़ा सबक था जो थप्पड़ खाके मिला, लेकिन उसने मुझे यह प्रतिज्ञा लेने पर मजबूर कर दिया कि मैं जीवन में कभी कोई सामान न चुराऊँ।

एक बार मुझे अपने घर के आसपास बढ़ती झुग्गियों की संख्या से काफी परेशानी होने लगी। इन झुग्गियों को बार-बार गिरा दिया जाता था, फिर भी हर बार नई झुग्गियाँ बना दी जाती थीं। मुझे बहुत गुस्सा आया और मैंने गुस्से की हालत में कहा कि इन झुग्गियों में रहने वालों को जिंदा

जला देना चाहिए। डैडी ने यह सुन लिया और क्रोध में मुझसे कहा, ह्यऐसा लगता है कि तुम्हारे अंदर से मानवता की भावना मर चुकी है।ह्न

चूँकि मैंने इंजीनियरिंग की पढ़ाई की थी, तो पाँच साल तक जूनियर इंजीनियर के रूप में काम करने के लिए मैं लीबिया चला गया। जब देश वापस आया, तो माँ ने मुझसे कहा कि डैडी एक बैंक बनाना चाहते हैं, लेकिन इस रास्ते में उन्हें चुनौतियाँ और समस्याएं आ रही हैं, जिसकी वजह से वह काफी परेशान हैं।

मैंने इसके बारे में पूछताछ की और चाहा कि इस काम में उनकी मदद करूँ। उन्होंने मुझे प्रोसेसिंग और अन्य कार्यों को अंजाम देने की जिम्मेदारी सौंपी, खासकर प्रोजेक्ट के लिए अनुमति और मंजूरी इस तरह प्राप्त करने के लिए कहा, जिसमें कम से कम पैसा खर्च हो।

सावधानी के तौर पर, उन्होंने मुझे सरकार को टैक्स का पूरा-पूरा पैसा भुगतान करने को कहा और पानी, बिजली या सेवा से संबंधित सिस्टम में किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ करने से मना किया।

मेरे डैडी भरपूर जिंदगी जीते थे। मुष्किल दिनों में भी वह थोड़े बहुत अच्छे भोजन की व्यवस्था करते और परिवार के लिए जितना कुछ भी बेहतर हो सकता था, उसे करने की कोशिश जरूर करते थे। खाने के शौकीन होने के नाते, वे यह जानते थे कि स्वादिश्ट खाना कहाँ मिलता है। वह हर अच्छे अवसर पर परिवार के हम सभी लोगों को बाहर घुमाने ले जाते और हमारी छुट्टी मजेदार बनाने की हर संभव कोशिश करते थे।

मेरे पिता के एक दोस्त थे, जिनका नाम रजाउल हसन खान था, जिन्होंने मेरी माँ को मिर्जा साहब और उनके बीच आपसी रिष्तों को हसीन और सुखद बनाने का यह मास्टर फॉमूर्ला बताया था। उन्होंने कहा था कि यदि आप उन्हें खाना नहीं परोसेंगी, तब भी उन पर कोई फर्क.नहीं पड़ेगा, लेकिन यदि आपने उनके सामाजिक कार्यों में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया, तो आपकी शादीशुदा जिंदगी अभिशाप बन जाएगी। मेरी माँ ने उनकी सलाह मानी और डैडी को अपने सामाजिक कार्य करने की पूरी स्वतंत्रता प्रदान की।

मेरी बहन सबा, जब पूरी तरह बोलने योग्य हो गई, तो उन्होंने कहा कि यह

तुम्हारी माँ का साहस और बलिदान था कि गूँगी और बहरी होने के बावजूद सबा अब बोलने लगी है। इसमें मेरा कोई रोल नहीं है।

वे मुस्लिम समुदाय के लिए चिंतित थे और हमेशा कहा करते थे कि मुसलमानों के लिए भारत से बेहतर कोई जगह नहीं है। आप जिस देश में रहते हैं, आपको वहाँ के कानून का पालन करना चाहिए। आप कानून को बदलने की लड़ाई तो लड़ सकते हैं, लेकिन कानून तोड़ नहीं सकते।

मेरे डैडी जब तक जीवित रहे, सुबह में जल्दी सो कर उठना, फजिर की नमाज पढ़ना, अपने माता-पिता को व्यायाम कराना, उनका शुगर चेक करना, उन्हें चाय देकर वापस आना, यही मेरा दैनिक रुटीन था। अब जब कि वह हमारे बीच नहीं हैं, अपनी माँ के साथ भी इसी दिनचर्या पर कायम हूँ। हालाँकि, उन्होंने अपने बच्चों को एक सार्थक जीवन जीने के लिए प्रशिक्षित किया था, लेकिन मुझे उनकी बहुत याद आती है।

मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ कि वह आखिरत में उन्हें एक उच्च और मधुर स्थान प्रदान करे।

आमीन!

सादिया शम्सुल हसन बेग

अर्थशास्त्र में मास्टर्स,
जामिया कोऑपरेटिव बैंक के प्रारंभिक चरण में अपना योगदान दिया

ढूँढोगे अगर मुल्कों मुल्कों,
मिलने के नहीं नायाब हैं हम

कुछ रिष्ते इतने खूबसूरत होते हैं जिनको लफ्जों में बयान करना मुष्किल होता है, ऐसा ही एक रिष्ता मेरा और डैडी का था जो कि मेरे ससुर थे लेकिन उन्होंने मुझे हमेशा एक पिता की तरह प्यार दिया और एक बेटी की तरह मेरा ख्याल रखा। जब वह मेरे घर मेरे रिष्ते के लिए अम्मी के साथ आए और वापस जाते हुए उन्होंने जो अपना शफ्कत (स्नेहपूर्ण) भरा हाथ मेरे सर पर रखा वो मुझे आज भी याद है, और उनकी यह शफ्कत हमेशा कायम रही, चाहे वह मेरे घरेलू मामलात हों या बच्चों से संबंधित हो या मेरे करियर से।

जब मेरी शाादी हई उस समय जामिया कोआपरेटिव बैंक की शुरूआत का काम चल रहा था। क्योंकि मैं अर्थशास्त्र की छात्रा थी और बैंक का काम मेरे लिए दिलचस्पी भरा था। इसलिए मैंने भी अपने योगदान की मंजूरी मांगी तो उन्होने बहुत खुशी से अपनी मंजूरी दे दी। मैं बैंक के लाइसेंस के लिए अपने पति के साथ रिजर्व बैंक और कोआपरेटिव सोसाइटी के दफ्तर भी जाती थी।उनके अंदर इंसान की कुशलता को जानने का हुनर था वह कहते थे कि ह्यह्यहर इंसान में एक खूबी होती है, हमें उसे समझना चाहिए और उसी के अनुसार उससे काम

लेना चाहिए,, ।वह लोगों को खुद मुख्तार ;मसि कमचमदकद्ध बनाने में यकीन रखते थे। उनका मानना था कि आदमी को अपनी रोजी रोटी कमाने और समाज को फायदा पहुँचाने के लायक होना चाहिए।

वह लड़कियों की पढ़ाई पर बहुत जोर देते थे और वह चाहते थे कि लड़कियाँ सिर्फ.घरेलू कामों में ही आगे न रहें बल्कि समाज के हर क्षेत्र में अपनी पढ़ाई के द्वारा आगे रहें। उनकी इसी सोच की वजह से जब मैने उनसे अपनी आगे पढ़ने की ख्वाहिश का जिक्र किया तो उन्होंने खुद जाकर मेरा एडमिशन करवाया। जबकि उस समय मेरे दो जुड़वाँ बच्चे थे जो च्संलै बीववस जाते थे। इसी तरह उनका सहयोग मुझे जिंदगी में बराबर मिलता रहा।

वह कहते थे ह्यह्यहरकत में बरकत है,, जब आप किसी काम को करने की सोच रखेंगे, उसे शुरू करेंगे तभी वह पूरा होगा इसीलिए उनके जरिए किए गए काम आज हमारे सामने हैं। इसी तरह वह अपने छोटे छोटे जुमलों से हमें जिंदगी बिताने के बड़े बडे नुस्खे सिखा दिया करते थे।

डैडी को शेरो शायरी का बहुत शौक था अक्सर पूरा परिवार एक साथ बैठकर अम्मी डैडी की शेरो शायरी का लुत्फ उठाता था। उनकी बीमारी से एक साल पहले मैं रोज उनके साथ बैठकर कुछ घंटे काम किया करती थी और उनसे उनके काम करने का अंदाज सीखने की कोशिश करती थी। चाहे वह उनका सामाजिक काम हो, शिक्षा का हो या बैंक की बारीकियाँ हों, वह एक गुरू की तरह मेरे हर प्रष्न का जवाब देते थे लेकिन मेरा यह ख्वाब अधूरा रह गया और वह चुपचाप हमें छोड़ कर चले गए।

मेरा परिवार संयुक्त परिवार का एक बेहतरीन उदाहरण है जिसका पूरा श्रेय डैडी को जाता है। उन्होंने कभी बहू बेटी में फर्क नहीं किया और मैं यह कह सकती हूँ कि उनके चार बेटे और दो बेटियाँ नहीं बल्कि चार बेटे और 6 बेटियाँ हैं।

मैं उनके लिए दिल से दुआ करती हूँ कि उनकी नेकदिली और नेक कामों के लिए खुदा उनको जन्नत में बुलंद मकाम दे। आमीन

मिर्ज़ा क़मरुल हसन बेग

जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली से सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की

दुनिया तो मिट न जाएगी तेरे बगैर भी
लेकिन यह क्या कि तेरी जरूरत भी कम नहीं

दुनिया के सामान्य बच्चों की तरह, मैं भी एक ऐसा बच्चा था, जो जीवन के रहस्यों पर से खुद ही पर्दा उठाना चाहता था, ताकि उसके बेचैन दिल को इतमीनान हो सके। लेकिन चूँकि मुझे अपने आसपास की चीजों का अधिक ज्ञान नहीं था, इसलिए मुझे एक ऐसे गाइड, सार्थी, दोस्त और राहबर की जरूरत थी, जो मेरा हाथ पकड़ ले और अपनी अनुभवी आँखों से मुझे दुनिया की सैर कराए।

मैंने डैडी में ऐसा इंसान पाया। उन्होंने विभिन्न तरीकों से मेरी शिक्षा-दीक्षा की, कभी नरमी से तो कभी सख़्ती से। लेकिन उन्होंने जो भी तरीका अपनाया, वह मेरे ही सुधार के लिए था।

जब मैं बड़ा हो रहा था, उस समय मेरी दो बार जमकर पिटाई हुई। पहली घटना

उस समय की है, जब जाकिर बाग का निर्माण शुरू हुआ था। एक साहब पिताजी के पास आए और उनसे कहा कि बेग साहब, आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। आपको आने-जाने में दिक्कत पेश आ रही होगी, चलिए मैं आपको अपनी तरफ से एक कार भेज देता हूँ। डैडी ने जवाब देते हुए कहा कि उन्हें कोई परेशानी नहीं है। मैं बहुत छोटा था और उनकी बातचीत को बहुत ध्यान से सुन रहा था। मुझे उसके इस प्रस्ताव पर लालच आया, यह समझे बिना कि वह आदमी जाकिर बाग में एक फ्लैट हासिल करना चाहता है। वह साहब यही सोच रहे थे कि रिष्वत में कार देकर डैडी को उनके सिद्धांतों से डगमगाने में सफल हो जाएंगे।

मैंने डैडी से कहा कि यह इतना अच्छा प्रस्ताव है कि हम आसानी से कार प्राप्त कर सकते हैं। डैडी काफी नाराज हुए, क्योंकि वे पहले ही उसकी इस घिनौनी हरकत से काफी तंग आ चुके थे। अतः उन्होंने मेरी जमकर पिटाई की और शम्शेर भाई, जो कि मेरी फैमिली के एक सदस्य जैसे ही थे, उन्होंने आकर मुझे बचाया।

मुझे याद है, एक बार उन्होंने मुझसे कहा था, ह्यशिक्षा है तो बड़ा सोच सकते हो। जुनून है तो बड़ा काम कर सकते हो। लेकिन शिक्षा और जुनून दोनों हो, तो बड़े से बड़ा काम कर सकते हो।ष इन शब्दों को ध्यान में रखकर मैंने अपनी पढ़ाई पूरी की और इंजीनियर बन गया। मैंने अपनी माँ से अनुमति चाही, जिन्होंने व्यवसाय करने से संबंधित मेरे इरादे के बारे में डैडी को बताया। डैडी ने यह कहते हुए अपनी सहमति देने से इनकार कर दिया कि दुनिया में कोई भी बेईमानी किए बिना अपने व्यापार को नहीं चला सकता।

आखिरकार, उन्होंने बेदिली से मुझे आगे कदम बढ़ाने को कहा, लेकिन यह कहा कि मैं कोई भी काम उनका नाम लेकर प्राप्त न करूँ। मैंने उनसे वादा किया कि इस बात का मैं ध्यान रखूँगा।

हमने पूरी ईमानदारी के साथ मेहनत की। धीरे-धीरे हमारा काम खुद बोलने लगा और डैडी को भी इसके बारे में पता चला। वह बहुत खुश हुए और इस तरह मेरे ऊपर उनका विष्वास बहाल हुआ। मैं हमेशा डैडी को समस्याओं से घिरा

हुआ देखता, लेकिन वह इन समस्याओं को कभी अपने ऊपर हावी नहीं होने देते थे। चूँकि उनकी ट्रेनिंग सोशल वर्क में हुई थी, इसलिए स्थिति को बेहतर ढंग से नियंत्रित करना उनके लिए आसान था।

उनका मंत्र यही था कि ह्यपरेशानियों को ओढ़ो मत, बल्कि सॉल्यूशन ढूँढो, परेशानियों को इन्जोवाय करना सीखो।,

उन्होंने जब आवासीय सोसायटी का नाम जाकिर बाग रखा, तो स्पश्ट करते हुए उन्होंने कहा कि उद्यान विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों के एक सुंदर संग्रह के अलावा कुछ भी नहीं है, जिसे देखकर आँखों को राहत मिलती हो और जो मनुश्य के लिए लाभदायक हो। एक बाग की तरह ही उन्होंने पूरे ध्यान और परिपक्वता के साथ विभिन्न प्रकार के लोगों को यहाँ लाकर बसाया। डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, आईपीएस, आईएएस, व्यापारी, राजनीतिज्ञ, दक्षिणी और उत्तरी भारत के हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, अनुसूचित जाति। उन्होंने कहा कि अगर मुस्लिम केवल अपने ही धर्म के लोगों के साथ जीवन बिताते रहेंगे, छोटी और मलिन बस्तियों में रहेंगे, तो उनके दिमाग भी मलिन बस्तियों जैसे हो जाएंगे।

जाकिर बाग रहन-सहन का एक समग्र और बेहतर नमूना था। यह एक छोटे भारत की तरह था, जहाँ हर प्रकार के लोग रहते हैं।

एक बार मैं अपने दोस्त देवेंदर रावत, डैडी और मम्मी के साथ हैदराबाद की यात्रा पर गया। पूर्व की तरह इस यात्रा के दौरान भी, डैडी जब भी टैक्सी में बैठते, तो टैक्सी ड्राइवर से उसके पेशे के बारे में पता करते और यह पूछते कि क्या वह किराए पर टैक्सी चला रहा है या खुद उसका मालिक है। उन्होंने कई टैक्सी चालकों से यह बात पूछी और सभी ने यही कहा कि वह ड्राइवर नहीं है, बल्कि टैक्सी मालिक है। डैडी ने उनसे आगे पूछा कि उसने टैक्सी कैसे प्राप्त की। उन्हें जवाब मिला कि वहाँ कई सहकारी बैंक हैं, जो आसान किस्तों पर ऋण (लोन) प्रदान करते हैं। लोग अपनी टैक्सियों को फाइनेंस करवाते हैं, और कुछ वर्शों बाद उन वाहनों के मालिक बन जाते हैं।

इस घटना ने डैडी के मन में एक नए विचार को जन्म दिया। उन्होंने सोचना शुरू किया कि अगर यह सारी बातें हैदराबाद में संभव हैं, तो उसे दिल्ली में क्यों नहीं

किया जा सकता?

हम दिल्ली लौट आए। डैडी अगले ही दिन कोऑपरेटिव सोसायटी के कार्यालय में पहुँच गए। उन्होंने संबंधित क्लर्क से कहा कि उन्हें एक फार्म दे, ताकि वह एक बैंक बना सकें। फार्म के लिए उन्हें अगले 15 दिनों तक दौड़ना पड़ा। पन्द्रहवें दिन डैडी ने क्लर्क से कहा कि अगर तुम मुझे फार्म नहीं दे सकते, तो कृप्या बता दो कि फार्म कहाँ से मिलेगा? उसने कहा कि पूरे कार्यालय में एक भी फार्म नहीं है और पिछले 22 वर्शों में यहाँ नए बैंक के पंजीकरण के लिए एक भी आवेदन नहीं आया है।

कुछ हफ्तों तक यूँ ही दौड़ते रहने के बाद डैडी को अंततः एक फार्म दिया गया। उन्होंने इसे भर कर जमा कर दिया। पंजीकरण के नियमों के अनुसार, उस समय 20 लाख की शेयर पूंजी और 1000 सदस्यों की जरूरत थी, लेकिन जब लंबे समय के बाद हमारी बारी आई, तो नियम बदल गये है और अब हमें 60 लाख रुपये की शेयर पूंजी और 3000 सदस्यों का प्रबंध करना था।

तीन हजार सदस्यों को इकट्ठा करने में हमें 8-9 महीने लग गए और आखिरकार अक्टूबर 1995 में बैंक का पंजीकरण हुआ।

इन सभी कार्यों के अलावा, उन्होंने परिवार को भी पूरा समय दिया। वह मेरे चेहरे को आसानी से पढ़ लेते थे और जब भी उन्हें यह लगता कि मैं काम के दबाव की वजह से परेशान हूँ, तो वह मुझे तसल्ली देते और कहते कि परेशानी का वक्त गुजर जाएगा। इसीलिए बहुत ज्यादा उदास और निराश मत हुआ करो, बल्कि चुनौतियों को स्वीकार करो।

वह एक व्यावहारिक व्यक्ति थे। जब उन्हें अपने रोग का पता चला, तो उन्होंने उस समय चल रहे अपने सोशल प्रोजेक्टों पर तेजी से काम करना शुरू कर दिया। एक बार उन्हें कमजोर देखकर मैं रोने लगा। उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और कहा, ह्यइस दुनिया में कोई भी हमेशा के लिए नहीं आया। यह बात दिल में रखो। अल्लाह की चीज है, अल्लाह की अमानत है। अगर तुम मुझे सच में कुछ देना चाहते हो, तो जो चीज बनाई है, उनको अच्छे ढंग से चलाओ और जिस उद्देष्य से बनाई गई है, उस उद्देष्य को पूरा करो। जो गरीब

है, जिस जरूरत से आया है, उसकी जरूरत को पूरा करो। यदि कोई व्यापार करना चाहता है, उसकी मदद करो। अगर किसी लड़की की शादी होनी है, उसकी मदद करो। अगर कोई पढ़ना चाहता है, उसकी मदद करो।,

आज, जबकि वह हमारे बीच मौजूद नहीं हैं, मुझे उनकी बहुत याद आती है। लेकिन जल्द ही उनके शब्द मेरे कानों में गूँजने लगते हैं।

मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ कि उन्हें हर संभव तरीके से राहत पहुँचाए।

आमीन।

सफ़िया क़मरुल हसन बेग

मेरी षादी 1994 में हुई। उसी साल मेरे पिता का निधन हुआ था, लेकिन मुझे उनकी अनुपस्थिति का कभी एहसास नहीं हुआ, क्योंकि डैडी वहाँ मौजूद थे, जिन्होंने मेरे साथ अपनी बेटी जैसा बर्ताव किया। डैडी मुझे ष्छोटी बहूष् कहकर बुलाते। इस घर में पहले दिन ही मुझे बहुत आराम और विषेश सम्मान मिला, और यह सब डैडी की वजह से था, जो स्वयं किचन में गये और मेरे लिए नाष्ता बनाया, और इतनी गर्मजोषी और प्यार से मेरे सामने पेष किया, जैसे कोई पिता अपनी बेटी के लिए करता है।

वह इतने अच्छे इंसान थे। दरअसल, उनका विष्वास था कि अतिथि भगवान की तरह होता है (अतिथि देवो भवः)। हमारे घर में जो भी आता, वह हमेषा उसका ख़्याल रखते, उसकी सेवा करते। और, उन मेहमानों के प्रति अपना प्रेम, उनके लिए अपने हाथों से चाय बनाकर व्यक्त किया करते थे। उनके द्वारा बनाई गई स्पेषल चाय से हर कोई आनंदित होता।

केवल मेरा ही नहीं, बल्कि मेरे पूरे परिवार का ख़्याल उन्होंने अपने परिवार की

तरह रखा। जब मेरी बहन की षादी लग रही थी, तो वह वहाँ मेरे पिता की जगह पर गए और मेरे परिवार के प्रति उसी तरह प्यार का इजहार किया, जैसा वह अपने परिवार के साथ करते थे। मेरी छोटी बहन के लिए वह फरिषता समान थे। उनके मार्गदर्षन से वह न केवल एक आर्किटेक्ट बनी, बल्कि उनके लगातार मार्गदर्षन और प्रयासों से उसने इसमें दक्षता भी हासिल की। वह उसे नई जगहों पर लेकर जाया करते और समकालीन आर्किटेक्चर के बारे में भी बताया करते थे। और प्यार से उसे आर्किटेक्ट साहिबाष कहा करते थे।

उनका सोषल वर्क हालाँकि उनके लिए काफी महत्वपूर्ण था, लेकिन फिर भी अपने परिवार को उन्होंने कभी नजरअंदाज नहीं किया। वह इस बात को सुनिष्चित करते कि यदि हम में से किसी को कोई समस्या है, तो वह इस समस्या को हल करने की कोषिष करते तथा हमारी हर प्रकार से मदद करते थे।

वह एक हमदर्द इंसान थे। उन्हें अपने पोते-पोतियों, नाती-नतिनों से बहुत लगाव था। वह उनकी छोटी से छोटी सफलता पर भी उन्हें इनाम देते, उनकी सराहना करते और षुभकामनाएं व्यक्त करते। जिस दिन उन्हें अस्पताल ले जाया गया, उन्होंने अंतिम बार मेरी ओर हाथ हिलाया और अपने हाथों से मुझे आषीर्वाद दिया। उस समय मैं महसूस नहीं कर पाई थी कि यह उनका अंतिम आषीर्वाद और अंतिम सलाम है!

मैं अपनी पूरी जिंदगी ऐसे बड़े दिल वाले व्यक्ति से कभी नहीं मिली। उनके आचरण को षब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। मनुश्य दूसरों की सेवा करने के लिए पैदा होता है। उनकी दुआएं हमारे साथ हैं। हमें उनकी गर्मजोषी, प्यार और मोहब्बत की कमी महसूस हो रही है। मैं दुआ करती हूँ कि अल्लाह उन्हें स्वर्ग में उच्च से उच्च स्थान प्रदान करे। आमीन।

हजारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पे रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा

मिर्ज़ा ज़फ़र बेग

जाकिर बाग के निर्माण के समय, वहाँ बाँस का एक बड़ा गट्ठर खड़ा था। एक मजदूर इन बाँसों को हटा रहा था, तभी वह गट्ठर गिर गया, जिसमें दबकर उसकी मौत हो गई। वहाँ उपस्थित हर कोई घबरा गया कि मजदूर की मौत से भारी मुष्किल पैदा हो जाएगी। डैडी ने बड़े इतमीनान से सारी घटना को सुना, उसके बाद उस मजदूर के परिवार वालों को बुलाया और उनके लायक जो कुछ भी हो सकता था, वह सारी जरूरतें उनकी पूरी कीं। परिवार पूरी तरह संतुश्ट हो गया और इस तरह यह मामला रफा-दफा हुआ।

काम करने का यह तरीका, जहाँ एक जीवन के समाप्त हो जाने पर उसकी सही क्षतिपूर्ति कर दी जाए, वास्तव में सराहनीय था। मैंने इस प्रकार की गंभीर दुर्घटना का इतना विवेकपूर्ण समाधान पहले कभी नहीं देखा था।

इसी प्रकार की एक और घटना मुझे याद आती है। इतने महत्वपूर्ण स्थान पर जाकिर बाग को जब यह भूमि आवंटित की गई, तो उस समय जगमोहन साहब डीडीए के चेयरमैन थे। उन्होंने एक आदमी को जगह का निरीक्षण करने के लिए भेजा। डैडी घर के बाहर नाले को साफ कर रहे थे। उन्होंने स्थिति को

भाँप लिया और बहुत होशियारी से उस आदमी से पेश आए, जो चतुराई से उन्हें ढूँढने के बाद उन्हें वहाँ से उठाना चाहता था, ताकि उनके इस मिशन को नाकाम कर सके।

मैं बचपन में बहुत जिद्दी था और उनके लिए परेशानियाँ खड़ी कर दिया करता था, इसके बावजूद मैं उनका प्यारा लड़का था, जिस पर वह हमेशा अपनी मेहरबानियाँ निछावर करते। अपनी उम्र के अंतिम दिनों में वह चाहते थे कि मैं भी इस बैंक का निदेशक बनूँ। वह चाहते थे कि मैं अधिक से अधिक सामाजिक कार्य करूँ। इसिलिए वह मुझे भी सबसे आगे रखना चाहते थे।

चीन की हमारी यात्रा के दौरान मैंने देखा कि वहाँ के सभी डॉक्टर और नर्स उनके इतने निकट हो गए कि उसके बारे में सोचना भी असंभव था। विष्व विख्यात कृयु सर्जन एक्सपर्ट, हॉस्पिटल हेड और डॉक्टर नून - सभी उनके ऑपरेशन के समय वहाँ मौजूद थे। ये डैडी का हँसमुख स्वभाव ही था, जिसने सभी को एक जगह इकट्ठा कर दिया था। चीन में जब उन्हें पूरी तरह आराम करने की सलाह दी गई, तो उन्होंने अपनी त्वचा पर क्रीम लगाने और तरोताजा होने की अनुमति माँगी।

मुष्किल से मुष्किल हालात को काबू में करना उनका पसंदीदा शगल था, ताकि कमजोर वर्गों को सशक्त बनाने की प्रक्रिया को सरल बनाया जा सके। उनका एकमात्र उद्देष्य उन छोटे लोगों की मदद करना था, जिन्हें अल्पावधि के लिए विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा होता।

उनका विष्वास थोड़ा अलग हटकर था। वह इबादत तो करते थे, लेकिन औपचारिक रूप से नहीं। गहन इबादत करने के बजाय, उन्होंने बेसहारा और कमजोर लोगों की मदद करने का फैसला किया। उन्होंने प्राथमिक रूप से यही मॉडल अपनाया कि ष्मनुश्यों की सेवा करना, खुदा की सेवा करना है।ष

मैं हाल ही में एक साहब से मिला, जिन्होंने मुझे बताया कि डैडी हर महीने उनके बच्चों की फीस के लिए 8 हजार रुपये दिया करते थे।

उनके काम करने का तरीका बिल्कुल अलग था। अगर कोई खाने-पीने का शौकीन होता, तो डैडी उसके लिए स्पेशल खाने की व्यवस्था करते। उनका

बर्ताव इतना नरम और कृपालु होता था कि अधिकतर मामलों में यही होता था कि कोई उन्हें ष्नाष् नहीं कहता था।

उन्होंने मुझे सोशल वर्क दिल से सिखाया। अगर मुझे कहीं भी सामाजिक कार्य करने की जरूरत महसूस होती, तो मैं उसे करने से खुद को रोक नहीं पाता था। सोशल वर्क मेरे खून में बहता है।

माँ सारी चीजों का ख़्याल रखती थीं - एक सिंगल रूम में वस्तुओं को सुसज्जित करना, बरसात के दिनों में बारिश के पानी को अंदर आने से रोकना और इसी प्रकार की अन्य परिस्थितियों का सामना करना, सामाजिक आवष्यक्ताएं पूरी करने पड़ोसियों के घर जाना, टीचर्स से मिलने स्कूल जाना, स्कूल में दाखिले की व्यवस्था करना और इस प्रकार की बहुत सी बातें।

डैडी अपने कामों में इतने मगन रहते कि उन्हें इस काम को पूरा करने के अलावा किसी और चीज की परवाह ही नहीं होती। उनका केवल एक ही बिंदु का एजेंडा था - रात और दिन, चैबीसों घंटे काम, काम और सिर्फ काम, और वह भी दूसरों के लिए।

मेरा मानना है कि अगर डैडी एक विनम्र स्वभाव के मालिक और सीरियस सोशल वर्कर नहीं होते, तो हमें वह आसानियाँ उपलब्ध नहीं होतीं, जो आज हमें उपलब्ध हैं। वह काफी मजाहिया इंसान थे, जिसके कारण हमें कठिनाइयों का सामना करने में कोई परेशानी नहीं हुई।

हम उनके आभारी हैं कि उन्होंने हमें इस दुनिया और यहाँ के बाद वाली दुनिया, दोनों के हिसाब से दीक्षा दी।

अल्लाह उन्हें अपनी छाया तले रखे।

सदफ ज़फ़र बेग

खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तक़्दीर से पहले
खुदा बंदे से खुद पूछे, बता तेरी रजा क्या है

डैडी का कारनामा हर दिन चाय के समय हमारा बहस का विशय था। मुझे याद है, एक बार मैंने स्कूल में उन पर पहला लेख लिखा। मुझे इस बात की हैरानी थी कि एक आदमी वह सब कुछ कैसे कर सकता है, जिसके बारे में उसे कोई जानकारी न हो, कुत्ते की गंदगी से लेकर नाले की सफाई तक ।।।। यह सब करने में उन्हें जरा भी घिन नहीं आती थी। यह मेरे बचपन की कुछ यादें हैं।

मैं फ्रैंक ऐनथोनी स्कूल गई, लेडी श्रीराम कॉलेज में पढ़ाई की, यूरोप से मानव संसाधन और इंटरनेशनल बिजनेस में एमबीए किया।

मैं उर्दू बिल्कुल नहीं जानती थी। मैं जब यहाँ आई, तो पहली बार उर्दू का अखबार देखा। वह उर्दू कविता जोर से पढ़कर सुनाया करते, जिसकी तरफ मैं आकर्शित हो जाया करती। धीरे-धीरे उर्दू में मेरी रुचि बढ़ने लगी और मैं इससे आनंदित होने लगी। दरअसल, हमने उर्दू की शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों की मदद करने का भी फैसला किया।

मैं इन मायनों में बड़ी भाग्यशाली थी कि उनके साथ मैंने दोस्ताना रिष्तों का निर्माण किया। वह मुझसे सब कुछ साझा किया करते थे। वह हर किसी से बराबरी और ईमानदारी से मिला करते। उन्होंने खुद अपने कार्यों के द्वारा हमें दूसरों की मदद करना, अपने अंदर विनम्रता पैदा करना और आगे के लिए सकारात्मक सोच रखना सिखाया।

हमने जब रजा जकात फाउंडेशन खोला, तो वह बहुत खुश हुए और बोले, ह्यतुमने एक संस्था खोलकर बहुत बड़ा काम किया है।,

मैंने उनसे समस्याएं पैदा करने के बजाय, समस्याओं का समाधान निकालना सीखा। वह किसी भी प्रकार की आलोचना से नाराज नहीं होते थे, जो कि उनकी एक बड़ी खूबी थी। उन्होंने मुझे खुलकर बात करना सिखाया, ताकि समस्या का समाधान ढूँढ कर उस मुद्दे को समाप्त किया जा सके। बहुओं के रूप में, हमने उनकी तरफ से विशेश आसानियाँ और पूरी देखभाल प्राप्त की, जो कि किसी घर में मुष्किल से ही मिलती है।

वह इस तथ्य से पूरी तरह परिचित थे कि फिजूलखर्ची किसी भी तरह नहीं होनी चाहिए। मैंने एक वेबसाइट के बारे में सलाह दी, लेकिन उन्हें वह पसंद नहीं आया। मैंने कारण और इसकी जरूरत के बारे में उन्हें विस्तार से बताया। आखिरकार उन्होंने इसके महत्व को समझा और उसकी प्रशंसा की।

वह अपने दोस्तों के साथ शाम को टहलने के लिए बाहर चले जाते और साढ़े नौ बजे तक वापस लौटते। रात के खाने के बाद वह जफर के लिए स्पेशल चाय बनाया करते और फिर हम सारे लोग एक साथ बैठते। वह मुझसे दिन भर की बातें शेयर किया करते थे।

जब मेरी शादी हुई, तो उन्होंने यह कहते हुए मेरा परिचय कराया कि उन्हें काफी पढ़ी-लिखी बहू मिली है। वह हमेशा महिलाओं को आगे आकर नेतृत्व करने के लिए प्रोत्साहित करते थे। वे कहते, ह्यखुद को सशक्त बनाना सीखनो, स्मार्ट बनो और अच्छा दिखने की कोशिश करो।,

ऐसा भी समय आता, जब उनकी पत्नी बिल्कुल अकेली होतीं (जब उन्होंने अपना पूरा समय जाकिर बाग सोसायटी बनाने में लगा दिया था), तब उन्हें

कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, इसके बावजूद उन्होंने हालात को बेहतर ढंग से काबू में किया। उनका उत्साह और बलिदान वास्तव में सराहनीय है।

मैं एक खुली हुई इंसान हूँ। बड़ा दिल रखती हूँ। मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि इस घर में मेरी शादी हुई, जो मुझे समझते हैं और पूरी तरह मेरा समर्थन करते हैं। डैडी के बिना मैं अपने आप को अधूरा समझती हूँ। मेरे जीवन में वह एक महत्वपूर्ण इंसान थे और मेरी सफलता, शांति और खुशी में उनका बहुत बड़ा हाथ था। हमें उनकी कमी काफी महसूस होती है, क्योंकि हर समस्या को लेकर हम उनके पास पहुँच जाते और उस पर उनसे विस्तारपूर्वक बातें करते थे।

मुझे नहीं लगता है कि मैं दोबारा किसी ऐसे आदमी से मिल पाऊँगी, जो इतना उदार और जरूरतमंदों का इतना मददगार हो। मैं उनके इस जज्बे को सलाम करती हूँ और अल्लाह से उनके लिए दया और माफी की प्रार्थना करती हूँ ।।।। आमीन।

मिर्ज़ा अहमर बेग

डैडी का अधिकतर समय केवल सामाजिक कार्यों में बीतता। उन्होंने हमारी देखभाल की, लेकिन हमारी अवैध माँगों को कभी पूरा नहीं किया। काम करते हुए लोगों से कैसे निपटना है, समाज के, परिवार के लोगों से कैसे बर्ताव करना है, ये सारी बातें उन्होंने हमें सिखाईं। उन्होंने हमें बताया कि एक सार्थक जीवन कैसे जिया जाता है। उन्होंने हमें एक लक्ष्य और दिशा दी, और उसके बाद हमें इस बात की अनुमति दी कि मानवता के आधार पर हम जितना चाहें, विकास कर सकते हैं।

पैसा कमाना उनके लिए कोई मायने नहीं रखता था। इसके विपरीत, उनकी नजर में महत्व इस बात का था कि हम अन्य लोगों के साथ अपने मामलों में कितने पारदर्शी, ईमानदार और गंभीर हैं। उनकी नजर में पैसा एक बाई प्रोडक्ट था, जो केवल हमारी आवष्यकताओं को पूरा करने में मदद करता है। लेकिन बुनियादी जरूरतों से आगे हमें शांति प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए, यही उनकी मूल चिंता थी।

मेरे लिए वह एक पूर्ण धर्मनिरपेक्ष, जनहितैशी थे और समाज के कोई बेकार आदमी नहीं थे कि उनका किसी से झगड़ा न हुआ हो। उन्होंने केवल दूसरों को राहत पहुँचाने के लिए जीवन व्यतीत किया। दूसरों का आदर करना और मदद

के लिए हाथ बढ़ाना, यही वह मूल सिद्धांत थे, जिनकी उन्होंने हमें शिक्षा दी।

अपनी पढ़ाई के प्रारंभिक दिनों में, कई बार मैं अंदर से स्वयं को पूरी तरह खोखला पाता। मेरे आत्मसम्मान को ठेस पहुँचता था, लेकिन डैडी ने मुझे सिखाया कि इसे गुजर जाने दो। धीरे-धीरे मुझे उनकी यह बात समझ में आने लगी और मैं अंदर से संतुश्ट रहने लगा और अंत में अपने जीवन के लिए भी मैंने यही नीति अपनाई।

हम आज जो कुछ भी हैं, यह सब पिताजी के अच्छे व्यवहार और मूल्यों की वजह से है। उनका सामाजिक कार्य, बुजुर्गों की सेवा और व्यथित लोगों की मदद करना ।।।। ये सब बातें हमारे लिए वरदान हैं, जो आज हमारे लिए हर तरह से फायदेमंद साबित हो रही हैं। वह जीवन भर इसी नीति का पालन करते रहे कि वह जो कुछ भी खा रहे हैं, वही चीजें दूसरों को भी खाने को मिलनी चाहिए। उन्होंने गरीब और अमीर में कोई भेदभाव नहीं किया। वे हमें जोश दिलाते, गति प्रदान करते और हमारे अंदर इतना साहस भर देते कि हम जब भी बाहर कोई काम करते, हमें उस काम को करने में बड़ा आनंद आता। उन्होंने हमें शांतिप्रिय होना सिखाया।

हम जाकिर बाग में मकान नंबर 33 में रहते थे। उसमें और स्पेस बनाने के लिए, मैंने छत के आगे की जगह को घेर लिया, ताकि हमारे घर को पर्दे की थोड़ी और जगह मिल जाए। डैडी ने कहा कि जो लोग अवैध कब्जा करते हैं या यह सोचते हैं कि किराये का घर उनका अपना है या अपनी इच्छाओं को सीमित स्थान के अंदर ही पूरा करते हैं और न तो बड़ा सोचते हैं और न ही उसके लिए संघर्श करते हैं, ऐसे लोग छोटी जगह के भीतर ही सीमित होकर रह जाते हैं। इस पाठ को सीखने के बाद मैंने यह किया कि मैं किराये के एक मकान में शिफ्ट हो गया। मैंने बड़ा सोचना शुरू कर दिया, कड़ी मेहनत की और इसका नतीजा यह हुआ कि अल्लाह ने मेरे रोजी बढ़ा दी और समाज में मेरा कद ऊँचा कर दिया।

अल्लाह उनकी दिली तमन्नाओं को पूरा करे। आमीन।

सुंबुल अहमर बेग

हाउस मेकर, 1998 में विवाह हुआ

मेरा संबंध अलीगढ़ से है। डैडी मेरे ससुर थे, लेकिन इससे पहले वह मेरे मौसा थे। डैडी जब भी अलीगढ़ आते, हम लोगों की ईद हो जाती। वह हमें अच्छा भोजन कराने और सुंदर जगहें दिखाने के लिए बाहर ले जाते। कई बार, जब वह अलीगढ़ मुस्लिम विष्वविद्यालय के कुलपति से मिलने जाते, तो मैं भी उनके साथ जाती और नाना प्रकार की वस्तुओं का आनंद लेती।

उन्होंने हमें धैर्य करना सिखाया। ये बिल्कुल वही बात है, जो गांधी जी ने कही थी कि यदि कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे, तो उसे अपना दूसरा गाल भी पेश कर दो। आमतौर पर लोग इस प्रकार की स्थिति में कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं, लेकिन मेरा मानना है कि दोशी को माफ कर देना सबसे बड़ी ताकत है। जवाब देना तो आसान है, लेकिन जवाब न देकर धैर्य का प्रदर्शन करना बहादुरी है।

मैं अल्लाह से प्रार्थना करती हूँ कि वह उन्हें आखिरत में उच्च से उच्च स्थान प्रदान करे। आमीन।

निशात गुप्ता

ह्यमेरी पहली इंजीनियर बिटिया,, उनके ये शब्द अभी भी मेरे कानों में गूँजते हैं। उनकी सरल मुस्कान और सम्मानजनक व्यक्तित्व को याद करके अभी भी मेरा गला भर आता है। दुनिया के लिए मेरे डैडी जनहितैशी, एक सामाजिक कार्यकर्ता थे, लेकिन मेरे लिए डैडी मेरा हौसला थे, मेरे सबसे अच्छे दोस्त थे, मेरे शिक्षक थे और सबसे बढ़कर मेरे हीरो थे।

उनका शरीर जो कभी गतिशील हुआ करता था, उनकी खुशबू पूरे कमरे को सुगंधित कर देती थी, अब वह शाष्वत नींद सो चुके हैं। ह्याये जिंदगी के मेले दुनिया में कम न होंगे, अफसोस हम न होंगे, उनकी आवाज इतनी कमजोर और मस्तिश्क इतना मजबूत था, लेकिन उस समय मेरी पूरी दुनिया थम गई। मैं जानती थी कि मैं उनकी इच्छा पूरी करने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दूँगी, लेकिन काफी देर हो चुकी थी। और वह हमेशा के लिए छोड़ कर चले गए।

एक मासूम छोटी सी लड़की, मैं भी डैडी की तरह ही बनना चाहती थी।
मुझे अच्छी तरह याद है, एक बार ईदुल अज्हा के दिन बटला हाउस का हमारा मकान बाढ़ में डूब गया। उस मुष्किल घड़ी में भी पिताजी की चिंता सिर्फ यही

थी कि कैसे जाकिर बाग के कागजात को बचाया जाए, ताकि वह अपनी आँखों के सामने आवास की समस्या को हल कर सकें। हमारे पड़ोसी शम्शेर अली खान की मदद से, डैडी ने सभी कागजात इकट्ठा करने शुरू कर दिए। इसने मेरे अंदर अपने परिवार को बचाने की भावना पैदा की। मैं नूर नगर स्थित अपने चचेरे भाईयों के घर से निकल आई, जहां बाढ़ की वजह से हम कुछ दिनों के लिए शिफ्ट हुए थे और अपने घर जाकर उसे साफ करने लगी। मैंने जितना सोचा था, उससे कहीं अधिक मुष्किल यह काम था। मैं दिन भर घर में घुस चुके पानी, कीचड़ और गंदगी को हाथ से निकाल कर बाहर फेकती रही, ताकि वह घर फिर से रहने योग्य हो जाए। वापस जाकर मैं इस बहादुरी भरे काम के बारे में डैडी को बताना चाहती थी, लेकिन जैसे ही देर से घर पहुँची, मम्मी ने जोरदार थप्पड़ लगा दिया। डैडी गुस्से से भर गए, क्योंकि उनका मानना था कि पहले सोचो फिर पालन करो।

मेरे डैडी ने हमेशा और हर तरह से मेरी मदद की। जामिया मिलिया इस्लामिया से चूँकि मैं पहली इंजीनियर स्नातक थी, इस पर मेरे डैडी को बहुत गर्व था। मैंने जब पहली बार ऐडमिशन विभाग से संपर्क किया, तो वहाँ से लड़की होने की वजह से मुझे ऐडमिशन देने से मना कर दिया गया। लेकिन, चूँकि मैंने अपने डैडी को जाकिर बाग में कई परिवारों को आश्रय प्रदान करते हुए देखा था, इसलिए इससे प्रभावित होकर मैं एक सिविल इंजीनियर बनना चाहती थी। इसलिए, मैं अडिग रही। डैडी के अपार समर्थन से मुझे आखिरकार ऐडमिशन मिल गया। चाहे फार्म भरने का मामला हो, लंबी लाइनों में खड़े रहने की बात हो और इन सबसे मुष्किल, समाज का सामना करने का मामला रहा हो, मेरे डैडी ने मेरी क्षमताओं पर कभी शक नहीं किया।

पिताजी के साथ मेरा जो रिष्ता था, उसे बदला नहीं जा सकता। मैं नहीं समझती कि उनसे मैं जितना प्यार करती थी, उसे शब्दों में बताया जा सकता है। यह इसलिए नहीं कि वह मेरे पिता थे, बल्कि इसलिए कि मैं जब भी संदेह में घिरी होती, जब भी मेरे साथ कुछ बुरा होता, वह हमेशा मेरे लिए मौजूद होते, और मैं जानती हूँ कि अब भी वह ऐसा ही करेंगे।

मेरे पिताजी की अच्छाइयाँ और बुराइयाँ, सब की सब सादगी और सच्चाई का

नमूना थीं, और मुझे इस बात पर गर्व है कि मैं मिर्जा फरीदुल हसन बेग की बेटी हूँ। मैं उनकी विरासत को आगे बढ़ाने की पूरी कोशिश करूँगी। डैडी की कमी मुझे हमेशा महसूस होती है और होती रहेगी।

डैडी के व्यक्तित्व और उनकी विशेशताओं का वर्णन करते हुए मैं अपने बच्चों को निम्नलिखित पंक्तियाँ सुनाती हूँ -

सिखाया जिसने हुनर प्यार जमाने से।
मेरा वो रहनुमा उठके गया सिरहाने से।

ना जाने कितने चिरागों को रोशनी देकर।
वो आफताबे आजमी गया जमाने से।

दर्द-ए-दिल में संजोता था वो दर्दमंदों का।
खिलाफ था वो किसी का भी दिल दुखाने से।

वो फरिशताए अमन व प्यार सबसे कहता था।
कुछ भी हासिल ना होगा नफरतें बढ़ाने से।

ये उनका ख़्वाब था बेटियां हों तालीमशुदा।
कोई भी घर ना छूटे बेटियां पढ़ाने से।

बनेगी डॉक्टर, इंजीनियर अगर बिटियां।
फख्र की बात है वो होगी जिस घराने से।

वो फकीराना तबीयत मलंग जैसा था।
जो दौलतें ही लुटाता रहा खजाने से।

नेक लोगों की खुदा को भी जरूरत होगी।
तभी तो ले गया नाना को वो बहाने से।

शशांक गुप्ता

डॉयरेक्टर-एनएस एसोसिएट्स लि.

हम घंटों एक दूसरे के साथ समय बिताते, कभी जोक सुनाते हुए, कभी रोमांटिक शेर पढ़ते हुए और कभी ठहाका लगाते हुए।

मेरे लिए, वह मेरे ससुर थे, लेकिन इस रिष्ते से अधिक, वे इतने अच्छे इंसान थे कि मैंने ऐसा व्यक्ति पहले कभी नहीं देखा।

अंतिम बार उनका दीदार करने को जितनी बड़ी भीड़ इकट्ठा हुई, उसे देख कर मेरी आँखों पर विष्वास नहीं हो रहा था। मैंने इतने भावुक लोगों का मजमा पहले कभी नहीं देखा था, जिनमें से हर कोई यह याद करते हुए रोने-बिलखने में लगा हुआ था कि मिर्जा साहब कैसे उसके जीवन में आए और फिर उसके पूरे जीवन को ही बदलकर रख दिया।

मुझे भी उनकी कमी महसूस हो रही है, मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि वह मिर्जा साहब को अपने यहाँ अच्छी से अच्छी जगह प्रदान करे।

सबा ख़ान

मिर्जा फरीदुल हसन बेग की छोटी पुत्री, सबा खान ने अपनी भावनाएं इन शब्दों में व्यक्त कीं, ह्यमैं कुछ विशेश गुणों के साथ पैदा हुई। मेरा व्यवहार, भाशा और अभिव्यक्ति दूसरों के लिए चुनौती भरी थी। डैडी ने उसे पहचाना तथा मुझे और भी स्पेशल बना दिया। डैडी और अम्मी की विशेश सुरक्षा और देखभाल में, मुझे सम्मान और गरिमा के साथ दुनिया का सामना करने का प्रशिक्षण मिला। लोग यह कहते हैं कि डैडी घर के बाहर के लोगों के लिए अधिक उपलब्ध रहते और जो दूसरों की मदद करते हुए ही जीवन की हर साँस लेते थे, लेकिन उन्होंने एक पिता के रूप में भी अपनी सारी जिम्मेदारियाँ पूरी कीं। वह एक समाज निमार्ता थे, जबकि मेरी माँ एक घर निमार्ता थीं। बचपन में, मैंने उन्हें हर प्रकार के काम करते हुए देखा, चाहे नालियों की सफाई हो, किसी गरीब का साथ देना हो, वह सब के साथ बराबरी से पेश आते और कभी भी अपने वर्ग, हैसियत या स्थान का कोई ध्यान नहीं रखते। वह किसी बच्चे से भी उसी तरह मिलते, जिस तरह किसी विष्वविद्यालय के कुलपति से मिलते थे। अपने विभिन्न कार्यों और मिलनसार व्यवहार से, डैडी ने हमें भी दया, विनम्रता और हँसमुख होना सिखाया। वे जीवन भर आर्थिक रूप से कमजोर और पिछड़े लोगों के चेहरों पर मुस्कान लाने के लिए संघर्श करते रहे।,

शाहिद ख़ान

मिर्जा फरीदुल हसन बेग के छोटे दामाद, शाहिद खान कहते हैं, ह्यमेरे पास बताने के लिए शब्द नहीं हैं कि मिर्जा फरीदुल हसन बेग क्या और कौन थे। लेकिन मैं इतना जरूर जानता हूँ कि वह एक महान व्यक्ति थे, जिन्होंने अपना पूरा जीवन गरीबों और पिछड़ों का जीवन बदलने में लगा दिया। दूसरों के हमदर्द होने के अलावा, वह एक अच्छे मेजबान भी थे और स्वादिश्ट खाने के जरिए लोगों के दिलों में घर बना लिया करते थे।

उन्होंने कई तरीके से मुझे प्रेरित किया और आज मैं उन्हीं के कारण एक गुसैले आदमी से बदल कर एक अच्छा और दूसरों का ख़्याल रखने वाला आदमी बन पाया, जिसे अब दूसरों की चिंता पहले होती है। मेरे अंदर विनम्रता और पहले की अपेक्षा अधिक मानवता आ गई है। मैं मिर्जा साहब का आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे एक अच्छा इंसान बना दिया।,

मिर्जा फरीदुल हसन बेग अपोलो हॉस्पिटल में जीवन के अंतिम दिनों में इलाज कराते हुए

जीवन की आख़िरी जंग

मिर्जा फरीदुल हसन बेग ने अपने जीवन की बहुत सी लड़ाइयों को सफलतापूर्वक जीतने के बाद किसी उद्देष्य की लड़ाई लड़ने में महारत हासिल कर ली थी। शतरंज के माहिर खिलाड़ी की तरह, वे यह जानते थे कि किस मोहरे का उपयोग कब करना है और अपने प्रतिद्वंद्वी को शह- मात देने (हराने) के लिए कब खेलना है। चाहे जाकिर बाग कॉलोनी बनाकर दक्षिणी दिल्ली के बीचों-बीच, आवास की सभी सुविधाओं के साथ और अच्छे प्राकृतिक वातावरण में 204 परिवारों को बसाने का काम हो या फिर गरीबों को उनके बेहतर जीवन की खोज और सिर उठाकर जीने लायक बनाने में सहायता के लिए जामिया कोऑपरेटिव बैंक बनाने की बात हो, या खासकर लड़कियों को बेहतर भविश्य के लिए तैयार करने की खातिर आजमगढ़ में शैक्षिक संस्थानों की स्थापना हो, या फिर आजमगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों के निवासियों के लिए सामुदायिक रेडियो स्थापित करने की बात, जहाँ वे सरकार के साथ अपनी समस्याओं और चिंताओं के बारे में बात कर सकें और बेहतर जीवन जीने के लिए और अधिक जागरूक

हो सकें, मिर्जा साहब ने जो कुछ सोचा, उसे वास्तविकता का रूप देकर ही दम लिया।

लेकिन एक समय ऐसा भी आया, जब उन्हें एक ऐसी लड़ाई का सामना करना पड़ा, जो उन्होंने पूरी बहादुरी और साहस से लड़ा, लेकिन इसके बावजूद वह पहले की तरह सफल न हो सके। इस बार चुनौती भरी यह लड़ाई किसी दुष्मन या सामाजिक समस्या के खिलाफ नहीं थी, बल्कि यह लड़ाई बाहरी दुष्मन से थी, जिसकी पहचान जिगर के कैंसर के रूप में हुई।

जब वह इस रोग से लड़ रहे थे, तो उनके करीबी दोस्तों और रिष्तेदारों ने सोचा कि वे इस बीमारी से वाकि फ नहीं हैं, जबकि सच्चाई यह थी कि वे इसके बारे में पूरी तरह से वाकि फ थे। उनकी यह जागरूकता उनके काम करने के तरीके में झलकती थी। वह थोड़ा बेचैन रहने लगे। लोगों से कहने लगे कि वह तेजी से काम करें और अपने पुराने स्टाइल की तुलना में कार्यों को जल्दी पूरा करने पर जोर देने लगे।

मिर्जा साहब के पोतों में से एक, मिर्जा साकि ब बेग कहते हैं, ह्यउन्हें जब ऑपरेशन थिएटर में ले जाया जा रहा था, तब भी वह जामिया कोऑपरेटिव बैंक के बारे में बातें कर रहे थे और इस बात को लेकर चिंतित थे कि समाज के कमजोर वर्गों को रोजगार मुहैया कराने के लिए संसाधन कैसे पैदा किए जाएँ। दर्द के कारण वह काफी परेशान थे, फिर भी उन्होंने अपने दर्द को छिपाने की पूरी कोशिश की और हर बार इसी कोशिश में लगे रहे कि जरूरतमंदों की मदद के लिए कौन से तौर-तरीके अपनाए जाएँ।,

मिर्जा साहब की बड़ी बेटी, निशात गुप्ता बताती हैं, ह्यमुझे याद है, अपने इलाज के दौरान डैडी काम करने के तरीके में काफी बदलाव आ गया था। वह जल्दबाजी में रहते और लोगों से चाहते कि वह जितना जल्दी संभव हो, काम को पूरा करें। मेरे विचार से वह इस बात से अच्छी तरह वाकि फ थे कि उनका यह रोग घातक हो सकता है। इसलिए, वे रुके हुए कामों को तेजी से पूरा करवाना चाहते थे।,

डॉ। युगल मिश्रा के अनुसार, मिर्जा साहब न केवल सामाजिक मुद्दों के लिए

लड़ाकू थे, बल्कि अपनी सकारात्मक सोच और स्वचालित व्यक्तित्व के कारण अपने रोग के खिलाफ भी लड़ते रहे। एसकार्ट हॉस्पिटल, नई दिल्ली के वरिश्ठ हार्ट स्पेशलिस्ट डॉ। मिश्रा बताते हैं, ह्यमैंने हृदय रोग से पीड़ित अनगिनत रोगियों का इलाज किया है, लेकिन मिर्जा साहब निस्संदेह अपने रोग के प्रति बिल्कुल अलग दृश्टिकोण रखते थे। उनका मन हमेशा उन्हीं कामों की तरफ लगा रहता, जो उन्होंने समाज के कमजोर वर्गों के कल्याण के लिए शुरू किए थे। वह एक मजबूत इच्छाशक्ति के मालिक थे और किसी भी गंभीर समस्या को मात देने की क्षमता रखते थे। ऐसे लोग काफी मुष्किल से मिलते हैं, जिन्होंने दूसरों के लिए जीवन बिताया हो।,

डॉ। मिश्रा आगे बताते हैं, ह्यएक बार मैंने उनकी बंद धमनियों का ऑपरेशन किया। ऑपरेशन थिएटर में जाने से पहले मिर्जा साहब ने मेरा हाथ पकड़ लिया और बोले, ष्डॉक्टर, मेरा केस अब आपके हाथों में है। कृपया इस बात को अपने मन में रखिए कि मुझे ऐसे कई कार्यों को पूरा करना है, जो मैंने गरीबों के लिए शुरू किये हैं। ष्वह एक हँसमुख इंसान थे और अपनी खुशमिजाजी में किसी भी नकारात्मक भावना को कभी जगह नहीं देते थे।,

वरिश्ठ राजनीतिक कार्यकर्ता, अतुल कुमार अंजान कहते हैं, ह्यमिर्जा फरीदुल हसन बेग का व्यक्तित्व पूरी तरह बेदाग था और उनके अंदर इरादे की परिपक्वता और ईमानदारी कूट-कूट कर भरी हुई थी। उन्होंने जो कुछ सोचा, उस पर अमल किया और जो कुछ बनाना चाहा, उसे बनाकर दिखा दिया। यही खूबियाँ उन्होंने अपने बेटे और बेटियों में भी पैदा कीं। मैंने अपने विचार बब्लू भाई को बता दिये हैं और यह इच्छा भी जताई है कि बेग साहब ने जितनी भी पहल की है और संस्थान बनाए हैं, मैं खुद को उन सब के साथ जोड़ना चाहता हूँ।,

उन्होंने आगे कहा कि ह्यमिर्जा साहब की कहानी हर क्षेत्र में सफलता की कहानी है - एक छात्र के रूप में, एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में, एक दूर दृश्टि वाला, निवेशक, जनहितैशी और इन सबसे ऊपर, एक अच्छे इंसान के रूप में। उन्होंने विनम्रता और दया का संदेश दिया, धर्मनिरपेक्ष मूल्यों से बंधे रहे और इस बात में विष्वास रखते थे कि अपने संसाधनों से मनुश्य जो कुछ भी कर

सकता है, उसे करना चाहिए।,

आर। एन। श्रीवास्तव के अनुसार, मिर्जा साहब सही मायने में हमारे समाज के कमजोर वर्गों के लिए एक मसीहा थे। ह्यउनके दुखद देहांत पर, मैंने बहुत से लोगों को मिर्जा साहब के बारे में बात करते हुए देखा कि उन्होंने कैसे उनके जीवन को बदलने में मदद की। उनमें से एक जेब कतरा था, जो मिर्जा साहब के पास बैंक लोन लेने के लिए आया, ताकि कोई छोटा-मोटा काम शुरू करके एक अच्छा जीवन व्यतीत कर सके। एक दूसरे आदमी ने अपनी कहानी बताते हुए कहा कि कैसे उसने एक टैक्सी खरीदने के लिए ऋण लिया और फिर

धीरे-धीरे अपनी कमाई से उसने कई टैक्सियाँ खरीदीं। आज वह 10 टैक्सियों का मालिक है और पूरी शान से जीवन बसर कर रहा है।

मिर्जा फरीदुल हसन बेग की यादों को अपने परिवार के सदस्यों, दोस्तों और शुभचिंतकों के दिलों में जीवित रखने के अलावा, जामिया कोऑपरेटिव बैंक लिमिटेड प्रशासन और डॉ। जाकिर हुसैन मेमोरियल कापोर्रेशन हाउसिंग सोसायटी लिमिटेड ने हाल ही में दो और पहल की है - मिर्जा साहब के जीवन की प्रमुख घटनाओं को विभिन्न भाशाओं में उनकी जीवनी के रूप में जमा करना, और जाकिर बाग तथा ईष्वर नगर के बीच की सड़क का नाम उनके नाम के हिसाब से मिर्जा फरीदुल हसन बेग रोड रखना।

भावभीनि श्रद्धांजलि

प्रिय नाना जान,

मैं वादा करती हूँ कि मैं अपनी विरासत की निगरानी करूँगी। मैं आपसे बहुत प्यार करती हूँ।,

अंतिम सलाम के रूप में मैंने नाना के माथे को चूमा। बतौर भेंट मैं उनकी सेवा में ये षब्द पेष करना चाहती हूँ, जब कि इन षब्दों को व्यक्त करते समय मेरी आवाज बैठी हुई है और आँखों से आँसूओं का सिलसिला जारी हैः

वह आदमी, जिससे मैंनं खुद से भी ज्यादा प्यार किया, अंतिम समय में, जबकि वह पूरी तरह पीला पड़ चुका था, हरकत करने के भी लायक नहीं था, उसके षरीर के प्रत्येक हिस्से से लाइफ सपोर्ट लगा हुआ था, वह आदमी जिसके अंदर कभी इतना जोष हुआ करता था कि वह पूरे कमरे को जगमगा सकता था, वह आदमी जिसे मैं अपनी हर इच्छा को पूरा करने वाला समझती थी, वह आदमी जो मेरे मना करने के बावजूद मुझ पर पूरा विष्वास रखता था, वह यह जानना चाहता था कि उसकी 60 वर्शों की कड़ी मेहनत की देखभाल की जाएगी। उसने अंतिम साँस ली और सदैव के लिए हमसे जुदा हो गया।

हालाँकि उन्हें मैंने अंतिम बार देखा था, लेकिन ऐसा नहीं है कि मैंने उनको आखिरी बार महसूस किया हो। वह षारीरिक रूप से हमारे बीच मौजूद नहीं हैं, फिर भी मैं उनकी उपस्थिति महसूस करती हूँ। मेरे नाना चले गए, लेकिन अपने पीछे वह सब छोड़ गए, जिनसे हम सीख ले सकते हैं। उन्होंने कभी दुष्मनी में विष्वास नहीं किया, बल्कि हमेषा दोस्ती को बढ़ावा दिया।

यह मेरे नाना की विरासत है, जो वह हमारे लिए छोड़ गए, ताकि हम इसे पढ़ें,

अनुभव करें और अपने कार्यों का आँकलन करें।

मेरी इच्छा है कि एक दिन मैं भी उनके जैसी बनूँ, कम से कम उनका आधा ही सही। उनके व्यक्तित्व को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता, फिर भी यह जीवनी उनके लिए एक भेंट है, लोगों को उनके व्यक्तित्व से रूबरू कराने का एक प्रयास है।,

मुझे पता है, कुछ लोग यह सोचेंगे कि मैं आपको इसलिए प्यार करती हूँ, क्योंकि आप मेरी फैमिली हैं। लेकिन केवल यही वजह नहीं है। मैं आपसे प्यार करती हूँ, क्योंकि आपकी ताकत मेरे लिए प्रेरणास्त्रोत है।

मैं आपसे प्यार करती हूँ, क्योंकि आप की कड़ी मेहनत मेरे अंदर हरकत पैदा करती है। मैं आपसे प्यार करती हूँ, क्योंकि आपकी उपस्थिति मुझे राहत देती है। कुछ लोग इसलिए पैदा होते हैं, ताकि किसी काम को अंजाम दे सकें, बदलाव ला सकें, मनुश्यों को मानवता के बारे में बता सकें, लेकिन आपने ये सारे काम अन्य कार्यों के साथ-साथ अंजाम दिए।

मुझे आपकी नातिन होने पर बड़ा गर्व है और आज मैं आपसे यह वायदा करती हूँ कि आपकी इस मानवता पर आधारित विरासत को आगे लेकर जाऊँगी।

आपने मुझ सहित अनगिनत लोगों को यह हौसला दिया है कि अकेला इंसान भी दुनिया को बदल सकता है। आपने अपने काम और सहानुभूति भरी भावना से अनगिनत लोगों के जीवन को आसान बनाया है। आपने अनगिनत लड़कियों के अंदर यह विष्वास पैदा किया है कि उन्हें न केवल शिक्षा दिलवाई जानी चाहिए, बल्कि वह शिक्षा के क्षेत्र में महारत भी प्राप्त कर सकती हैं। आपने लोगों के अंदर ऐसे समय में भी आशाएं पैदा कीं, जब ऐसा करने वाला कोई मौजूद नहीं था। और सबसे बड़ी बात यह कि आपने मुझे वो मान और शिक्षाएं दी हैं, जो मेरे अंदर हमेशा रहेंगी और कभी खत्म नहीं हो सकतीं।

आपने मुझे एक बेहतर इंसान बनाया है, और इसीलिए मैं आपको सबसे ज्यादा प्यार करती हूँ।

काव्या

आभार

आध्यात्मिक गुरूः हजरत सैय्यद बिलाल हुसैन थानवी

टीचर्सः स्वर्गीय नजीरुद्दीन मीनाई, स्वर्गीय मदन लाल शर्मा, स्वर्गीय ए0 आर0 सैय्यद, स्वर्गीय मोहसिनी साहब, स्वर्गीय जलालुद्दीन, भूतपूर्व प्रिन्सिपल पॉलीटेक्निक, जामिया मिलिया इस्लामिया

स्वर्गीय खुर्शीद आलम खान, पूर्व केन्द्रीय मन्त्री और राज्यपाल, कर्नाटक

ए0 आर0 कि दवई, पूर्व राज्यपाल, बिहार और हरयाणा

स्वर्गीय सैय्यद हामिद, रिटायर्ड आईएएस अधिकारी, पूर्व कुलपति ए0एम0यू0, पूर्व चान्सलर जामिया हमदर्द

सलमान खुर्शीद, पूर्व केन्द्रीय मन्त्री, विदेश मन्त्रालय, भारत सरकार

महमूदुर्रहमान, चेयरमैन, बॉम्बे मर्केन्टाइल बैन्क, सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी तथा पूर्व कुलपति अलीगढ़ मुस्लिम विष्वविद्यालय

पी0 ए0 इनामदार, अध्यक्ष एमसीई सोसायटी, आजम कै0पस, पुणे

राज रेवाल, जाकिर बाग के प्रख्यात ऑर्किटेक्ट

स्वर्गीय डॉ0 मोहम्मद शहपर, जाकिर बाग के विख्यात लैंडस्केप आर्किटेक्ट

पदमश्री जय दुरईराज, जाकिर बाग के चीफ इंजीनियर, पूर्व चीफ इंजीनियर सीपीडब्ल्यूडी

रहमान साहब, चीफ टाउन प्लानर (कंसलटैंट, जाकिर बाग)

महेन्द्र राज, जाकिर बागे के स्ट्रक्चर इंजीनियर

शाहिद सिद्दीकी, संपादक, नई दुनिया साप्ताहिक, पूर्व सांसद

स्वर्गीय बाबू राम कुँवर सिंह, फैमिली फ्रेन्ड तथा राजनीतिज्ञ

अतुल कुमार अंजान, राष्ट्रीय सचिव, सीपीआई

आशिमा चैधरी, चेयरमैन, साउथ दिल्ली पॉलीटेक्निक फॉर विमेन

जस्टिस एस0 एन0 कुमार, पूर्व न्यायाधीश, दिल्ली हाई कोर्ट

जस्टिस एम0 एस0 ए0 सिद्दीकी, पूर्व चेयरमैन, राश्ट्रीय आयोग, अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थान, भारत सरकार

स्वर्गीय डॉ0 आर0 जे0 चेलैय्या, भारत में कर सुधार के प्रवर्तक, जामिया कोऑपरेटिव बैंक के संस्थापक चेयरमैन

स्वर्गीय आई0 जेड0 भट्टी, पूर्व चेयरमैन, एनसीएईआर तथा जामिया कोऑपरेटव बैंक

स्वर्गीय एल0 के0 धवन, पूर्व चेयरमैन, जामिया कोऑपरेटिव बैंक

एस0 आर0 हाशिम, भूतपूर्व- यूपीएससी चेयरमैन, सचिव जनरल प्लानिंग कमीशन, कजाखिस्तान में भारत के राजनयिक, डायरेक्टर जामिया कोऑपरेटिव बैंक (वर्तमान)

सिराजुद्दीन कुरैशी, अध्यक्ष आईआईसीसी, डायरेक्टर जामिया कोऑपरेटिव बैंक (वर्तमान)

डॉ0 सैय्यद फारूक, चेयरमैन सीआईआई उत्तराखंड स्टेट कौंसिल, पूर्व डायरेक्टर जामिया कोऑपरेटिव बैंक

जेसीबी के भूतपूर्व डायरेक्टर्सः स्वर्गीय मलहोत्रा साहब, स्वर्गीय रामनाथ जी, स्वर्गीय एस0 टी0 हसन, सिराज अहमद

जेसीबी के वर्तमान डायरेक्टर्सः प्रो0 जावेद हुसैन, राजेश गुप्ता, सुरेश कुमार

हबीब ए0 फकीह, पूर्व कार्यकारी उपाध्यक्ष एएमईएफ

स्वर्गीय मकसूद आलम, चार्टर्ड एकाउंटेंट, पूर्व डिप्टी चेयरमैन जामिया कोऑपरेटिव बैंक

चैधरी रघुनाथ सिंह, मिर्जा फरीदुल हसन बेग के कॉलेज के साथी

जे0 एस0 साँगवान, सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी और कॉलेज के मित्र

परवेज हाशमी, राज्य सभा सांसद

सुभाश चोपड़ा, भूतपूर्व एमएलए, कालकाजी, नई दिल्ली

प्रो0 असद अली, पूर्व चेयरमैन, जामिया कोऑपरेटिव बैंक

प्रो0 इब्ने कँवल, अध्यक्ष उर्दू डिपार्टमेंट, दिल्ली विष्वविद्यालय, दिल्ली

हाफिज बदरुद्दीन, पूर्व प्रिंसिपल पॉलीटेक्निक, जामिया मिलिया इस्लामिया
प्रो० एन० यू० खान, पूर्व डीन, फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नॉलोजी, जामिया मिलिया इस्लामिया
प्रो० अख़्तरुल वासे, राश्ट्रीय आयुक्त, भाशाई अल्पसंख्यकें, भारत सरकार
शमीम जैराजपुरी, संस्थापक और पूर्व कुलपति, मौलाना आजाद युनिवर्सिटी
इंजीनियर अहमद सईद, पूर्व वाइस-चेयरमैन, जामिया कोऑपरेटिव बैंक, डायरेक्टर (वर्तमान)
रामेष्वर नाथ श्रीवास्तव, पूर्व चेयरमैन, सेंट्रल इलेक्ट्रिसिटी अथॉरिटी, वाइस-चेयरमैन जामिया कोऑपरेटिव बैंक (वर्तमान)
स्वर्गीय शमशेर अली खान, शागिर्द (छात्र)
स्वर्गीय असगर अहसन इस्लाही, स्कूल टीचर
मिर्जा महफूज बेग, छोटे भाई, पूर्व प्रिंसिपल मौलाना आजाद इंटर कॉलेज, चेयरमैन **जेपीएस आजमगढ़,** चेयरमैन शिबली इंटर कॉलेज, आजमगढ़
मिर्जा आरिफ बेग, मैनेजर, मिर्जा अहसानुल्ला बेग गर्ल्स डिग्री कॉलेज, मौलाना आजाद इंटर कॉलेज, रफी अहमद कि दवई गर्ल्स इंटर कॉलेज
शहनाज हुसैन, सीईओ, शहनाज हर्बल
डॉ पुष्प भार्गव, पूर्व एजीएम, आरबीआई
रेहाना मिश्रा, डॉ० जाकिर हुसैन की पोती, डायरेक्टर, जामिया कोऑपरेटिव बैंक
निलोफर मेनन, डॉ० जाकिर हुसैन की पोती
जरीना भट्टी, अर्थशास्त्री आई० जेड भट्टी की पत्नी
डॉ० शबिस्ताँ गफ्फार, पूर्व चेयर पर्सन, लड़कियों की शिक्षा, राश्ट्रीय आयोग, अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थान, भारत सरकार
डॉ० फैज वारिस, पूर्व जनरल मैनेजर, इंडियन ऑयल कापोर्रेशन, डायरेक्टर जामिया कोऑपरेटिव बैंक
इंद्र वर्मा, पार्शद, एमसीडी
निशात फारूक, पूर्व डायरेक्टर, जामिया कोऑपरेटिव बैंक
मिर्जा इष्तियाक बेग, पूर्व चेयरमैन, सेंट्रल इलेक्ट्रीसिटी अथॉरिटी

स्वर्गीय मिर्जा अंसार बेग, मित्र

देवेंद्र रावत, डायरेक्टर, एनएस एसोसिएट्स प्राइवेट लिमिटेड

राकेश तिवारी, सलाहकार, शैक्षिक संस्थान, आजमगढ़

स्वर्गीय कमरुन्निसा, मिर्जा फरीदुल हसन बेग की बहन

प्रो0 अजदुद्दीन खान, जीजा

अबू सालेह (सल्लू पांडे), प्रख्यात शिक्षाविद, मिर्जा फरीदुल हसन बेग के भांजे

स्वर्गीय रसूल खान, इंडियन एयरफोर्स के अधिकारी

निजामुद्दीन आजमी, चचेरे भाई और दोस्त

हाजी मोहम्मद अमीन, मिर्जा फरीदुल हसन बेग के चाचा

ऐडवोकेट तारिक सिद्दीकी, फैमिली फ्रेंड और वकील, दिल्ली हाईकोर्ट

समधी और समधिनः मोहम्मद अकील फारूकी, श्रीमती अनुराधा गुप्ता, प्रो0 अजदुद्दीन खान, श्रीमती रेहाना परवीन, श्रीमती रईसा खान, श्री इरशाद अहमद

मित्रः स्वर्गीय मोहम्मद अहमद दिल्कश, स्वर्गीय रजाउल हसन, स्वर्गीय राशिद नोमानी, स्वर्गीय अखतर अली जहीर रिज्वी (गामा भाई), स्वर्गीय ओहरी साहब, स्वर्गीय बंसल साहब, स्वर्गीय बजाज साहब, चेतन शर्मा, अशोक शर्मा, डॉ0 शकील, स्वर्गीय अली हसन अफरोज, मतीन अमरोही, हुमायूँ साहब, मुस्लिम साहब, महमूद हाशमी, जफर महमूद, शमीम हनफही, शबीहुल हसन, मुकीत खान, आसिम कि दवई, ओवैस कि दवई, शफीक साहब

शुभचिंतकः स्वर्गीय अब्दुस सत्तार गुरू, स्वर्गीय डॉ0 अब्दुल अहद गुरू, अब्दुर रहीन गुरू, राशिद गुरू, डॉ0 खुर्शीद, खालिद गुरू, वसीम गाजी, एफ0 एम0 सिद्दीकी, मुज्तबा नकवी, मोहम्मद साजिद, वकार सिद्दीकी, रजी खान, मंसूर खान, हारिसुल हक, मोहम्मद इलियास, मसूद खान, शैलेश गुप्ता, मुतीउर रहमान, श्री जामी

स्वर्गीय फारूक साहब, स्कूल टीचर, जामिया मिलिया इस्लामिया

हाजी नजीर अहमद, पूर्व जनरल मैनेजर, सुपर बाजार

पड़ोसीः स्वर्गीय सुरैय्या बेगम, स्वर्गीय मिस्त्री सईद, प्रो0 माजिद हुसैन, स्वर्गीय हष्मत अली, उस्मान साहब, स्वर्गीय मोहब्बत अली, स्वर्गीय अबूद जैदी, रशीदुल

वाहिदी साहब, स्वर्गीय खिजिर बर्नी, स्वर्गीय अहसानुल हक, स्वर्गीय श्रीमती हकामनी, स्वर्गीय महबूबुर्रहमान फारूकी, स्वर्गीय कमर फशोर्री, खुराना साहब

डॉक्टर्सः स्वर्गीय डॉ0 रहमान, डॉ0 आर0 के0 त्रिवेदी, डॉ0 समीर श्रीवास्तव, डॉ0 शिवानी कुमार, डॉ0 युगल मिश्रा, डॉ0 शाहिद, डॉ0 हर्श दुवा, डॉ0 अस्मा, डॉ0 स0जय राजपाल

खादिमः मढ़ई बाबा, अतीक अहमद, माधुरी, शीला, राजवती, सईदन